DEDICATED
with

ETERNAL, INFINITE & IMPERISHABLE
Divine **LOVE**

to

MOST BELOVED Incorporeal God Father **SHIVA**

and

Brahma Baba & Saraswati Mama

ओम् मण्डली

OM MANDALI

Spiritual Research Index **Section C**

	Page
22 - सत्य ज्ञान, परमात्म ज्ञान - अभी तक स्पष्ट नहीं हुआ है	5
23 - ‘जो आदि, सो अन्त’ – Part 1	7
24 - संगठन की शक्ति	10
33 - स्वर्ग, वैकुण्ठ की ओपनिंग कन्याओं माताओं द्वारा - ‘वन्दे मातरम्’	13
34 - शिव बाप की स्पष्ट प्रत्यक्षता का नगाड़ा	16
35 - 108 माला के मणके, कौन सी विशेषता से बनते हैं?	20
38 - ‘साइलेन्स बल से साइंस पर विजय’ – Part 1	23
44 - वायदा (promise) क्या है - बापदादा का? – Part 1	26
45 - वायदा (promise) क्या है - बच्चों का? – Part 2	28
47 - फाइनल पेपर - final paper – Part 1	30
48 - फाइनल पेपर - final paper – Part 2	33
49 - (साक्षात्कार) ‘जो आदि, सो अन्त’ – Part 2	36
50 - (साक्षात्कार) ‘जो आदि, सो अन्त’ – Part 3	38
54 - बाबा मिलन	41
55 - ‘साइलेन्स बल से साइंस पर विजय’ – Part 2	45
56 - ट्रिब्युनल (Tribunal)	49
70 - अष्ट रतन - ‘पास विद् ऑनर’ - ‘pass with honour’	51
78 - महारथी - घोड़े-सवार - प्यादे - की निशानी	55
87 - गंगा सागर मेला - कलकत्ता	57
88 - बंगाल - कलकत्ता	59
89 - इस्टर्न जोन - (कलकत्ता)	61
104 - अंत तक दाल-रोटी जरूर मिलेगी	63
106 - मिनी मधुबन	64
107 - शिव शक्ति, पाण्डव सेना	67
108 - गुप्त वेश में बापदादा का पार्ट	71
109 - ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश, विष्णु द्वारा पालना	73
110 - एवररेडी (Ever Ready)	75
112 - आदि-देव - ब्रह्मा बाप	77
113 - ‘एडम’ (Adam) - ब्रह्मा बाप	80
114 - ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर - ब्रह्मा बाप	84
115 - अन्तिम नारा - ‘भारत माता शिवशक्ति अवतार’	87

	Page
116 - विनाश के समय बच्चों के शरीर सेफ (safe) रहेंगे	89
117 - ओम् मण्डली	90
118 - सद्गति दाता सतगुरू एक ही है	91
119 - गुप्त वेश में बापदादा का पार्ट – Part 2	94
120 - गॉड-फ़ादर सभी आत्माओं से मिलेंगे	96

सत्य ज्ञान, परमात्म ज्ञान - अभी तक स्पष्ट नहीं हुआ है

22] ज्ञान सूर्य साकार सृष्टि पर उदय हुआ है, यह अभी तक गुप्त है - अब बाप को प्रत्यक्ष करना है; सबके मुख से यह आवाज़ निकले कि सत्य ज्ञान, परमात्म ज्ञान, शक्तिशाली ज्ञान है, तो यही है; इस बात का अभी स्पष्टीकरण नहीं हुआ है कि बापदादा आ गये हैं; अभी तक भी भगवान इन्हों का टीचर है, भगवान इन्हों को चला रहा है, करावनहार परमात्मा करा रहा है - यह स्पष्ट नहीं हुआ है; अभी यह प्रत्यक्ष करो कि स्वयं परमात्मा ब्रह्मा तन में प्रत्यक्ष हो, ब्रह्माकुमारियों को ऐसे योग्य बना रहे हैं!

AV Original 28.12.1978
अन्तिम पावरफुल बाम्ब, परमात्म प्रत्यक्षता, अब शुरू नहीं की है। अब तक की रिजल्ट में, राजयोगी आत्माएँ श्रेष्ठ हैं, राजयोग श्रेष्ठ है, कर्त्तव्य श्रेष्ठ है, परिवर्तन श्रेष्ठ है - यह प्रत्यक्ष हुआ है; लेकिन, **सिखाने वाला डायरेक्ट आलमाइटी है, ज्ञान सूर्य साकार सृष्टि पर उदय हुआ है, यह अभी गुप्त है!**

AV Original 05.02.1979
जो बाप बैकबोन है, गुप्तरूप में पार्ट बजा रहे हैं, बाप को प्रत्यक्ष करना है; सुनाने वालों को पहचानते हैं, लेकिन बनाने वाला अभी भी गुप्त है; तो अब बनाने वाले को प्रत्यक्ष करना, अर्थात् विजय का झण्डा लहराना है।

AV Original 01.06.1983
यह आवाज़ बुलन्द हो कि दुनिया सारी एक तरफ है, और ब्र.कु. दूसरे तरफ हैं। **यह नया ज्ञान देने वाले अथार्टी हैं। यह अथार्टी प्रसिद्ध हो। इसी से ही शक्तिशाली आत्मायें आगे आयेंगी, जो आपके तरफ से ढिंढोरा पिटवायेंगी।** आपको ढिंढोरा नहीं पीटना पड़ेगा, लेकिन ऐसी आत्मायें सैटिसफाय हो, नई बात जान, नये उमंग में आकर ढिंढोरा पीटेंगी। **धर्म युद्ध भी तो अभी रही हुई है ना? अभी गुरूओं की गद्दी को कहाँ हिलाया है?** अभी तो टाल टालियाँ आदि सब बहुत आराम से अपनी धुन में लगे हुए हैं। बीज कब प्रत्यक्ष रूप में आता है? मालूम है - बीज ऊपर कब आता है? **जब छोटी-बड़ी टाल-टालियाँ एकदम बिगर पत्तों की सूखी हुई डालियाँ रह जाती हैं, तब बीज ऊपर प्रत्यक्ष होता है। तो उसका प्लैन बनाया है? जब अपनी स्टेज पर आते हैं, तो अपने ओरीजनल नॉलेज (original knowledge) की प्रत्यक्षता तो होनी चाहिए ना!**

AV Original 09.03.1985
जैसे अब कहते हैं, 'शान्ति का स्थान है तो यही है'। **ऐसे सबके मुख से यह आवाज़ निकले कि 'सत्य ज्ञान है, तो यही है'।** जैसे शान्ति और स्नेह की शक्ति अनुभव करते हैं, वैसे सत्यता सिद्ध हो, तो और सब क्या हैं, वह सिद्ध हो ही जायेगा। कहने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। **अब वह सत्यता की शक्ति कैसे प्रत्यक्ष करो, वह विधि क्या अपनाओ, जो आपको कहना न पड़े? लेकिन, वह स्वयं ही कहें कि इससे यह सिद्ध होता है कि सत्य ज्ञान, परमात्म ज्ञान, शक्तिशाली ज्ञान है, तो यही है!**

AV Original 20.03.1987

बाप का प्यार के सागर का स्वरूप, शान्ति के सागर का स्वरूप प्रत्यक्ष किया है, लेकिन ज्ञान स्वरूप आत्मा और ज्ञान सागर बाप है, इस नये ज्ञान को किस ढंग से देवें, उसके प्लैन्स अभी कम बनाये हैं। **वह भी समय आयेगा, जो सभी के मुख से यह आवाज निकलेगा कि नई दुनिया का नया ज्ञान यह है। अभी सिर्फ 'अच्छा' कहते हैं, 'नया' नहीं कहते।**

AV Original 18.01.1997

पहला कदम, नाम प्रत्यक्ष हुआ है कि ब्रह्माकुमारियां-ब्रह्माकुमार अच्छा काम कर रहे हैं। विद्यालय वा कार्य की, नॉलेज (knowledge) की अभी महिमा करते हैं, खुश होते हैं। यह भी समझते हैं कि ऐसा कार्य और कोई कर नहीं सकता, इतने तक पहुँचे हैं। यह बात स्पष्ट हुई है, चारों ओर इस बात की महिमा है। **लेकिन इस बात का अभी स्पष्टीकरण नहीं हुआ है कि बापदादा आ गये हैं।** अभी थोड़ा-थोड़ा पर्दा खुलने लगा है, लेकिन स्पष्ट नहीं है। **जानते भी हैं कि इन्हों का बैकबोन (back-bone) कोई अथॉरिटी (authority) है, लेकिन वही बापदादा है, और हमें भी बाप से वर्सा लेना है, यह दीवार अभी उमंग-उत्साह में आगे आ रही है, वो अभी होना है।**

AV Original 15.12.1999

अभी 62-63 वर्ष हो गये हैं, इतने समय में कितनी आत्मायें बनाई हैं? 9 लाख भी पूरे नहीं हुए हैं। और सारे विश्व को सन्देश पहुँचाना है, तो कितनी करोड़ आत्मायें हैं? **अभी तक भी भगवान इन्हों का टीचर है, भगवान इन्हों को चला रहा है, करावनहार परमात्मा करा रहा है - यह स्पष्ट नहीं हुआ है। अच्छा कार्य है और श्रेष्ठ कार्य कर रहे हैं यह आवाज़ तो है, लेकिन करावनहार अभी भी गुप्त है।**

AV Original 03.02.2006

परमात्म प्रत्यक्षता - अगर समझ सकते कि परमात्मा का ज्ञान है, तो रूक सकते हैं क्या? जैसे आप भागकर आ गये हो ना, ऐसे भागेंगे! तो अभी ऐसा प्लैन बनाओ, ऐसे भाषण तैयार करो, ऐसे परमात्म अनुभूति के प्रैक्टिकल सबूत बनो। तभी **बाप की प्रत्यक्षता प्रैक्टिकल में दिखाई देगी। अभी, 'अच्छा है', यहाँ तक पहुंचे हैं - 'अच्छा बनना है', वह लहर परमात्म प्यार की अनुभूति से होगी।** तो अनुभवी मूर्त बन, अनुभव कराओ। अच्छा। अभी डबल मालिकपन की स्मृति से, समर्थ बन समर्थ बनाओ।

AV Original 03.04.2012

देखो अभी तक की रिजल्ट में क्या सभी कहते हैं – 'ब्रह्माकुमारियां बहुत अच्छा काम कर रही हैं'; बाप प्रत्यक्ष नहीं है, वह अभी भी गुप्त है। तो अभी समय समीप आ रहा है, तो आप द्वारा, चाहे निमित्त टीचर्स हैं या कोई भी बच्चा है, अभी बाप को प्रत्यक्ष करो। 'ब्रह्माकुमारियां अच्छा कार्य कर रही हैं', यह तो हो गया। यहाँ तक पहुंच गये हो। लेकिन **अभी यह प्रत्यक्ष करो कि स्वयं परमात्मा ब्रह्मा तन में प्रत्यक्ष हो, ब्रह्माकुमारियों को ऐसे योग्य बना रहे हैं। अभी यह प्वाइंट रही हुई है।**

'जो आदि, सो अन्त' – Part 1

23] आदि का पार्ट, फिर से अन्त में, गुह्य और गोपनीय रूप से रिपीट करना है; जैसे आदि में साकार की लीला देखी, ऐसे ही अन्त में भी होगी - शिव शक्तियों द्वारा; समाप्ति के समय भी, बाप के साथ-साथ, अनन्य बच्चे भी देवी-देवता रूप में - साक्षात अनुभव होंगे; बाप बच्चों से, विचित्र रूप में, जब चाहें तब मिलन मना सकते; अब फिर से बीज, अर्थात् वारिस क्वालिटी निकालो - जो आदि में, सो अन्त में करो!

AV Original 26.03.1970
जैसे शुरू में बापदादा का साक्षात्कार घर बैठे हुआ ना, वैसे अब दूर बैठे आपकी पावरफुल वृत्ति ऐसा कार्य करेगी, जैसे कोई हाथ से पकड़ कर लाया जाता है। कैसा भी नास्तिक, तमोगुणी - बदला हुआ देखने में आएगा। अब यह सर्विस करनी है। लेकिन यह सर्विस सफलता को तब पायेगी जब वृत्ति और बातों में क्लियर (clear) होगी।

AV Original 20.05.1971
जैसे शुरू में स्थापना के समय ज्ञान की सर्विस इतनी नहीं थी, नज़र से निहाल करते थे। तो अन्त में भी ज्ञान की सर्विस करने का मौका नहीं मिलेगा। जो आदि हुआ है, वही अन्त में आप लोगों द्वारा चलना है। जैसे वृक्ष का पहले बीज प्रत्यक्ष रूप में होता है, बीच में वह बीज मर्ज हो जाता है, फिर अन्त में वही बीज प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देता है। **तो आप आदि आत्माओं में भी जो पहला फाउन्डेशन पड़ा हुआ है, वही सर्विस अन्त में भी होनी है।**

AV Original 09.10.1971
तो अब शक्तियों को ललकार और गर्जना करनी चाहिए - अपने सिद्धान्तों सिद्ध करने में - तब सिद्धि को प्राप्त करेंगे। … **आदि का पार्ट, फिर से अन्त में, गुह्य और गोपनीय रूप से रिपीट करना है।** … अभी लास्ट कोर्स (course) कौनसा रहा है? फोर्स (force) रूप बनना है। अभी जगत्-माता बहुत बने, अब शक्तिरूप से स्टेज पर आना है। शक्तियां, आसुरी संस्कारों को एक धक से खत्म करती हैं; और स्नेही मां जो होती है, वह धीरे-धीरे प्यार से पालना करती है। पहले वह आवश्यकता थी, लेकिन अभी आवश्यकता है, शक्ति रूप बन, आसुरी संस्कारों को एक धक से खत्म करना!

AV Original 10.02.1975
जैसे सेवा के प्रारम्भ में अपने पेट की रोटी भी कम करके, हर वस्तु को सेवा में लगाने से, उसका प्रत्यक्ष फल आप आत्मायें हो। **ऐसे मध्य में** बाप ने ड्रामा ने सहज साधनों को स्वयं के प्रति लगाने का अनुभव भी कराया है। लेकिन **अब अन्त में** प्रकृति दासी होते हुए भी, सर्व साधन प्राप्त होते हुए भी, स्वयं के प्रति नहीं, लेकिन सेवा के प्रति लगाओ। क्योंकि **अब आगे चलकर अनेक आत्मायें साधन और सम्पत्ति आपके आगे ज्यादा से ज्यादा अर्पण करेंगी। लेकिन स्वयं के प्रति स्वीकार कभी नहीं करना। स्वयं के प्रति स्वीकार करना अर्थात् स्वयं को श्रेष्ठ पद से वंचित करना।**

AV Original 18.01.1979
जैसे बाप विचित्र है, विचित्र बाप की लीला भी विचित्र है - दुनिया वाले समझते हैं बाप चले गये, और **बाप बच्चों से, विचित्र रूप में, जब चाहें तब मिलन मना सकते।** दुनिया वालों की आँखों के आगे पर्दा आ गया - वैसे भी स्नेही मिलन

पर्दे के अन्दर अच्छा होता है - तो दुनिया की आँखों में पर्दा आ गया – लेकिन, **बाप बच्चों से अलग हो नहीं सकता। वायदा है 'साथ चलेंगे'; वही वायदा याद है ना? जो आदि, सो अन्त।**

AV Original 21.01.1980
अभी विस्तार में बिजी हो गये हैं। जैसे वैराइटी वृक्ष बढ़ता है तो बीज छिप जाता है, और फिर अन्त में बीज ही निकलता है। विस्तार में ज्यादा बिजी हो गये हो। **अब फिर से बीज, अर्थात् वारिस क्वालिटी निकालो - जो आदि में, सो अन्त में करो।**

AV Original 18.01.1982
आप ताजधारी विशेष आत्मायें, अभी जल्दी, फिर से, ब्रह्मा बाप और ब्रह्मा वत्स शक्तियों के रूप में - **शक्ति में शिव समाया हुआ, शिव शक्ति, और साथ में ब्रह्मा बाप - ऐसे साक्षात्कार चारों ओर शुरू हो जायेंगे।** ब्रह्माकुमारी के बजाए, ब्रह्मा बाप दिखाई देगा। साधारण स्वरूप के बजाए, शिवशक्ति स्वरूप दिखाई देगा। **जैसे आदि में साकार की लीला देखी, ऐसे ही अन्त में भी होगी। सिर्फ अभी एडीसन (addition) 'शिवशक्ति' स्वरूप का भी साक्षात्कार होगा।** फिर भी साकार पिता तो ब्रह्मा है ना। तो साकार रूप में आये हुए बच्चे, बाप को देखेंगे, और अनुभव जरूर करेंगे।

AV Original 05.12.1984
जैसे शुरू में स्थापना की आदि में, एक ओम की ध्वनि शुरू होती थी, और कितने साक्षात्कार में चले जाते थे। लहर फैल जाती थी। ऐसे सभा में अनुभूतियों की लहर फैल जाए। किसको शान्ति की, किसको शक्तियों को अनुभूति हो। यह लहर फैले। सिर्फ सुनने वाले न हो, लेकिन अनुभव की लहर हो। जैसे झरना बह रहा हो, तो जो भी झरने के नीचे आयेगा उसको शीतलता का, फ्रेश (fresh) होने का अनुभव होगा ना! ऐसे वह भी शान्ति, शक्ति, प्रेम, आनंद, अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति करते जाएं। **आज भी साइंस के साधन गर्मी-सर्दी की अनुभूति कराते हैं ना? सारे कमरे में ही वह लहर फैल जाती है। तो क्या यह इतनी शिव-शक्तियाँ, पाण्डव, मास्टर शान्ति, शक्ति, सबके सागर .. यह लहर नहीं फैला सकते?**

AV Original 11.11.1985
साक्षात्कार मूर्त्त अभी होने चाहिए। अभी सेवा साक्षात्कार मूर्त्त द्वारा हो। **जैसे शुरू में चलते-फिरते साक्षात्कार मूर्त्त देखते थे। ब्रह्मा को नहीं देखते थे, कृष्ण को देखते थे। कृष्ण पर मोहित हुए ना! ब्रह्मा पर तो नहीं हुए। ब्रह्मा गुम होकर कृष्ण दिखाई देता था, तब तो भागे ना!** कृष्ण ने भगाया यह तो राइट (right) है, क्योंकि ब्रह्मा को ब्रह्मा नहीं देखते, कृष्ण देखते थे। तो यह साक्षात्कार स्वरूप हुआ ना! उसी ने इतना मस्त बनाया, भगाया। साक्षात्कार ने ही सब कुछ छुड़ाया। भक्ति का साक्षात्कार सिर्फ देखने का होता है। लेकिन ज्ञान का होता है, देखने के साथ पाना - यही अन्तर है। **सिर्फ देखा नहीं, पाया। कृष्ण हमारा है, हम गोपियाँ हैं, इसी नशे ने स्थापना कराई। हम वही हैं, हमारे ही चित्र हैं। तो ऐसे ही साक्षात्कार द्वारा अभी भी सेवा हो।**

AV Original 22.12.1995
मनी (money) डाउन तो होनी ही है। और आपकी मनी सबसे ज्यादा मूल्यवान है। **जैसे शुरू में अखबार में डलवाया था ना कि 'ओम् मण्डली - रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड'।** कमाई का साधन कुछ नहीं था। ब्रह्मा बाप के साथ एक-दो समर्पण

हुए, और अखबार में डाला 'रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड'। **तो अभी भी जब चारों ओर ये स्थूल हलचल होगी, फिर आपको अखबार में नहीं डालना पड़ेगा। आपके पास अखबार वाले आयेंगे और खुद ही डालेंगे, टी.वी. में दिखायेंगे कि 'ब्रह्माकुमारीज़ - रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड'।**

AV Original 13.11.1997
तो स्थापना में एक बाप ने किया, अन्त में आप बच्चे भी, आत्माओं के आगे, साक्षात देवी-देवता दिखाई देंगे। वह समझेंगे ही नहीं कि यह कोई साधारण हैं। वही पूज्यपन का प्रभाव अनुभव करेंगे, तब बाप सहित आप सभी के प्रत्यक्षता का पर्दा खुलेगा। अभी अकेले बाप को नहीं करना है। बच्चों के साथ प्रत्यक्ष होना है। **जैसे स्थापना में ब्रह्मा के साथ विशेष ब्राह्मण भी स्थापना के निमित्त बनें, ऐसे समाप्ति के समय भी, बाप के साथ-साथ, अनन्य बच्चे भी देव रूप में साक्षात अनुभव होंगे।**

AV Original 15.12.2008
जैसे शुरू-शुरू में शिव बाप, ब्रह्मा में प्रवेश हुआ तो घर बैठे कैसे सकाश दी। किसको साक्षात्कार हुआ, किसको आवाज आया - फलाने स्थान पर जाओ - किसे प्रेरणा आई सुन करके 'मुझे जाना ही है' - भाग कर आई ना, और जो शुरू में आये वह कितने पक्के हैं। याद करते हो ना, दादी को, दूसरी भी दादियों को याद करते हो ना? **तो जो शुरू में हुआ, वह अभी अन्त में भी रिपीट (repeat) होना है।**

संगठन की शक्ति

24] यह रूहानी संगठन भी अन्डरग्राउण्ड है; यह संगठन बीज-रूप है; संगठन में होने के कारण वह मोती, मणका शक्तिशाली हो जाता है; एक लवली बाप के लवली बच्चों का संगठन ही तारीख को प्रसिद्ध करेगा; संगठित रूप में, योग ज्वाला से विनाश-ज्वाला प्रज्वलित होगी; एक सेकेण्ड में, संगठित रूप में, एक ही वृत्ति द्वारा, वायब्रेशन्स द्वारा, वायुमण्डल को परिवर्तन कर सकते हैं; संगठित रूप में, सर्व के एक शक्तिशाली संकल्प से, पुरानी दुनिया नई दुनिया में परिवर्तन होगी!

AV Original 09.10.1971
जैसे साइंस वाले पावरफुल इन्वेन्शन निकाल रहे हैं, वैसे यह शक्ति ग्रुप भी पावरफुल साइलेन्स का श्रेष्ठ शस्त्र तैयार कर दिखायेंगे। आपस में सिर्फ मिलना नहीं है, लेकिन मिलकर के कोई पावरफुल शस्त्र तैयार करना है। **जो अति पावरफुल चीज़ होती है, वह अन्डरग्राउण्ड होती है। तो यह संगठन भी अन्डरग्राउण्ड है।** अन्तर्मुखता में अन्दर जाकर सोचने का है। कोई कमालियत दिखानी है।

AV Original 09.10.1971 (continued)
लेकिन अब कोई भी कार्य हो, तो सर्व विशेष आत्माओं की स्मृति आये। **तो एक-दो में सहयोग देना और लेना। जब बीज-रूप ग्रुप ऐसे बनेंगे, तो बीज से वृक्ष तो ऑटोमेटिकली निकलेंगे ही। यह संगठन बीज-रूप है ना।** सृष्टि के बीज-रूप नहीं हो, लेकिन अपनी रचना के तो बीज-रूप हो ना। **तो अगर बीज-रूप संगठन 16 कला सम्पूर्ण बन जायेगा, तो वृक्ष भी ऐसे निकलेंगे।** अभी समय नहीं है, जो छोटी-सी कमी के कारण कम रह जाएं। अगर कमी रह गई, तो नम्बर में भी कम रह जायेंगे।

AV Original 19.07.1972
संगठन में होने के कारण वह मोती, मणका शक्तिशाली हो जाता है। एक से दो भी आपस में मिल जाते हैं, तो दो को 11 कहा जाता है। एक को, एक ही कहा जावेगा। दो मिलकर 11 हो जाते हैं। तो कहां एक, कहां ग्यारह! इतनी उसकी वैल्यू बढ़ जाती है। दो के बदली 11 कहा जाता है। संगठन की शक्ति को प्रसिद्ध करने के लिये, ऐसे कहने में आता है। आप अपने को कौन-सा मोती समझते हो? माला का मोती हो, वा इन्डिपैन्डेंट् (independent) मोती हो? अपनी वैल्यू को देखते हुये, अपनी शक्ति को देखते हुये, यह अनुभव करते हो कि हम माला के मणके हैं? **एक दो को ऐसे संगठन के रूप में पिराये हुए वैल्युएबल मोती समझते हो?**

AV Original 14.04.1973
जैसे स्थूल सैनिक जब युद्ध के मैदान में जाते हैं, तो एक ही ऑर्डर (order) से, एक ही समय, वे चारों ओर अपनी गोली चलाना शुरू कर देते हैं। अगर एक ही समय, एक ही ऑर्डर से, वे चारों ओर घेराव न डालें, तो विजयी नहीं बन सकते। **ऐसे ही रूहानी सेना, संगठित रूप में, एक ही इशारे से, और एक ही सेकेण्ड में, सभी एक-रस स्थिति में स्थित हो जायेंगे, तब ही विजय का नगाड़ा बजेगा।**

AV Original 21.10.1975

अब ऐसी धरनी बनाओ, और ऐसे बेहद के वैरागियों का संगठन बनाओ, जिन्हों के वाइब्रेशन्स और वायुमण्डल द्वारा, अन्य आत्माओं में भी वह संस्कार इमर्ज हो जायें। जैसे सेवाधारियों का संगठन होता है, वैसे बेहद के वैरागियों का संगठन मजबूत होना चाहिए, जिसको देखते ही अन्य आत्माओं को भी ऐसा वायब्रेशन आये। एक तरफ बेहद का वैराग्य होगा, दूसरी तरफ बाप के समान बाप के लव (Love) में लवलीन होंगे, तब ही बेहद का वैराग्य आयेगा। एक सेकेण्ड भी, और एक संकल्प भी, इस लवलीन अवस्था से नीचे नहीं आयेंगे। ऐसे लवली (Lovely) बाप के लवली बच्चों का संगठन हो। उनको कहेंगे लवली संगठन। एक तरफ अति लव, दूसरी तरफ बेहद का वैराग्य, दोनों का संगठन साथ-साथ समान दिखाई देगा; ऐसा संगठन बनाओ, तो वह तारीख स्पष्ट दिखाई देगी। **यह संगठन ही तारीख को प्रसिद्ध करेगा।**

AV Original 09.12.1975

एक भी पॉवरफुल संगठन होने से, एक-दूसरे को खींचते हुए, 108 की माला का संगठन एक हो जायेगा। एक-मत का धागा हो, और संस्कारों की समीपता हो, तब ही माला भी शोभेगी। दाना अलग होगा, या धागा अलग-अलग होगा, तो माला शोभेगी नहीं।

AV Original 09.12.1975 (continued)

इसलिए संगठित रूप में, ऐसे विशेष पुरूषार्थ की लेन-देन, और याद की यात्रा के प्रोग्राम होने चाहिए। **विशेष पुरूषार्थ अथवा विशेष अनुभवों की आपस में लेन-देन हो।** … ऐसे विशेष योग के प्रोग्राम चलते रहे, तो फिर देखो विनाश ज्वाला को कैसे पंखा लगता है। **योग-अग्नि से विनाश की अग्नि जलेगी। वह है विनाश-ज्वाला, यह है योग ज्वाला, जो ज्वाला से ज्वाला प्रज्वलित होगी।**

AV Original 03.12.1978

अब ऐसा समय आने वाला है, जो ऐसे सत्य अभ्यास के आगे अनेकों के अयथार्थ अभ्यास स्वत: ही प्रत्यक्ष हो जायेंगे। कहना नहीं पड़ेगा कि आपका अभ्यास अयथार्थ है - लेकिन यथार्थ अभ्यास के वायुमण्डल, वायब्रेशन द्वारा स्वयं ही सिद्ध हो जायेगा। ऐसा संगठन तैयार है? … आज की साइंस द्वारा साइलेन्स शक्ति का नाम बाला होगा। योग द्वारा, शक्तियाँ कौन सी और कहाँ तक फैलती हैं, उनकी विधि और गति क्या होती है, यह सब प्रत्यक्ष दिखाई देंगे। ऐसे संगठन तैयार हैं? **समय प्रमाण, अब व्यर्थ की बातों को छोड़, समर्थी स्वरूप बनो। ऐसे विश्व सेवाधारी बनो।**

AV Original 21.11.1979

आज बाप-दादा रूहानी ड्रिल (drill) करा रहे थे। **एक सेकेण्ड में संगठित रूप में, एक ही वृत्ति द्वारा, वायब्रेशन्स द्वारा, वायुमण्डल को परिवर्तन कर सकते हैं।** नम्बरवार हर इन्डीविजुवल (individual) अपने-अपने पुरूषार्थ प्रमाण, महारथी अपने वायब्रेशन्स द्वारा, वायुमण्डल को परिवर्तन करते रहते हैं। लेकिन **विश्व-परिवर्तन में, सम्पूर्ण कार्य की समाप्ति में, संगठित रूप की, एक ही वृत्ति और वायब्रेशन्स चाहिए।** थोड़ी-सी महान आत्माओं के, वा तीव्र पुरुषार्थी महारथी बच्चों की, वृत्ति व वायब्रेशन्स द्वारा, कहीं-कहीं सफलता होती भी रहती है, लेकिन **अभी अन्त में सर्व ब्राह्मण आत्माओं की एक ही वृत्ति की अंगुली चाहिए। एक ही संकल्प की अंगुली चाहिए, तब ही बेहद का विश्व-परिवर्तन होगा।** वर्तमान समय, विशेष अभ्यास इसी बात का चाहिए।

AV Original 17.03.1991

प्रकृति भी आपका संकल्प से आर्डर तब मानेगी जब पहले आपके स्वयं के, सदा के सहयोगी कर्मेन्द्रियाँ मन-बुद्धि-संस्कार आर्डर मानें। अगर स्वयं के, सदा के सहयोगी आर्डर नहीं मानते, तो प्रकृति क्या आर्डर मानेगी? **इतनी पॉवरफुल तपस्या की ऊंची स्थिति हो, जो सर्व के एक संकल्प, एक समय पर उत्पन्न हो। सेकेण्ड का संकल्प हो – 'परिवर्तन', और प्रकृति हाजिर हो जाये।** जैसे विश्व की ब्राह्मण आत्माओं का, एक ही टाइम, 'वर्ल्ड पीस' का योग करते हो ना। तो सभी का एक समय, और एक ही संकल्प, यादगार रहता है। **ऐसे सर्व के एक संकल्प से प्रकृति हलचल की डांस शुरू कर देगी।** इसलिए कहते ही हो – 'स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन'। यह पुरानी दुनिया से नई दुनिया परिवर्तन कैसे होगी? आप सर्व के शक्तिशाली संकल्प से, संगठित रूप से, सबका एक संकल्प उत्पन्न होगा। समझा क्या करना है? **तपस्या इसको कहा जाता है।**

स्वर्ग, वैकुण्ठ की ओपनिंग कन्याओं माताओं द्वारा - 'वन्दे मातरम्'

33] शिवबाबा स्वर्ग का द्वार कन्याओं माताओं से खुलवाते हैं - जिनका हेड है सरस्वती मम्मा, 'जगत अम्बा'; 'जगत अम्बा' है कामधेनु - सभी की मनोकामना पूर्ण करने वाली; ज्ञान अमृत का कलष माताओं पर रखा है - माता गुरू बिगर किसका कल्याण, उद्धार नहीं हो सकता; शिव बाप भी कहते हैं - 'वन्दे मातरम्' - माता गुरू बिगर मुक्ति-जीवनमुक्ति मिल नहीं सकती!

SM, Revised 30.07.2019
यह विशश वर्ल्ड है, वह है वाइसलेस वर्ल्ड। अब तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बनेंगे? पतित-पावन तो मैं ही हूँ। मेरे साथ योग लगाओ, भारत का प्राचीन राजयोग यह है। (बाप) आयेंगे भी जरूर गृहस्थ मार्ग में। कैसे वण्डरफुल रीति आते हैं, यह पिता भी है, तो माँ भी है, क्योंकि गऊ मुख चाहिए, जिससे अमृत निकले। **तो यह मात-पिता है, फिर माताओं को सम्भालने के लिए सरस्वती को हेड रखा है, उनको कहा जाता है 'जगत अम्बा'।**

SM, Revised 05.02.2019
बाबा स्वर्ग का द्वार इन नारियों से खुलवाते हैं। माताओं पर ही ज्ञान का कलष रखा जाता है। बाबा ने माताओं को ही ट्रस्टी बनाया है, सब-कुछ तुम मातायें ही सम्भालो। इनके (ब्रह्मा) द्वारा कलष रखा ना। फिर उन्होंने लिख दिया है, 'सागर मंथन किया, अमृत का कलष लक्ष्मी को दिया'। अभी तुम जानते हो - बाबा स्वर्ग का द्वार खोल रहे हैं।

SM, Revised 17.12.2018
यहाँ (ब्रह्मा) बाबा ने सब कुछ माताओं के चरणों में दे दिया, तो यह (ब्रह्मा) वन नम्बर में गया। तुम बच्चों को पुरुषार्थ करना है, जो मदद करेंगे, वही स्वर्ग के मालिक बनेंगे। ऐसे कोई मत समझे कि हम शिवबाबा को मदद करते हैं - नहीं! शिवबाबा ही तुमको मदद करते हैं। अरे, वह तो दाता है, तुम अपने लिए करते हो। तुम याद में रहो, तो विकर्म विनाश होंगे। स्वर्ग को याद करो, तो स्वर्ग में चले जायेंगे। बाबा स्वयं कहते हैं - मनमनाभव।

SM, Revised 30.10.2018
कलष माताओं पर रखा है। माता गुरू बिगर किसका कल्याण नहीं होता। ... अब बाप, शिव शक्तियों द्वारा, भारत पर अविनाशी बृहस्पति की दशा लाते हैं।

SM, Revised 19.05.2018
माता शक्ति है ना। अब उन्हों का मर्तबा जरूर ऊंच करना है। भाइयों को भी कहते हैं, तुम इन माताओं का रिगॉर्ड रखो, इनके मददगार बनो। सितम से भी बचाना है। पूरी रीति न समझने के कारण, उल्टी-सुल्टी बात सुनाने से, फिर बिचारी अबलायें बाँध हो जाती हैं। तो जो उल्टे कर्म करते हैं, बाप से वर्सा लेने में विघ्न डालते हैं, उन पर बड़ा पाप का बोझा चढ़ जाता है।

SM, Revised 13.02.2018
यह ब्रह्मा भी एडाप्ट किया हुआ है। बाप खुद कहते हैं, मैं इस रथ का रथी बनता हूँ, इसको ज्ञान देता हूँ। शुरू इनसे करता हूँ। **कलष देता हूँ माताओं को। माता तो यह भी ठहरी ना। पहले-पहले यह बनते हैं, फिर तुम।**

SM, Revised 31.08.2017
बाप आकर कहते हैं, इन बच्चियों द्वारा तुमको स्वर्ग का द्वार मिलेगा। ...
शिवबाबा कहते हैं - मैं इन माताओं द्वारा स्वर्ग का द्वार खोलता हूँ। माता गुरू बिगर किसका उद्धार नहीं हो सकता है।

SM, Revised 21.08.2017
तुम ब्रह्माकुमारियां ही भारत को स्वर्ग बनाती हो। तो तुम्हारा यादगार भक्ति मार्ग में चला आता है। कुमारियों को बहुत मान देते हैं। हैं तो ब्रह्माकुमार भी, परन्तु माताओं की मैजारिटी है। **बाप खुद आकर कहते हैं 'वन्दे मातरम्'। तुम बाप को वारिस बनाते हो।**

SM, Revised 19.07.2017
सुखधाम की स्थापना अर्थ माताओं को ही रखा गया है। ज्ञान अमृत का कलष माताओं पर रखा है। ...
तो परमपिता परमात्मा वैकुण्ठ की ओपनिंग कराते हैं, माताओं द्वारा। कलष माताओं पर ही रखते हैं। ...
बच्चों पर बाप रेसपान्सिबिल्टी रखते हैं। **ऐसे नहीं कि इन गुरूओं पर बाप ने कोई रेसपान्सिबिल्टी रखी है, कि सबको सद्गति दो। अभी तुम जान गये हो कि सद्गति देना, इन माताओं का काम है। सद्गति होती है ज्ञान से। ज्ञान का कलष माताओं को मिला है। पहले-पहले दिखाते हैं - कलष रखा 'जगत अम्बा' पर।** ...
'वन्दे मातरम्' भी गाया हुआ है। भारत खण्ड का नाम ही गाया जाता है। **कहते हैं, 'भारत माता की जय' - अर्थात् भारत में रहने वाली माताओं की जय; जो मातायें विश्व को स्वर्ग बनाती हैं, ऐसी माताओं की जय।** ...
माताओं पर ही सारी रेसपान्सबिल्टी है। 'वन्दे मातरम्', बाप भी कहते हैं; शिव बालक है, तो 'वन्दे मातरम्' करना पड़े ना। यह तुमको करते हैं, तुम उनको करती हो। वन्डर है ना। यह भी ड्रामा की नूँध है।

SM, Revised 23.03.2017
माता गुरू बिगर कोई का उद्धार हो न सके। कलष जगत माता को मिलता है, तो जगत माता ही गुरू हुई ना? आजकल स्त्रियों को बहुत मान देते हैं। **बाप भी कहते हैं, माता गुरू बिगर मुक्ति-जीवनमुक्ति मिल नहीं सकती।** तो जब माता द्वारा एडाप्ट हो तब जीवनमुक्ति मिले। **माता को गुरू समझना चाहिए। बच्चों को अपना अहंकार नहीं रखना है, माताओं को मर्तबा देना है। फालो करना है, देह-अभिमान नहीं होना चाहिए।**

SM, Revised 15.03.2017
बाप आकर ज्ञान अमृत का कलष माताओं पर रखते हैं। माता गुरू बिगर किसकी सद्गति हो न सके। जगत अम्बा है कामधेनु, सभी की मनोकामना पूर्ण करने वाली। उनकी तुम बच्चियां हो।

SM, Revised 16.03.2016
इस पतित दुनिया में कोई भी मनुष्य सद्गति दाता, वा पतित-पावन हो नहीं सकता। बाप कहते हैं कितनी एडल्ट्रेशन, करेप्शन है। **अब मुझे कन्याओं माताओं के द्वारा सबका उद्धार करना है।** तुम सब ब्रह्माकुमार कुमारियाँ भाई-बहिन हो गये।

FROM: SM, Revised 18.01.17 - **अव्यक्त महावाक्य** (पर्सनल) [AV 18.01.1977 & AV 23.01.1977 के बीच में]
जैसे शुरू में बाप से पवित्रता की प्रतिज्ञा की कि 'मरेंगे, मिटेंगे, सहन करेंगे, मार खायेंगे, घर छोड़ देंगे, लेकिन पवित्रता की प्रतिज्ञा सदा कायम रखेंगे' - ऐसी शेरनियों के संगठन ने, स्थापना के कार्य में, निमित्त बन करके दिखाया, कुछ सोचा नहीं, कुछ देखा नहीं - करके दिखाया; वैसे ही अब ऐसा ग्रुप चाहिए। जो लक्ष्य रखा उस लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए सहन करेंगे, त्याग करेंगे, बुरा-भला सुनेंगे, परीक्षाओं को पास करेंगे, लेकिन लक्ष्य को प्राप्त करके ही छोड़ेंगे। **ऐसे ग्रुप सैम्पल बनें, तब उनको और भी फॉलो करें। जो आदि में, सो अन्त में।** ऐसे मैदान में आने वाले, जो निन्दा-स्तुति, मान-अपमान, सभी को पार करने वाले हों - ऐसा ग्रुप चाहिए। कोई भी बात में सुनना वा सहन करना - किसी भी प्रकार से - यह तो करना ही होगा; कितना भी अच्छा करेंगे - लेकिन अच्छे को, ज्यादा सुनना, सहन करना पड़ता है - ऐसी सहन शक्ति वाला ग्रुप हो। **जैसे शुरू में पवित्रता के व्रत वाला ग्रुप मैदान में आया, तो स्थापना हुई; वैसे अब यह ग्रुप मैदान में आए, तब समाप्ति हो।**

शिव बाप की स्पष्ट प्रत्यक्षता का नगाड़ा

34] अभी स्वरूप द्वारा सर्विस करना है - न कि वाणी द्वारा - जिसमें ही प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजेगा; ऐसी स्टेज बनाने के लिए, एक शिव बिन्दु को ही देखो; लास्ट बम अर्थात् परमात्म बम है, शिव बाप की प्रत्यक्षता का; सत्यता द्वारा ही प्रत्यक्षता होगी; अभी वृत्ति द्वारा वृत्तियाँ बदलें, संकल्प द्वारा संकल्प बदल जाएं - यह विधि ऐसी है, जो सिद्धि स्वरूप बन जायेंगे; शक्ति और पाण्डवों के द्वारा ही शिव बाप प्रत्यक्ष होना है!

AV, Original 16.04.1977
दीदी जी से:
महारथियों की सर्विस - नैनों द्वारा, बाप से प्राप्त हुए वरदान अनेकों को प्राप्ति कराना, अर्थात् अपने द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करना है। **आप को देखते-देखते, बाप की स्मृति स्वत: आ जाए। हरेक के दिल से निकले कि 'कमाल है बनाने वाले की' - तो बाप प्रत्यक्ष हो जाएगा। बाप, आप द्वारा प्रत्यक्ष दिखाई देगा, और आप गुप्त हो जायेंगे।** अभी आप प्रत्यक्ष हो, बाप गुप्त है; फिर, हरेक दिल से बाप की प्रत्यक्षता के गुणगान् करते हुए सुनेंगे। **आप दिखाई नहीं देंगे, लेकिन जहाँ भी देखेंगे तो बाप दिखाई देगा।**

AV, Original 30.06.1977
पार्टियों से:
सुनने की सीजन कितने वर्ष चली! चाहे साकार द्वारा, चाहे रिवाईज कोर्स द्वारा, सुनने का सीजन बहुत चला है। **तो अभी स्वरूप द्वारा सर्विस करना। अभी लास्ट यही सीजन रह गया है ना, जिसमें ही प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजेगा। आवाज़ बन्द होगा, साइलेन्स होगा। लेकिन साइलेन्स द्वारा ही नगाड़ा बजेगा।** जब तक मुख से नगाड़े ज्यादा हैं, तब तक प्रत्यक्षता का नहीं। जब प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजेगा, तब मुख के नगाड़े बन्द हो जाएंगे। **गाया हुआ भी है 'साइंस के ऊपर साइलेन्स की जीत', न कि वाणी की!**

AV, Original 10.12.1978
जैसे शुरू में, आकारी ब्रह्मा और श्रीकृष्ण का साथ-साथ साक्षात्कार होता था। वैसे अभी भी, यह साधारण रूप देखते हुए भी दिखाई न दे। आपके पूज्य देवी या देवता रूप, या फरिश्ता रूप देखें। लेकिन यह तब होगा जब आप सबका पुरूषार्थ, देखते हुए न देखने का हो - तब ही अनेक आत्माओं को भी आप महान आत्माओं का यह साधारण रूप, देखते हुए भी नहीं दिखाई देगा। आंख खुले-खुले, एक सेकेन्ड में साक्षात्कार होगा। **ऐसी स्टेज बनाने के लिए विशेष अभ्यास बताया कि देखते हुए भी न देखो, सुनते हुए भी न सुनो। एक ही बात सुनो, और एक बिन्दु को ही देखो। विस्तार को न देख, एक सार को देखो।**

AV, Original 28.12.1978
आत्मिक सुख वा आत्मिक शान्ति की अनुभूति, रूहानियत की अनुभूति के भिन्न भिन्न शस्त्र, नम्बरवार, समय प्रमाण कार्य में लगाया है, लेकिन **लास्ट बम अर्थात् परमात्म बम है, बाप की प्रत्यक्षता का। जो देखे, जो सम्पर्क में आ करके सुने, उन्हीं द्वारा यह आवाज़ निकले कि बाप आ गये हैं - डायरेक्ट आलमाइटी अथॉरिटी का कर्त्तव्य चल रहा है। यह अन्तिम बाम्ब है** जिससे चारों ओर से आवाज़ निकलेगा - अभी यह कार्य रहा हुआ है। यह कैसे होगा, और कब होगा?

परमात्म प्रत्यक्षता का आधार सत्यता है। **सत्यता ही प्रत्यक्षता है - एक स्वयं के स्थिति की सत्यता, दूसरी सेवा की सत्यता। सत्यता का आधार है स्वच्छता और निर्भयता। इन दोनों धारणाओं के आधार से, सत्यता द्वारा ही प्रत्यक्षता होगी।** किसी भी प्रकार की अस्वच्छता, अर्थात् ज़रा भी सच्चाई सफाई की कमी है, तो कर्त्तव्य की सिद्धि, प्रत्यक्षता हो नहीं सकती।

AV, Original 10.01.1982
अभी, इस इष्ट देवात्मा के संस्कार इमर्ज करो। वर्णन करने के साथ 'स्मृति स्वरूप सो समर्थ स्वरूप' बन, स्टेज पर आओ। इस वर्ष में **सर्व आत्मायें यही अनुभव करें कि जिन्हें हम ढूँढते हैं, जिन आत्माओं को हम चाहते हैं, जिन श्रेष्ठ आत्माओं से हम कुछ चाहना रखते थे, वही श्रेष्ठ आत्मायें - यही हैं।** सबके मुख से, वा मन से, यही आवाज निकले, कि 'यह वही हैं'। ऐसे अनुभव करें - बस, इन्हों से मिले, तो बाप से मिले। जो कुछ मिला है, इन्हों द्वारा ही मिला है। यही मास्टर हैं, गाइड हैं, एंजिल हैं, मैसेन्जर हैं। **बस 'यही हैं, यही हैं, और वही हैं' - यह धुन सबके अन्दर लग जाए।** इन्हीं दो शब्दों की धुन हो – 'यही हैं, और वही हैं'। 'मिल गये, मिल गये ..', यह खुशी की तालियाँ बजायें। ऐसे अनुभव कराओ।

AV, Original 21.02.1985
विदेशी टीचर्स भाई-बहिनों से:
आपको देखकर मुख से यह निकले – 'बाबा'! तभी कहेंगे पावरफुल दर्पण हो। अकेली आत्मा नहीं दिखाई दे, बाप दिखाई दे। इसी को कहा जाता है यथार्थ सेवाधारी। समझा! जितना आपके हर संकल्प में, बोल में 'बाबा-बाबा' होगा, उतना औरों को आप से 'बाबा' दिखाई देगा। जैसे आजकल के साइंस के साधनों से, आगे जो पहली चीज़ दिखाते वह गुम हो जाती, और दूसरी दिखाई देती। **ऐसे आपके साइलेन्स की शक्ति, आपको देखते हुए, आपको गुम कर दे - बाप को प्रत्यक्ष कर दे। ऐसी शक्तिशाली सेवा हो।**

AV, Original 15.01.1986
प्रश्न: जो समीप सितारे हैं, उनके लक्षण क्या होंगे?
उत्तर: उनमें समानता दिखाई देगी। समीप सितारों में बापदादा के गुण और कर्तव्य प्रत्यक्ष दिखाई देंगे। जितनी समीपता, उतनी समानता होगी। **उनका मुखड़ा बापदादा का साक्षात्कार कराने वाला दर्पण होगा। उनको देखते ही, बापदादा का परिचय प्राप्त होगा। भले देखेंगे आपको, लेकिन आकर्षण बापदादा की तरफ होगी। इसको कहा जाता है - 'सन शोज फादर'।** स्नेही के हर कदम में, जिससे स्नेह है उसकी छाप देखने में आती है। जितना हर्षित मूर्त, उतना आकर्षण मूर्त बन जाते हैं।

AV, Original 18.01.1986
प्रत्यक्षता का नगाड़ा, एक ही साज में बजेगा - 'मिल गया, आ गया।'! अभी तो बहुत काम पड़ा है। आप समझ रहे हो कि पूरा हो रहा है। अभी तो वाणी द्वारा बदलने का कार्य चल रहा है। **अभी वृत्ति द्वारा वृत्तियाँ बदलें, संकल्प द्वारा संकल्प बदल जाएं।** … यह सूक्ष्म सेवा स्वत: ही कई कमज़ोरियों से पार कर देगी। जो समझते हैं कि यह कैसे होगा - वह जब इस सेवा में बिजी रहेंगे, तो स्वत: ही वायुमण्डल ऐसा बनेगा, जो अपनी कमज़ोरियाँ स्वयं को ही स्पष्ट अनुभव होंगी, और वायुमण्डल के कारण स्वयं ही शर्मशार हो परिवर्तित हो जायेंगे। कहना नहीं पड़ेगा। कहने से तो देख लिया।

इसलिए अभी ऐसा प्लैन बनाओ। जिज्ञासु और ज्यादा बढ़ेंगे, इसकी चिंता नहीं करो। मदोगरी भी बहुत बढ़ेगी, इसकी भी चिंता नहीं करो। **मकान भी मिल जायेंगे, इसकी भी चिंता नहीं करो। सब सिद्धि हो जायेगी। यह विधि ऐसी है जो सिद्धि स्वरूप बन जायेंगे।**

AV, Original 20.03.1987
जैसे ड्रामा में दिखाते हो ना, सब धर्म वाले मिलकर कहते हैं – 'हम एक हैं, एक के हैं'। वह ड्रामा दिखाते हो, **यह प्रैक्टिकल में स्टेज पर, सब धर्म वाले मिलकर एक ही आवाज में बोलें - 'एक बाप है, एक ही ज्ञान है, एक ही लक्ष्य है, एक ही घर है, यही है' - अब यह आवाज चाहिए।** ऐसा दृश्य जब बेहद की स्टेज पर आये, तब प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेगा, और इस झण्डे के नीचे सब यही गीत गायेंगे। **सबके मुख से एक शब्द निकलेगा - 'बाबा हमारा', तब कहेंगे प्रत्यक्ष रूप में शिवरात्रि मनाई। अंधकार खत्म हो गोल्डन मॉर्निंग (सुनहरी प्रात:) के नजारे दिखाई देंगे।** इसको कहते हैं - आज और कल का खेल। **आज अंधकार, कल गोल्डन मॉर्निंग। यह है लास्ट पर्दा।**

AV, Original 18.01.1990
आगे चल आप स्वयं वी.आई.पी. हो जायेंगे। आपसे बडा कोई दिखाई नहीं देगा। बनी-बनाई स्टेज पर दूसरे लोग आपको निमंत्रण देंगे। अपने तन-मन-धन की सेवाओं की स्वयं ऑफर करेंगे। आपकी मिन्नते करेंगे। **मेहनत आप नहीं करेंगे, वह रिक्वेस्ट करेंगे कि आप हमारे पास आओ। तब ही प्रत्यक्षता की आवाज़ बुलंद होगी, और सबकी अटेंशन, आप बच्चों द्वारा, बाप तरफ़ जायेगी।** वह ज्यादा समय नहीं चलेगा। सबकी नज़र बाप तरफ़ जाना अर्थात् प्रत्यक्षता होना, और जय-जयकार के चारों और घंटे बजेंगे। यह ड्रामा का सूक्ष्म राज़ बना हुआ है। **प्रत्यक्षता के बाद अनेक आत्माएं पश्चाताप करेंगी। और बच्चों का पश्चाताप बाप देख नहीं सकता। इसलिए परिवर्तन हो जायेंगा।** अभी आप ब्राह्मण-आत्माओं की ऊँची स्टेज सदाकाल की बन रही है। आपकी ऊँची स्टेज, सेवा की स्टेज के निमंत्रण दिलायेगी। और बेहद विश्व की स्टेज पर जय-जयकार का पार्ट बजायेंगे। सुना - सेवा का परिवर्तन?

AV, Original 18.01.1997
बाप यही चाहते हैं कि मेरा हर एक बच्चा अपनी मूर्त से बाप की सीरत दिखायें। सूरत भिन्न-भिन्न हो लेकिन सबकी सूरत से बाप की सीरत दिखाई दे। जो भी देखे, जो भी सम्बन्ध में आये - वह आपको देखकर आपको भूल जाये, लेकिन आप में बाप दिखाई दे, तब ही समय की समाप्ति होगी। सबके दिल से यह आवाज़ निकले हमारा बाप आ गया है - मेरा बाप है। ब्रह्माकुमारियों का बाप नहीं, मेरा बाप है। **जब सभी के दिलों से आवाज़ निकले कि 'मेरा बाप है', तब ही यह आवाज़ चारों ओर नगाड़े के माफिक गूँजेगा। जो भी साइंस के साधन हैं, उन साधनों में यह नगाड़ा बजता रहेगा – 'मेरा बाप आ गया'।** अभी जो भी कर रहे हो, बहुत अच्छा किया है और कर रहे हो। लेकिन अभी सबका इकट्ठा नगाड़ा बजना है। **जहाँ भी सुनेंगे, एक ही आवाज़ सुनेंगे। 'आने वाले आ गये' - इसको कहा जाता है, बाप की स्पष्ट प्रत्यक्षता।**

AV, Original 30.03.1999

दादी जी से:

एक सेकण्ड की आपकी दृष्टि कई घण्टों की प्राप्ति का अनुभव करायेगी। अभी बोलने की, बैठने की भी मेहनत कम होती जायेगी। एकदम ब्रह्मा बाप ही दिखाई देगा। यह दादियां नहीं हैं, ब्रह्मा बाप है। **अव्यक्त ब्रह्मा, अव्यक्त रूप से पालना दे रहे हैं, और आप द्वारा साकार ब्रह्मा बाप की अनुभूति बढ़ती जायेगी।** आपको दादी नहीं देखेंगे, ब्रह्मा देखेंगे।

AV, Original 31.10.2006

सेवा के निमित्त मुख्य बहिनें से:

जब शक्ति सेना अपने को प्रत्यक्ष करेगी, तब बाप प्रत्यक्ष होगा क्योंकि शक्ति और पाण्डवों के द्वारा ही बाप प्रत्यक्ष होना है। **तो पहले शक्तियां या पाण्डव खुद अपने को सम्पूर्ण प्रत्यक्ष करेंगे, तब बाप प्रत्यक्ष होगा। हर एक के चेहरे में बाप ही दिखाई देगा।** इतनी संगठन में शक्ति है। तो अच्छा लगा। आप सभी को भी अच्छा लग रहा है ना। **संगठन की शक्ति को बढ़ाते चलो। बाप को प्रत्यक्ष करते चलो।**

AV, Original 13.04.2011

बाप चाहते हैं, हर बच्चा, महारथी निमित्त बच्चे, तो औरों को भी, अपने चेहरे द्वारा, बाप का साक्षात्कार कराने वाले हों। **उन्हों के चेहरे और चलन से, बाप का प्रकाशमय चेहरा, और साथ में, बाप जैसी न्यारी और प्यारी चलन का साक्षात्कार होता रहे।** ब्रह्मा बाप को देखा - ब्रह्मा बाप ने अन्त तक, बाप की श्रीमत प्रमाण, हर मुरली में कितना बारी 'बाबा-बाबा' कहा; गिनती करना, हर मुरली में 'बाबा-बाबा' कितने बारी कहते हैं - और अपनी सूरत से, मूर्त से, वचन से, विशेष नयन और मस्तक से, बाप को प्रत्यक्ष किया - आप बच्चे तो अनुभवी हो, कि ब्रह्मा बाप को देखते, क्या अनुभव होता? बापदादा! सिर्फ 'बाप' शब्द कोई नहीं कहता, सदा हर एक के मुख से 'बाप-दादा' इकठ्ठा निकलता, और अनुभव होता। **ऐसे, 'फालो फादर'। आपके चेहरे से, बोल से, चलन से, दृष्टि से, बाप की याद स्वत: ही देखने वाले को आवे।**

108 माला के मणके, कौन सी विशेषता से बनते हैं?

35] 108 मणकों की विशेषता - आपस में भी एकमत - और एक शिव बाप की ही लगन से, एक ही मत पर चलने वाले; स्नेह के धागे से, मोती अति समीप होते हैं, तब ही माला बनती है; माला की विशेषता है - एक दो के संस्कारों के समीप - दाने से दाना मिला हुआ हो; जब तक एक दूसरे से न मिलें, तब तक माला बन नहीं सकती!

AV, Original 13.03.1969
जब याद की यात्रा का अनुभव करेंगे, तो अव्यक्त स्थिति का प्रभाव आपके नयनों से, चलन से, प्रत्यक्ष देखने में आयेगा। फिर उन्हों से माला बनवायेंगे।

AV, Original 30.07.1970
माला के मणके, कौन सी विशेषता से बनते हैं? **मणकों की विशेषता यही है, जो एकमत होकर, एक ही धागे में पिरोये जाते हैं। एक की ही लगन, एकरस स्थिति, और एकमत - तो सब, एक ही एक।** एक जैसे मणके हैं तो एक धागे में पिरोये जाते हैं ना? तो एक ही मत पर चलने वाले - और आपस में भी एकमत हो। संकल्प भी एक से। **दो मत होती हैं, तो वह दूसरी, अर्थात् 16,000 की माला के दाने बन जाते हैं। एक मत के लिए, ऐसा वातावरण बनाना है। वातावरण तब बनेगा, जब समाने की शक्ति होगी।**

AV, Original 09.10.1971
एक-दो के समीप आते-आते समान होते जाते हैं। तो **जैसे यह दो (दादी प्रकाशमणि और दीदी मनमोहिनी) एक दिखाई देती हैं, वैसे यह सब एक दिखाई दें, तब कहेंगे अब माला तैयार है। स्नेह का धागा तैयार हो गया, तो मणके सहज पिरो जायेंगे। स्नेह के धागे से, मोती अति समीप होते हैं, तब ही माला बनती है।** समीपता ही माला बनाती है। तो स्नेह का धागा तैयार हुआ, लेकिन **अभी मणकों को, एक-दो के समीप, मन की भावना और स्वभाव मिलाना है, तब माला प्रत्यक्ष दिखाई देगी। यह ज़रूर करना है। ऐसी कमाल कर दिखाना।**

AV, Original 12.06.1972
चलन से ही स्वयं अपना नंबर ले लेते हैं। अभी नंबर फिक्स होने का समय आ रहा है।

AV, Original 27.05.1974
रिज़ल्ट आऊट बाप-दादा मुख द्वारा नहीं करेंगे, या कोई कागज़ व बोर्ड पर नम्बर नहीं लिखेंगे। **लेकिन रिज़ल्ट आऊट कैसे होगी? आप स्वयं ही स्वयं को अपनी योग्यताओं प्रमाण, अपने-अपने निश्चित नम्बर के योग्य समझेंगे, और सिद्ध करेंगे। ऑटोमेटिकली उनके मुख से स्वयं के प्रति, फाइनल रिज़ल्ट के नम्बर न सोचते हुए भी, उनके मुख से सुनाई देंगे, और चलन से दिखाई देंगे।** अब तक तो रॉयल पुरूषार्थियों की रॉयल भाषा चलती है, लेकिन थोड़े समय में रॉयल भाषा रीयल हो जायेगी। जैसेकि कल्प पहले का गायन है, रॉयल पुरूषार्थियों का - कितना भी स्वयं को बनाने का पुरूषार्थ करें, लेकिन सत्यता रूपी दर्पण के आगे रॉयल भी रीयल दिखाई देगा। **तो आगे चलकर ऐसे सत्य बोल, सत्य वृत्ति, सत्य दृष्टि, सत्य वायुमण्डल, सत्य वातावरण, और सत्य का संगठन प्रसिद्ध दिखाई देगा। अर्थात् ब्राह्मण परिवार एक शीश महल बन जायेगा। ऐसी फाइनल रिज़ल्ट ऑटोमेटिकली आऊट होगी।**

AV, Original 23.10.1975

तकदीर की रेखाओं में, मुख्य चार सब्जेक्ट्स की चार रेखायें दिखाई देती हैं। **बहुत थोड़े बच्चे हैं, जिनकी चारों की चारों ही रेखायें स्पष्ट हैं, अर्थात् चारों ही सब्जेक्ट्स में, तदबीर द्वारा अपनी ऊंची तकदीर बनाई है।** इस प्रमाण 'पास विद् ऑनर्स' और 'फर्स्ट क्लास' अर्थात् 'फर्स्ट डिवीज़न' में ऐसे तकदीरवान ही आयेंगे, जिन्हों की चारों ही तकदीर की लकीरें स्पष्ट हैं। **'पास विद् ऑनर्स' की तकदीर की लकीरें चारों ही ओर, एक समान, चमकती हुई स्पष्ट दिखाई देती हैं - जो हैं 'अष्ट (8) रत्न।'** दूसरे नम्बर में फर्स्ट डिवीज़न वाले सौ (100) रत्न, जिनकी चारों ही लकीरें दिखाई देती हैं, **लेकिन समान स्पष्ट रूप नहीं हैं - कोई ज्यादा तेज हैं, कोई कुछ कम।** सेकेण्ड डिवीज़न सोलह हजार (16,000) - उन सोलह हजार (16,000) में से, पहले दो-तीन हजार की रेखाओं में **चार सब्जेक्ट्स में से, तीन सब्जेक्ट्स में 50% मार्क्स में पास हैं, और एक सब्जेक्ट् में 25% में पास हैं, अर्थात् न के बराबर हैं।** ऐसे सर्व तकदीरवानों की तकदीर देखी।

AV, Original 09.12.1975

एक भी पॉवरफुल संगठन होने से, एक-दूसरे को खींचते हुए, 108 की माला का संगठन एक हो जायेगा। **एक-मत का धागा हो, और संस्कारों की समीपता हो, तब ही माला भी शोभेगी। दाना अलग होगा, या धागा अलग-अलग होगा, तो माला शोभेगी नहीं।**

AV, Original 27.05.1977

विजय माला के जो मणके बनते हैं - पहला नम्बर, वा 108 वाँ नम्बर - दोनों में अन्तर क्या है? कहलाते तो सब विजयी रत्न हैं। नाम ही है 'विजय माला'। लेकिन पहला नम्बर विजयी रत्न, और जो लास्ट का विजयी रत्न है - उनमें कोई विशेष सब्जेक्ट (विषय) पर विजय का आधार है, वा टोटल नम्बर पर आधार है? **एक होता है विशेष सब्जेक्ट में - दूसरा होता है सब सब्जेक्ट के टोटल मार्क्स का अन्तर। तो इसकी गुह्यता क्या है - अर्थात् विजय की गुह्य गति? इसमें बहुत कुछ रहस्य भरा हुआ है।** युगल दाने की विशेष सब्जेक्ट कौन सी है - और **अष्ट रत्नों की कौन सी है? 100 रत्नों की कौन सी है? उसमें भी आगे और पीछे वालों में क्या अन्तर है? इस गुह्य गति को आपस में मनन करना।**

AV, Original 02.01.1978

ब्रह्मा बोले - 16,108 की माला तो तैयार हुई ही पड़ी है। ब्राह्मणों की संख्या कितनी बताते हो? **क्या 50 हज़ार से 16,108 नहीं निकलेंगे? मणके तैयार हैं, लेकिन नम्बरवार पिरोने के लिए लास्ट (last) सेकेण्ड भी अभी रहा हुआ है - मणके फिक्स (fix) हो गये हैं, जगह फिक्स नहीं हुई है। जगह में लास्ट सो फास्ट (fast) हो सकते हैं।** आज ब्रह्मा ने 16,108 मणकों अर्थात् सभी सहयोगी आत्माओं के तकदीर की लकीर फाइनल (final) कर दी।

AV, Original 13.01.1978

सब एक दो में रूह-रूहान भी करते हैं - 8 में कौन होंगे, 100 में कौन होंगे - 16,000 का तो कोई सवाल ही नहीं। आखिर भी 8 में, या 100 में कौन होंगे? विदेशी सोचते हैं, हम कौन-सी माला में होंगे - लास्ट में आने वाले सोचते हैं, हम कौन-सी माला में होंगे - और शुरू में आने वाले फिर सोचते हैं, 'लास्ट सो फास्ट' है - ना मालूम हमारा स्थान है, या लास्ट वाले का है - आखिर हिसाब क्या है? किताब तो बाप के पास है ना। **फिक्स नहीं किये गये हैं। आप लोगों ने भी आर्ट कम्पटीशन (art competition) की तो चित्र कैसे चुना? पहले थोड़े अलग किये - फिर उसमें से एक, दो, तीन नम्बर लगाया। पहले चुनने होते हैं - फिर नम्बरवार फिक्स होते हैं। तो अब चुने गये हैं। लेकिन फिक्स नहीं हुए हैं।**

(पीछे आने वालों का क्या होगा?) सदैव कुछ सीटस (seats) अन्त तक भी होती हैं। रिज़र्वेशन (reservation) होती है, तो भी लास्ट तक कुछ कोटा (qouta) रखते हैं - लेकिन वह कोटों में कोई, कोई में भी कोई होता है।

AV, Original 16.11.1981

एक है - याद की माला; तो जितना स्नेह से, और जितना समय आप बाप को याद करते, उतना और उसी स्नेह से बाप भी याद करते हैं। **तो अपना नम्बर निकाल सकते हो।** अगर आधा समय याद रहता, और स्नेह भी 50% का है, वा 75% का है, तो उसी आधार से - सोचो 50% स्नेह और आधा समय याद है, तो माला में भी आधी माला समाप्त होने के बाद आयेंगे। **अगर याद निरन्तर है और सम्पूर्ण स्नेह है, सिवाए बाप के और कोई नजर ही नहीं आता, सदा बाप और आप भी कम्बाइन्ड हैं, तो माला में भी कम्बाइन्ड दाने (बाप-दादा) के साथ-साथ, आप भी कम्बाइन्ड होंगे - अर्थात् साथ-साथ मिले हुए होंगे। सदा सब बातों में नम्बरवन होंगे। तो माला में भी नम्बरवन होंगे।** जैसे लौकिक पढ़ाई में फर्स्ट डिवीजन, सेकेण्ड, थर्ड होती हैं, वैसे यहाँ भी महारथी, घोड़े-सवार और पैदल - तीन डिवीजन हैं।

AV, Original 13.06.1982

माला तैयार है - उसकी विशेष निशानी क्या दिखाई देगी? एक के साथ एक दाना मिला हुआ है, यह माला की निशानी है। **माला की विशेषता है - एक दो के संस्कारों के समीप - दाने से दाना मिला हुआ।** वह तैयारी है? जिसको भी देखें, चाहे 108वाँ नम्बर हो, लेकिन दाना मिला हुआ तो वह भी है ना? ऐसे जुड़े हुए हैं? **सभी को यह महसूसता आवे, कि यह तो माला के समान पिरोये हुए मणके हैं।** ऐसे नहीं - संस्कार सबके वैरायटी हैं तो नजदीक कैसे होंगे? नहीं! **वैरायटी संस्कार होते भी, समीप दिखाई दें। वैरायटी के आधार पर नम्बर हो गये, लेकिन दाने तो नजदीक हैं ना, एक दो के! जब तक एक दूसरे से न मिलें, तब तक माला बन नहीं सकती।** एक भी दाना निकल जाए, तो माला खण्डित हो जाए। पूज्य माला नहीं कही जायेगी। दूर भी रह जाए तो भी कहेंगे यह पूज्यनीय माला नहीं। **108वाँ नम्बर भी अगर थोड़ा दूर है, तो माला रेडी नहीं हो सकती।**

AV, Original 06.03.1997

बापदादा ने सोचा, जब इतने 108 में आयेंगे, तो 108 की माला पांच लड़ियों की बनानी पड़ेगी - तो 5- 6-7-8 लड़ियों की माला बनायें ना? **जिन्होंने संकल्प किया है, लक्ष्य रखा है (कि 108 में आयेंगे), बहुत अच्छा है। लेकिन सिर्फ इस संकल्प को बीच-बीच में दृढ़ करते रहना। ढीला नहीं करना।** ...

बापदादा ने कहा कि बापदादा 8-10 लड़ों की माला बना देंगे, इसलिए **आप यह चिंता नहीं करो। औरों को नहीं देखो, आपको नम्बर मिल ही जाना है, यह बाप की गैरन्टी है। आप किनारा नहीं करना।** माला के बीच में धागा खाली नहीं करना। एक दाना बीच से टूट जाए, निकल जाए, तो माला अच्छी नहीं लगेगी। सिर्फ यह नहीं करना - बाकी **बाबा की गैरन्टी है, आप जरूर आयेंगे।**

'साइलेन्स बल से साइंस पर विजय' – Part 1

38] ब्राह्मण बच्चे, योगबल से, अर्थात साइलेन्स बल से - इस सृष्टि को पावन बनाते हैं - विश्व के मालिक बनते हैं; साइन्स के साधन जब फेल हो जाते हैं, तो यह साइलेन्स का साधन काम में आता है; साइलेन्स की शक्ति के आगे यह साइन्स झुकेगी; इस संकल्प अथवा साइलेन्स की शक्ति से प्रयोगी बनेंगे!

SM, Revised 11.05.2020
अभी तुम बच्चे पुरूषार्थ करते हो कि हम विष्णु कुल का बनें। विष्णुपुरी का मालिक बनने के लिए तुम ब्राह्मण बने हो। तुम्हारी दिल में है - **हम ब्राह्मण अपने लिए सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी राजधानी स्थापन कर रहे हैं, श्रीमत पर। इसमें लड़ाई आदि की कोई बात नहीं। देवताओं और असुरों की लड़ाई कभी होती नहीं।** देवतायें हैं सतयुग में। वहाँ लड़ाई कैसे होगी? **अभी तुम ब्राह्मण योगबल से विश्व के मालिक बनते हो। बाहुबल वाले विनाश को प्राप्त हो जायेंगे। तुम साइलेन्स बल से साइंस पर विजय पाते हो।** अब तुमको आत्म-अभिमानी बनना है।

SM, Revised 28.03.2020
ज्ञान का तीर तीखा गाया जाता है ना। साइंस में भी कितनी पावर है। बॉम्बस आदि का कितना धमाका होता है। **तुम कितनी साइलेन्स में रहते हो। साइंस पर साइलेन्स विजय पाती है। तुम इस सृष्टि को पावन बनाते हो।** पहले तो अपने को पावन बनाना है। ड्रामा अनुसार पावन भी बनना ही है, इसलिए विनाश भी नूँधा हुआ है। ड्रामा को समझ कर बहुत हर्षित रहना चाहिए। अभी हमको जाना है शान्तिधाम। बाप कहते हैं, वह तुम्हारा घर है। घर में तो खुशी से जाना चाहिए ना। इसमें देही-अभिमानी बनने की बहुत मेहनत करनी है। **इस याद की यात्रा पर ही बाबा बहुत जोर देते हैं, इसमें ही मेहनत है।**

AV, Original 14.12.1985, Revised 08.03.2020
बापदादा सभी बच्चों की रूहरिहान तीन रूपों से सुन रहे हैं। (1) एक नयनों की भाषा में बोल रहे हैं, (2) भावना की भाषा में, (3) संकल्प की भाषा में बोल रहे हैं। मुख की भाषा तो कामन भाषा है। लेकिन **यह तीन प्रकार की भाषा, रूहानी योगी जीवन की भाषा है। जिसको रूहानी बच्चे और रूहानी बाप जानते हैं, और अनुभव करते हैं। जितना-जितना अन्तर्मुखी स्वीट साइलेन्स स्वरूप में स्थिति होते जायेंगे, उतना इन तीन भाषाओं द्वारा सर्व आत्माओं को अनुभव करायेंगे।** यह अलौकिक भाषायें कितनी शक्तिशाली हैं। मुख की भाषा सुनकर और सुनाकर मैजारिटी थक गये हैं।

ऐसे ही संकल्प की भाषा, यह भी बहुत श्रेष्ठ भाषा है क्योंकि संकल्प शक्ति सबसे श्रेष्ठ शक्ति है, मूल शक्ति है। और सबसे तीव्रगति की भाषा, यह संकल्प की भाषा है। कितना भी कोई दूर हो, कोई साधन नहीं हो, लेकिन संकल्प की भाषा द्वारा किसी को भी मैसेज दे सकते हो। **अन्त में यही संकल्प की भाषा काम में आयेगी। साइन्स के साधन जब फेल हो जाते हैं, तो यह साइलेन्स का साधन काम में आयेगा। लेकिन कोई भी कनेक्शन जोड़ने के लिए सदा लाइन क्लीयर चाहिए। जितना-जितना एक बाप, और उन्हीं द्वारा सुनाई हुई नॉलेज में, वा उसी नॉलेज द्वारा सेवा में, सदा बिजी रहने के अभ्यासी होंगे, उतना श्रेष्ठ संकल्प होने के कारण लाइन क्लीयर होगी।**

SM, Revised 07.11.2019 (Original 28.12.1968)

बच्चे सुनते तो रहते हैं कि साइन्सदान चांद पर जाने का प्रयत्न करते रहते हैं। लेकिन वे लोग तो सिर्फ चांद तक जाने की कोशिश करते हैं, कितना खर्चा करते हैं। बहुत डर रहता है, ऊपर जाने में। अब तुम अपने ऊपर विचार करो, तुम कहाँ के रहने वाले हो? **वह तो चन्द्रमा की तरफ जाते हैं। तुम तो सूर्य-चांद से भी पार जाते हो, एकदम मूलवतन में।** वो लोग तो ऊपर जाते हैं तो उनको बहुत पैसे मिलते हैं। ऊपर में चक्र लगाकर आते, तो उन्हों को लाखों सौगातें मिलती हैं। शरीर का जोखिम (रिस्क) उठाकर जाते हैं। **वह हैं साइन्स घमण्डी। तुम्हारे पास है साइलेन्स का घमण्ड। तुम जानते हो हम आत्मा अपने शान्तिधाम, ब्रह्माण्ड में जाते हैं।** आत्मा ही सब कुछ करती है। उन्हों की भी आत्मा शरीर के साथ ऊपर में जाती है। बड़ा खौफनाक है। डरते भी हैं, ऊपर से गिरे तो जान खत्म हो जायेगी। **वह सब हैं जिस्मानी हुनर। तुमको बाप रूहानी हुनर (कला) सिखलाते हैं।**

SM, Revised 31.08.2019

अभी तुम जानते हो यह तो विनाश की तैयारियाँ हो रही हैं। **उन्हों की है साइन्स, तुम्हारी है साइलेन्स। तुम जितना साइलेन्स में जायेंगे, उतना वह विनाश के लिए अच्छी-अच्छी चीजें तैयार करते रहेंगे। दिन-प्रतिदिन महीन चीजें बनाते रहते हैं। तुमको अन्दर में खुशी होती है - बाबा तो हमारे लिए नई दुनिया बनाने आये हैं।**

AV, Original 15.12.1999, Revised 04.12.2016

जो भी सुख के साधन हैं मैजारिटी लाइट के आधार पर हैं। तो क्या आपकी आध्यात्मिक लाइट, आत्म लाइट, यह कार्य नहीं कर सकती? जो चाहो वायब्रेशन नजदीक के, दूर के कैच कर सकेंगे। अभी क्या है, एकाग्रता की शक्ति, मन-बुद्धि दोनों ही एकाग्र हो, तब कैचिंग पावर होगी। बहुत अनुभव करेंगे। संकल्प किया - नि:स्वार्थ, स्वच्छ, स्पष्ट - वह बहुत क्विक अनुभव करायेगा। **साइलेन्स की शक्ति के आगे यह साइन्स झुकेगी। अभी भी समझते जाते हैं कि साइंस में भी कोई मिसिंग हैं, जो भरनी चाहिए; इसलिए बापदादा फिर से अन्डरलाइन करा रहा है कि अन्तिम स्टेज, अन्तिम सेवा - यह संकल्प शक्ति बहुत फास्ट सेवा करायेगी, इसीलिए संकल्प शक्ति के ऊपर और अटेन्शन दो। बचाओ, जमा करो। बहुत काम में आयेगी। प्रयोगी, इस संकल्प की शक्ति से बनेंगे।** साइंस का महत्व क्यों है? प्रयोग में आती है, तब सब समझते हैं – हाँ, साइंस अच्छा काम करती है। **तो साइलेन्स की पावर का प्रयोग करने के लिए एकाग्रता की शक्ति चाहिए, और एकाग्रता का मूल आधार है - मन की कन्ट्रोलिंग पावर, जिससे मनोबल बढ़ता है।**

SM, Revised 03.12.2016

साइंस का भी देखो अभी कितना जोर है। **यह साइंस सुख के लिए भी है, तो दु:ख के लिए भी है। सुख तो इससे अल्पकाल का ही मिलता है। इससे ही इस दुनिया का विनाश होता है। तो यह दु:ख हुआ ना? तुम्हारी है साइलेन्स पावर। उन्हों की है साइंस पावर। तुम साइलेन्स से अपने स्वधर्म में रहते हो, तो पवित्र बन जाते हो।** याद से विकर्म विनाश होते हैं। तुम योगबल से राजाई लेते हो, इसमें लड़ाई आदि की बात नहीं। तुम बाबा से राजाई का वर्सा पाते हो। बाहुबल की तो बात ही अलग है।

AV, Original 31.12.1981, Revised 27.11.2016

आर्डर मिले अपने स्वीट होम में चले जाओ तो कितने समय में जा सकते हो? सेकण्ड में जा सकते हो ना। आर्डर मिले, अपने मास्टर सर्वशक्तिमान की स्टेज द्वारा, अपनी सर्वशक्तियों की किरणों द्वारा, अधंकार में रोशनी लाओ - (मास्टर)

ज्ञान सूर्य, अधंकार को मिटा लो - तो सेकण्ड में यह बेहद की सेवा कर सकते हो? ऐसे मास्टर ज्ञान सूर्य बने हो? **जब साइन्स के साधन सेकण्ड में अंधकार से रोशनी कर सकते हैं, तो हे ज्ञान सूर्य बच्चे, आप कितने समय में रोशनी कर सकते हो? साइन्स से तो साइलेन्स की शक्ति अति श्रेष्ठ है। तो ऐसे अनुभव करते हो कि सेकण्ड में स्मृति का स्विच आन करते, अंधकार में भटकी हुई आत्मा को रोशनी में लाते हैं?**

SM, Revised 02.11.2016

बाप कहते हैं, मन्मनाभव। मौत सामने खड़ा है। तुमको ही मैसेन्जर अथवा पैगम्बर कहा जाता है। तुम ब्राह्मणों के सिवाए कोई मैसेन्जर बन नहीं सकता। पतित-पावन शिवबाबा आते हैं। किसमें प्रवेश करते हैं, यह भी लिखा हुआ है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना। यह समझते थोड़ेही है। सूक्ष्मवतन में प्रजापिता ब्रह्मा होगा क्या? यहाँ ही पतित से पावन बनते हैं। **साइलेन्स बल से स्थापना होती है, साइंस बल से विनाश।**

AV, Original 13.11.1981, Revised 11.09.2016

परमार्थ बच्चों के सामने, माया भी रॉयल ईश्वरीय रूप रच करके आती है। जिसको परखने के लिए एकाग्रता की शक्ति चाहिए और **एकाग्रता की शक्ति साइलेन्स की शक्ति से ही प्राप्त होती है। वर्तमान समय ब्राह्मण आत्माओं में तीव्रगति का परिवर्तन कम है, क्योंकि माया के रॉयल ईश्वरीय रोल्ड गोल्ड को रीयल गोल्ड समझ लेते हैं।** जिस कारण वर्तमान न परखने के कारण बोल क्या बोलते हैं? मैंने जो किया वा कहा, वह ठीक बोला। मैं किसमें रांग हूँ? ऐसे ही तो चलना पड़ेगा! **रांग होते भी, अपने को रांग नहीं समझेंगे। कारण? परखने की शक्ति की कमी। माया के रॉयल रूप को रीयल समझ लेते। परखने की शक्ति न होने के कारण यथार्थ निर्णय भी नहीं कर सकते।** स्व-परिवर्तन करना है वा पर-परिवर्तन होना है, यह निर्णय नहीं कर सकते, इसलिए परिवर्तन की गति तीव्र चाहिए। समय तीव्रगति से आगे बढ़ रहा है। लेकिन **समय प्रमाण परिवर्तन होना, और स्व के श्रेष्ठ संकल्प से परिवर्तन होना– इसमें प्राप्ति की अनुभूति में रात-दिन का अन्तर है।**

AV, Original 13.02.1999, Revised 06.03.2016

प्रकृति का खेल देखते चलो। घबराना नहीं। आप अलौकिक हो, साधारण नहीं हो। साधारण लोग हलचल में आयेंगे, घबरायेंगे। अलौकिक, मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मायें खेल देखते, अपने विश्व कल्याण के कार्य में बिजी रहेंगे। अगर मन और बुद्धि को फ्री रखा, तो घबरायेंगे। **मन और बुद्धि से लाइट हाउस हो लाइट फैलायेंगे, इस कार्य में बिजी रहेंगे, तो बिजी आत्मा को भय नहीं होगा, साक्षीपन होगा;** और कोई भी हलचल हो, अपने बुद्धि को सदा ही क्लीयर रखना, क्यों-क्या में बुद्धि को बिजी वा भरा हुआ नहीं रखना, खाली रखना। **'एक बाप और मैं ..' - तब समय अनुसार, चाहे पत्र, टेलीफोन, टी.वी. वा आपके जो भी साधन निकले हैं, वह नहीं भी पहुंचे, तो बापदादा का डायरेक्शन क्लीयर कैच होगा। यह साइंस के साधन कभी भी आधार नहीं बनाना। यूज करो, लेकिन साधनों के आधार पर अपनी जीवन को नहीं बनाओ। कभी-कभी साइंस के साधन होते हुए भी यूज नहीं कर सकेंगे; इसलिए साइलेन्स का साधन - जहाँ भी होंगे, जैसी भी परिस्थिति होगी - बहुत स्पष्ट और बहुत जल्दी काम में आयेगा। लेकिन बुद्धि की लाइन क्लीयर रखना।**

वायदा (promise) क्या है - बापदादा का? – Part 1

44] बापदादा का वायदा है - बच्चों के साथ रहेंगे; और साथ चलेंगे - जब कार्य समाप्त होगा; बाप बच्चों से अलग हो नहीं सकता; मिलने का वायदा तो है - लेकिन विधि, समय प्रमाण परिवर्तन होती रहेगी; बाप का काम ही है - बच्चों को, समान बना के साथ ले जाना!

AV, Original 30.06.1974
ब्राह्मण बच्चों के साथ जो (ब्रह्मा) बाप का वायदा है कि साथ चलेंगे, साथ मरेंगे और साथ जियेंगे - अर्थात् पार्ट समाप्त करेंगे; ब्रह्मा बाप ने बच्चों के साथ जो कॉन्ट्रैक्ट विश्व-परिवर्तन का उठाया है, वह आधे में छोड़ सकते हैं क्या? स्थापना के कार्य में निमित्त बनी हुई नींव (फाउण्डेशन) बीच से निकल सकती है क्या? 'जो कर्म मैं करूँगा, मुझे देख सब करेंगे', यह स्लोगन कर्म-अर्थ निमित्त बनी हुई आत्मा (ब्रह्मा) समाप्त नहीं करेगी? अभी सेवा का कर्म, (ब्रह्मा) बाप को देखते हुए, कर रहे हो ना? कर्म करके दिखाने के निमित्त बनी हुई आत्मा (ब्रह्मा), अन्त तक साथी और सहयोगी अवश्य बनती है।

AV, Original 06.09.1975
जबकि बाप स्वयं बच्चों से सदा साथ रहने का वायदा कर रहे हैं, और निभा भी रहे हैं, तो वायदे का लाभ उठाना चाहिए। ऐसे कम्पनी व कम्पेनियन, फिर कब मिलेंगे? बहुत जन्मों से आत्माओं की कम्पनी लेते हुए, दु:ख का अनुभव करते हुए भी, अब भी आत्माओं की कम्पनी अच्छी लगती है क्या, जो बाप की कम्पनी को भूल, औरों की कम्पनी में चले जाते हो? **कोई वैभव को, व कोई व्यक्ति को कम्पेनियन बना देते हो, अर्थात् उस कम्पनी को निभाने में इतने मस्त हो जाते हो, जो बाप से किये हुए वायदे में भी अलमस्त हो जाते हो!**

AV, Original 18.01.1978
बाप का वायदा है साथ चलेंगे - कब चलेंगे? जब कार्य समाप्त होगा। तो पहले ही, बाप को क्यों भेज देते हैं? 'बाबा चला गया', यह कह, अविनाशी सम्बन्धों को विनाशी क्यों बनाते हो? **सिर्फ पार्ट परिवर्तन हुआ है। जैसे आप लोग भी सेवा स्थान चेन्ज (change) करते हो ना। तो ब्रह्मा बाप ने भी सेवा स्थान चेन्ज किया है। रूप वही, सेवा वही है।** हज़ार भुजा वाले ब्रह्मा के रूप का वर्तमान समय पार्ट चल रहा है, तब तो साकार सृष्टि में इस रूप का गायन और यादगार है।

AV, Original 05.12.1978
वायदा क्या किया है? साथ रहेंगे, साथ चलेंगे, साथ खायेंगे, पीयेंगे - यह वायदा है ना। अभी वायदा बदल गया है क्या? अभी भी वही वायदा है, बदला नहीं है। 'चले गये' - ऐसा नहीं है! साकार में तो और भी थोड़े समय का साकार साथ था, और थोड़ों के लिए साकार का साथ था। अभी तो सभी के साथ हैं। **साकार में तो फिर भी कई प्रकार के बन्धन थे, अभी तो निर्बन्धन हैं। अभी तो और ही तीव्रगति है - बाप को बुलाया और हाज़रा हजूर।**

AV, Original 18.01.1979
जैसे बाप विचित्र है, विचित्र बाप की लीला भी विचित्र है - दुनिया वाले समझते हैं, बाप चले गये; और बाप, बच्चों से, विचित्र रूप में, जब चाहें तब मिलन मना सकते। दुनिया वालों की आँखों के आगे पर्दा आ गया - वैसे भी स्नेही

मिलन पर्दे के अन्दर अच्छा होता है - तो दुनिया की आँखों में पर्दा आ गया - लेकिन बाप बच्चों से अलग हो नहीं सकता। **वायदा है 'साथ चलेंगे', वही वायदा याद है ना। जो आदि सो अन्त।**

AV, Original 07.05.1984

बापदादा साथ देने में नहीं छिपे, लेकिन साकार दुनिया से छिपकर, अव्यक्त दुनिया में उदय हो गये। 'साथ रहेंगे, साथ चलेंगे' यह तो वायदा है ही। यह वायदा कभी छूट नहीं सकता। इसलिए तो ब्रह्मा बाप इन्तजार कर रहे हैं। नहीं तो कर्मातीत बन गये, तो जा सकते हैं। बन्धन तो नहीं है ना। लेकिन स्नेह का बन्धन है। **स्नेह के बन्धन के कारण, साथ चलने का वायदा निभाने के कारण, बाप को इन्तजार करना ही है। साथ निभाना है, और साथ चलना है।** ऐसे ही अनुभव है ना?

AV, Original 19.12.1985

इतना समय इतनी शक्ति को एडजस्ट करना, यह एडजस्ट करने की विशेषता की लिफ्ट के कारण एक्स्ट्रा गिफ्ट है। फिर भी बापदादा को, शरीर का सब देखना पड़ता है। **(दादी गुलज़ार का) बाजा पुराना है, और चलाने वाले (बापदादा) शक्तिशाली हैं। फिर भी 'हाँ जी, हाँ जी' के पाठ के कारण, अच्छा चल रहा है। लेकिन बापदादा भी विधि और युक्ति पूर्वक ही काम चला रहे हैं। मिलने का वायदा तो है - लेकिन विधि, समय प्रमाण परिवर्तन होती रहेगी।**

AV, Original 16.03.1986

बापदादा ने जो वायदा किया है, वह तो निभायेंगे। इस सीजन का फल खाओ। फल है - मिलन, वरदान! सभी सीजन का फल खाने आये हो ना! बापदादा को भी बच्चों को देख खुशी होती है। **फिर भी, साकारी सृष्टि में तो सब देखना होता है। अभी तो मौज मना लो।**

AV, Original 18.01.1998

जैसे बच्चों को बाप के बिना कुछ सूझता नहीं, ऐसे बाप को भी बच्चों के बिना और कुछ नहीं सूझता। अकेले नहीं रहते हैं, साथ में रहते हैं। साकार में तो साथ का अनुभव - साकार रूप में - थोड़े बच्चे कर सकते थे; **अब तो अव्यक्त रूप में, हर बच्चे के साथ, जिस समय चाहे, जब चाहे, साथ निभाते रहते हैं। जैसे चित्रों में दिखाते हैं ना - उन्होंने एक-एक गोपी के साथ कृष्ण को दिखा दिया, लेकिन यह इस समय का गायन है।** अब अव्यक्त रूप में, हर बच्चे के साथ, जब चाहे, चाहे रात को दो बजे, अढ़ाई बजे हैं, किसी भी टाइम साथ निभाते रहते हैं। साकार में तो सेन्टर्स पर चक्कर लगाना कभी-कभी होता, लेकिन अब अव्यक्त रूप में तो पवित्र प्रवृत्ति में भी चक्कर लगाते हैं। बाप को काम ही क्या है, **बच्चों को समान बना के, साथ ले जाना, यही तो काम है ना और क्या है?** तो इसी में ही बिजी रहते हैं।

वायदा (promise) क्या है - बच्चों का? – Part 2

45] बच्चों का पहला वायदा है – 'जो कहोगे, वो करेंगे ..' – 'साथ रहेंगे, साथ चलेंगे' – 'कहाँ भी रहेंगे, जहाँ भी हैं, लेकिन सदा साथ हैं'; दिल की समीपता, साकार में भी समीपता अनुभव कराती है; जब डायरेक्ट साथ निभाने का वायदा है, तो वायदे का फायदा उठाओ!

AV, Original 18.09.1969
आप सबका वायदा क्या है? शुरू-शुरू में आप सब जब आये, तो आपका वायदा क्या था? 'मैं तेरी, तो सब कुछ तेरा'। पहला वायदा ही यह है। 'मैं भी तेरी, और मेरा सब कुछ भी तेरा'। तो फिर भी, 'मेरा' कहाँ से आया? 'तेरे' को 'मेरे' से मिला देते हो। इससे क्या सिद्ध हुआ कि पहला वायदा ही भूल जाते हो। **पहला-पहला वायदा ही सब यह करते हैं – 'जो कहोगे, वो करेंगे - जो खिलायेंगे, जहाँ बिठायेंगे ..'। यह जो वायदा है, वह वायदा याद है?** बाप तुमको अव्यक्त वतन में बिठाते हैं। तो आप फिर व्यक्त वतन में क्यों आ जाते हो? वायदा तो ठीक नहीं निभाया। वायदा है – 'जहाँ बिठायेंगे, वहाँ बैठेंगे'। बाप ने तो कहा नहीं है कि व्यक्त वतन में बैठो। व्यक्त में होते अव्यक्त में रहो। **पहला-पहला पाठ ही भूल जायेंगे, तो फिर ट्रेनिंग क्या करेंगे? ट्रेनिंग में पहला पाठ तो पक्का करवाओ। यह याद रखो कि जो वायदा किया है, उसको निभाकर दिखायेंगे।**

AV, Original 25.01.1976
जो सदा साथ का अनुभव करेंगे, वे कभी किसी देहधारी के साथ की आवश्यकता अनुभव नहीं करेंगे। कभी भी किसी (व्यक्तिगत - PERSONAL) सेवा में, देहधारी का आधार नहीं लेंगे। मर्यादा प्रमाण, संगठन प्रमाण सहयोग लेना, अलग बात है। बाकी किसी परिस्थिति में देहधारी की याद आये कि यह मुझे परिस्थिति से पार करेंगे, राय देंगे, या सहारा देंगे - इससे सिद्ध है कि सर्वशक्तिवान् का सहारा सदा साथ नहीं रहता। **सदा साथ रहने वाले का, बाप से समीप सम्बन्ध होने के कारण, संकल्प में, रूह-रूहान में भी बाबा याद आयेगा कि 'यह बाबा से पूछें'।** कोई निमित्त टीचर याद आये, कोई साथी याद आये, या हमशरीक याद आये - यह भी होता है, वह भी कार्य के प्रति। **लेकिन मन में, बुद्धि में, सदा 'बाबा-बाबा' याद आये। जब डायरेक्ट साथ निभाने का वायदा है, तो वायदे का फायदा उठाओ।**

AV, Original 24.03.1985
बाप के बिना अकेले नहीं जाना है। **जहाँ भी जाओ साथ जाओ। यह ब्राह्मण जीवन का वायदा है। जन्मते ही यह वायदा किया है ना! 'साथ रहेंगे, साथ चलेंगे'।** ऐसे नहीं जंगल में, वा सागर में चले जाना है। नहीं! **साथ रहना है, साथ चलना है। यह वायदा पक्का है ना सभी का? दृढ़ संकल्प वाले सदा सफलता को पाते हैं। दृढ़ता, सफलता की चाबी है। तो यह वायदा भी दृढ़ पक्का किया है ना।** जहाँ दृढ़ता सदा है, वहाँ सफलता सदा है। दृढ़ता कम तो सफलता भी कम।

AV, Original 24.09.1992
कई बच्चे समझते हैं – 'बाबा तो मेरा है ही, लेकिन और भी एक-दो को, मेरा कहना ही पड़ता है'। कहते हैं – 'और कोई नहीं, सिर्फ एक आधार चाहिए'। **लेकिन वायदा क्या है – 'एक बाप, दूसरा न कोई; या एक बाप, एक और?'** भोले बन जाते हो। उस एक में, अनेक समाये हुए होते हैं, इसलिए झमेला हो जाता है। इस पुरानी दुनिया में भी ऐसे

खिलौने मिलते हैं, जो बाहर से एक दिखाई देता है, लेकिन एक में एक होता है। **एक खोलते जाओ तो दूसरा निकलेगा, दूसरा खोलेंगे तो तीसरा निकलेगा। यह भी ऐसा ही खिलौना है। दिखाई एक देता, लेकिन अन्दर समाये हुए अनेक हैं।**

AV, Original 19.01.1995
चाहे विश्व के लास्ट कोने में भी हैं, लेकिन बापदादा के सामने हैं। **बापदादा और बच्चों का वायदा है कि कहाँ भी रहेंगे, जहाँ भी हैं लेकिन सदा साथ हैं। ये ब्राह्मण जीवन, आदि से अन्त तक, बाप और बच्चों का अविनाशी साथ है। चाहे बच्चे साकार में हैं, और बापदादा आकार-निराकार हैं, लेकिन अलग हैं क्या? नहीं है ना!** तो दूर हो, या समीप हो? ये दिल की समीपता, साकार में भी समीपता अनुभव कराती है। **चाहे किसी भी देश में हैं, लेकिन दिल की समीपता, साथ का अनुभव कराती है। अलग हो नहीं सकते, असम्भव है। परमात्म वायदा कभी टल नहीं सकता।**

AV, Original 31.01.1998
आप बच्चों का भी वायदा है – 'साथ रहेंगे, साथ खायेंगे, साथ पियेंगे, साथ सोयेंगे, और साथ चलेंगे ..'। सोना भी अकेले नहीं है - अकेले सोते हैं, तो बुरे स्वप्न, वा बुरे ख्यालात स्वप्न में भी आते हैं। लेकिन बाप का इतना प्यार है, जो सदा कहते हैं - मेरे साथ सोओ, अकेले नहीं सोओ। **तो उठते हो तो भी साथ, सोते हो तो भी साथ, खाते हो तो भी साथ, चलते हो तो भी साथ।** अगर दफ्तर में जाते हो, बिजनेस करते हो, तो भी बिजनेस के आप ट्रस्टी हो, लेकिन मालिक बाप है। दफ्तर में जाते हो, तो आप जानते हो कि हमारा डायरेक्टर, बॉस, बापदादा है - यह निमित्त मात्र है - उनके डायरेक्शन से काम करते हैं। **कभी उदास हो जाते हो, तो बाप फ्रेंड बनकर बहलाते हैं - फ्रेंड भी बन जाता है। कभी प्रेम में रोते हो, आंसू आते हैं, तो बाप पोछने के लिए भी आते हैं** - और आपके आंसू, दिल के डिब्बी में, मोती समान समा देते हैं।

AV, Original 18.01.1998
जैसे बच्चों को बाप के बिना कुछ सूझता नहीं, ऐसे बाप को भी बच्चों के बिना और कुछ नहीं सूझता। अकेले नहीं रहते हैं, साथ में रहते हैं। साकार में तो साथ का अनुभव - साकार रूप में - थोड़े बच्चे कर सकते थे; अब तो अव्यक्त रूप में, हर बच्चे के साथ, जिस समय चाहे, जब चाहे, साथ निभाते रहते हैं। **जैसे चित्रों में दिखाते हैं ना - उन्होंने एक-एक गोपी के साथ कृष्ण को दिखा दिया, लेकिन यह इस समय का गायन है।** अब अव्यक्त रूप में, हर बच्चे के साथ, जब चाहे, चाहे रात को दो बजे, अढ़ाई बजे हैं, किसी भी टाइम साथ निभाते रहते हैं। साकार में तो सेन्टर्स पर चक्कर लगाना कभी-कभी होता, लेकिन अब अव्यक्त रूप में तो पवित्र प्रवृत्ति में भी चक्कर लगाते हैं। **बाप को काम ही क्या है, बच्चों को समान बना के, साथ ले जाना, यही तो काम है ना और क्या है? तो इसी में ही बिजी रहते हैं।**

फाइनल पेपर - final paper – Part 1

47] फाइनल पेपर परिस्थितियों के बीच होंगे - ऐसे समय पर, साक्षी दृष्टा की अवस्था होनी चाहिए; फाइनल रिजल्ट का पेपर कुछ सेकण्ड और मिनटों का ही होना है; चारों तरफ की हलचल के बीच, अचल रहना, यही फाइनल पेपर होना है; फाइनल नम्बर, प्रैक्टिकल पेपर पास करने के आधार पर ही होते हैं!

AV, Original 16.10.1969

फाइनल पेपर, अनेक प्रकार के भयानक, और न चाहते हुए भी अपने तरफ आकर्षित करने वाली, परिस्थितियों के बीच होंगे। उनकी भेंट में, जो आजकल की परिस्थितियाँ हैं वह कुछ नहीं है। जो अन्तिम परिस्थिति आने वाली है, उन परिस्थितियों के बीच पेपर होना है। इसकी तैयारी पहले से करनी है (हलचल के बीच, अचल रहना - साक्षी होकर देखना)। इसलिए जब अपने को देखो कि बहुत बिजी हूँ, बुद्धि बहुत स्थूल कार्य में बिजी है, **चारों ओर सरकमस्टान्सेज अपने तरफ खैंचने वाली हैं, तो ऐसे समय पर यह अभ्यास करो। तब मालूम पड़ेगा कहाँ तक हम ड्रिल कर सकते हैं।** यह भी बात बहुत आवश्यक है। इसी ड्रिल में रहते रहेंगे, तो सफलता को पायेंगे। एक-एक सबजेक्ट की नम्बर होती है। मुख्य तो यही है। इसमें अगर अच्छे हैं, तो नम्बर आगे ले सकते हैं। **अगर इस सबजेक्ट में नम्बर कम है, तो फाइनल नम्बर में आगे नहीं आ सकते।**

AV, Original 19.09.1972

अभी बहुत कड़े पेपर तो आने वाले हैं। पेपर को बहुत समय हो जाता है, तो पढ़ाई में अलबेलापन हो जाता है। फिर जब इम्तिहान के दिन नजदीक होते हैं, तो फिर अटेंशन देते हैं। तो यह अभी तो कुछ नहीं देखा। पहले के पेपर कुछ अलग हैं, लेकिन **अभी तो ऐसे पेपर्स आने वाले हैं, जो स्वप्न में, संकल्प में भी नहीं होगा।** प्रैक्टिस ऐसी होनी चाहिए, जैसे हद का ड्रामा साक्षी हो देखा जाता है। फिर चाहे दर्दनाक हो, वा हंसी का हो, दोनों पार्ट को साक्षी हो देखते हैं, अन्तर नहीं होता है क्योंकि ड्रामा समझते हैं। **तो ऐसी एकरस अवस्था होनी चाहिए। चाहे रमणीक पार्ट हो, चाहे कोई स्नेही आत्मा का गम्भीर पार्ट भी हो, तो भी साक्षी होकर देखो।** साक्षी दृष्टा की अवस्था होनी चाहिए।

AV, Original 15.07.1973

जब चाहें शरीर का आधार लें, और जब चाहें शरीर का आधार छोड़ कर, अपने अशरीरी स्वरूप में स्थित हों जायें, क्या ऐसे अनुभव चलते-फिरते करते रहते हो? **जैसे शरीर धारण किया, वैसे ही फिर शरीर से न्यारे हो जाना, इन दोनों का क्या एक ही अनुभव करते हो? यही अनुभव अन्तिम पेपर में फर्स्ट नम्बर लाने का आधार है।** जो लास्ट पेपर देने के लिए, अभी से तैयार हो गये हो - या हो रहे हो? जैसे विनाश करने वाले, एक इशारा मिलते ही, अपना कार्य सम्पन्न कर देंगे, अर्थात् विनाशकारी आत्मायें इतनी एवर-रेडी हैं कि एक सेकेण्ड के इशारे से, अपना कार्य अभी भी प्रारम्भ कर सकती हैं। **तो क्या विश्व का नव-निर्माण करने वाली, अर्थात् स्थापना के निमित्त बनी हुई आत्माएं ऐसे एवर-रेडी हैं?** अपनी स्थापना का कार्य ऐसे कर लिया है कि जिससे विनाशकारियों को इशारा मिले?

AV, Original 15.04.1974

फाइनल पेपर में आश्चर्यजनक बातें क्वेश्चन के रूप में आयेंगी, तब तो पास और फेल हो सकेंगे। न चाहते हुए भी, बुद्धि में क्वेश्चन उत्पन्न न हों, यही तो पेपर है। और है भी एक सेकेण्ड का ही पेपर।

AV, Original 01.09.1975

फाईनल पेपर में चारों ओर की हलचल होगी। एक तरफ वायुमण्डल व वातावरण की हलचल; दूसरी तरफ व्यक्तियों की हलचल; तीसरी तरफ सर्व सम्बन्धों में हलचल; और चौथी तरफ आवश्यक साधनों की अप्राप्ति की हलचल। ऐसे चारों तरफ की हलचल के बीच अचल रहना, यही फाइनल पेपर होना है।

AV, Original 13.09.1975

अब तो यह दूसरी-तीसरी चौपड़ी, या दूसरी-तीसरी क्लास के पेपर्स हैं। **फाइनल (अन्तिम) पेपर की रूप-रेखा तो इससे कई गुना भयानक रूप की होगी। फिर क्या करेंगे? कइयों का संकल्प चलता है - कौन-सा?** कई स्नेह और हुज्जत में कहते हैं कि इस दृश्य के पहले ही हमको बुलाना, हम भी वतन से देखेंगे। **लेकिन शक्ति स्वरूप का प्रैक्टिकल पार्ट, व शक्ति अवतार की प्रत्यक्षता का पार्ट, स्वयं द्वारा सर्वशक्तिवान् बाप को प्रत्यक्ष करने का पार्ट, ऐसी ही परिस्थिति में होना है।**

AV, Original 18.01.1977

डेट बताने की जरूरत ही नहीं। **कभी भी फाइनल (final) विनाश की डेट फिक्स (fix) नहीं हो सकती। अगर डेट फिक्स हो जाए तो सब सीट्स (seats) भी फिक्स हो जाएं, फिर तो 'पास विद् ऑनर्स' (pass with honours) की लम्बी लाइन हो जाए। इसलिए डेट से निश्चिन्त रहो।** जब सब निश्चिन्त होंगे, तो डेट आ ही जायेगी। जब सभी इस संकल्प से निरसंकल्प होंगे, वही डेट विनाश की होगी।

AV, Original 03.05.1977

प्रैक्टीकल पेपर पास करने के ही नम्बर बनते हैं। सदैव पेपर पर नम्बर मिलते हैं। पढ़ाई तो चलती रहती है, लेकिन नम्बर पेपर के आधार पर होते। अगर पेपर नहीं, तो नम्बर भी नहीं। **इसलिए श्रेष्ठ पुरुषार्थी पेपर को 'खेल' समझते हैं। खेल में कब घबराया नहीं जाता है। खेल तो मनोरंजन होता है। तो मनोरंजन में घबराया नहीं जाता है।** दिन प्रतिदिन बहुत कुछ आगे बढ़ने और बढ़ाने के दृश्य देखेंगे। छोटी सी गलती मुश्किल बना देती है। वह कौन सी गलती? सुनाया ना। **'मैं कैसे करूँ, मैं कर नहीं सकती, मैं चल नहीं सकती' - किसने कहा आप चलो? बाप ने तो कहा नहीं कि अपने आप चलो। साथी का साथ पकड़ कर चलो।**

AV, Original 16.03.1986

फाइनल रिजल्ट का पेपर कुछ सेकण्ड और मिनटों का ही होना है। लेकिन चारों ओर की हलचल के वातावरण में अचल रहने पर ही नम्बर मिलना है। अगर बहुतकाल हलचल की स्थिति से, अचल बनने में समय लगने का अभ्यास होगा, तो समाप्ति के समय क्या रिजल्ट होगी? **इसलिए यह रूहानी एक्सरसाइज (exercise) का अभ्यास करो। मन को जहाँ और जितना समय स्थित करना चाहो, उतना समय वहाँ स्थित कर सको।** फाइनल पेपर है बहुत ही सहज। और पहले से ही बता देते हैं कि यह पेपर आना है। लेकिन नम्बर, बहुत थोड़े समय में मिलना है। स्टेज भी पावरफुल हो।

AV, Original 31.12.1987

अब तो घर जाना है ना? (कब जाना है?) **समय कभी भी बता के नहीं आयेगा, अचानक ही आयेगा।** जब समझेंगे समीप है, तो नहीं आयेगा। जब समझने से थोड़े अलबेले होंगे, तो अचानक आयेगा। **आने की निशानी - अलबेलेपन वाले अलबेलेपन में आयेंगे - नहीं तो नम्बर कैसे बनेंगे? फिर तो सब कहें - हम भी अष्ट हैं, हम भी पास हैं। लेकिन थोड़ा बहुत अचानक होने से ही नम्बर होंगे।** बाकी जो महारथी हैं, उन्हों को टचिंग आयेगी। लेकिन बाप नहीं बतायेगा। टचिंग ऐसे ही आयेगी, जैसे बाप ने सुनाया। लेकिन **बाप कभी एनाउन्स नहीं करेंगे। एक सेकण्ड पहले भी नहीं कहेंगे कि एक सेकण्ड बाद होना है। यह भी नहीं कहेंगे।** नम्बरवार बनने हैं, इसलिए यह हिसाब रखा हुआ है।

फाइनल पेपर - final paper – Part 2

48] फाइनल पेपर में - हर समय निर्बन्धन - सर्विस के बन्धन से भी निर्बन्धन; प्रकृति के पेपर तो अभी और रफ्तार से आने वाले हैं; सेकण्ड में अपने को विदेही, अशरीरी, वा आत्म-अभिमानी बना लो, तो हलचल में अचल रह सकते हो!

AV, Original 20.12.1969
यह फाइनल पेपर का पहले ऐनाउन्स (announce) कर रहे हैं। हर समय निर्बन्धन - सर्विस के बन्धन से भी निर्बन्धन। एलान (announcement) निकले, और एवररेडी बन मैदान पर आ पहुँचा। यह फाइनल पेपर है, जो समय पर निकलेगा - प्रैक्टिकल में। इस पेपर में अगर पास हो गये, तो और कोई बड़ी बात नहीं। इस पेपर में पास होंगे अर्थात् अव्यक्त स्थिति होगी। शरीर के भान से भी परे हुए, तो बाकी क्या बड़ी बात है? इससे ही परखेंगे कि कहाँ तक अपने उस जीवन की नईया की रस्सियाँ छोडी हैं। **एक है सोने की जंजीर, दूसरी है लोहे की। लोहे की जंजीर तो छोडी, लेकिन अब सोने की भी महीन जंजीर है।** यह फिर ऐसी है, जो कोई को देखने में भी आ न सके।

AV, Original 03.09.1974
आगे चल कर, जब प्रकृति के प्रकोप (epidemic) होंगे और आपदाएं (calamities) आवेंगी, तब सबका पेट भरने के लिये कौन-सी चीज काम आयेगी? उस समय सबके अन्दर कौन-सी भूख होगी? अन्न की कमी या धन की? तब तो, शान्ति और सुख की भूख होगी। क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं के कारण, धन होते हुए भी, धन काम में नहीं आयेगा। साधन होते हुए भी, साधनों द्वारा प्राप्ति नहीं हो सकेगी। **जब सब स्थूल साधनों से, व स्थूल धन से, प्राप्ति की कोई आशा नहीं रहेगी, तब उस समय सबका संकल्प क्या होगा कि कोई शक्ति देवे, जो कि इन आपदाओं से पार हो सकें, और कोई हमें शान्ति देवे।** तो ऐसे-ऐसे लंगर बहुत लगने वाले हैं। उस समय पानी की एकादा बूंद भी कहीं दिखाई नहीं देगी। अनाज भी, प्राकृतिक आपदाओं के कारण, खाने योग्य नहीं होगा, तो फिर उस समय आप लोग क्या करेंगे? **जब ऐसी परीक्षायें आपके सामने आयें तो, उस समय आप क्या करेंगे? क्या ऐसी परीक्षाओं को सहन करने की इतनी हिम्मत है?** क्या उस समय योग लगेगा, या कि प्यास लगेगी? अगर कूएँ भी सूख जावेंगे, फिर क्या करेंगे?

AV, Original 03.09.1974 (continued)
क्या इतनी सहनशक्ति है? यह क्यों नहीं समझते - **जैसा कि गायन है कि 'चारों ओर आग लगी हुई थी, लेकिन भट्ठी में पडे हुए पूंगरे, ऐसे ही सेफ रहे, जो कि उनको सेक तक नहीं आया'।** आप इस निश्चय से क्यों नहीं कहते? अगर योग-युक्त हैं, तो भल नजदीक वाले स्थान पर नुकसान भी होगा, पानी आ जायेगा - लेकिन बाप द्वारा जो निमित्त बने हुए स्थान हैं, वह सेफ रह जावेंगे - **यदि अपनी गफलत नहीं है तो। अगर अभी तक कहीं भी नुकसान हुआ है, तो वह अपनी बुद्धि की जजमेन्ट की कमजोरी के कारण।** लेकिन अगर महारथी, विशाल बुद्धि वाले, और सर्वशक्तियों के वरदान प्राप्त करने वाले, **किसी भी स्थान में रहते हैं, तो वहाँ 'सूली से काँटा बन जाता है', अर्थात् वे सेफ रह जाते हैं।** कैसा भी समय हो, यदि शक्तियों का स्टॉक जमा होगा, तो शक्तियाँ आपकी प्रकृति को दासी जरूर बनावेंगी, अर्थात् साधन स्वत: जरूर प्राप्त होंगे।

AV, Original 08.02.1975

निश्चय की परीक्षा है कि जिन बातों को सम्भव समझते हो, वह असम्भव के रूप में पेपर बन के आयेंगी, फिर भी अचल रहोगे? …

घबराते तो नहीं हो? सामना करना पड़ेगा। पेपर का सामना अर्थात् आगे बढ़ना, अर्थात् सम्पूर्णता के अति समीप होना। अब यह पेपर आने वाला है। स्वयं स्पष्ट बुद्धि वाले होंगे, तो औरों को भी स्पष्ट कर सकेंगे। इसका मतलब यह तो नहीं समझते हो कि होना नहीं है। ड्रामा में जो होता रहा है, समय-प्रति-समय, उसमें माखन से बाल ही निकलता है न? कोई मुश्किल हुआ है? बापदादा नयनों पर बिठाये, दिल तख्त पर बिठाये, पार करते ले आ रहे हैं ना? **कोई क्या (भी हो) – (बाप-दादा) अन्त तक साथ निभाने का, या किसी भी परिस्थितियों से पार ले जाने का, वायदा व कार्य निभायेंगे।**

AV, Original 01.09.1975

किसी भी आधार द्वारा अधिकारीपन की स्टेज पर स्थित रहना - ऐसा पुरूषार्थ, फाइनल पेपर के समय, सफलता-मूर्त बनने नहीं देगा। वातावरण हो तब याद की यात्रा हो, परिस्थिति न हो तब स्थिति हो, अर्थात् **परिस्थिति के आधार पर स्थिति, व किसी भी प्रकार का साधन हो तब सफलता हो - ऐसा पुरूषार्थ फाइनल पेपर में फेल कर देगा।** इसलिए स्वयं को बाप समान बनाने की तीव्रगति करो।

AV, Original 27.10.1981

जहाँ आप प्रकृतिजीत ब्राह्मणों का पाँव होगा, स्थान होगा, वहाँ कोई भी नुकसान हो नहीं सकता। **एक दो मकान के आगे नुकसान होगा, लेकिन आप सेफ होंगे। सामने दिखाई देगा यह हो रहा है, तूफान आ रहा है, धरनी हिल रही है - लेकिन वहाँ सूली होगी, यहाँ काँटा होगा। वहाँ चिल्लाना होगा, यहाँ अचल होंगे। सब आपके तरफ स्थूल-सूक्ष्म सहारा लेने के लिए भागेंगे। आपका स्थान एसाइलम (asylum) बन जायेगा।** तब सबके मुख से, 'अहो प्रभु, आपकी लीला अपरमपार है', यह बोल निकलेंगे। 'धन्य हो, धन्य हो - आप लोगों ने पाया, हमने नहीं जाना, गंवाया'। यह आवाज चारों ओर से आयेगा। फिर आप क्या करेंगे? **विधाता के बच्चे, विधाता और वरदाता बनेंगे। लेकिन इसमें भी एसाइलम (asylum) देने वाले भी स्वत: ही नम्बरवार होंगे।**

AV, Original 24.02.1985

जो गायन भी है - 'दाल-रोटी खाओ भगवान के गीत गाओ' - ऐसे गायन की हुई दाल-रोटी खा रहे हो। और ब्राह्मण बच्चों को बापदादा की गैरन्टी है - ब्राह्मण बच्चा दाल-रोटी से वंचित हो नहीं सकता। आसक्ति वाला खाना नहीं मिलेगा, लेकिन दाल-रोटी जरूर मिलेगी।

AV, Original 16.03.1986

प्रकृति भी, माया भी, सब लास्ट दाँव लगाने लिए अपने तरफ कितना भी खींचे, लेकिन आप न्यारे, और बाप के प्यारे बनने की स्थिति में लवलीन रहो। इसको कहा जाता - देखते हुए न देखो, सुनते हुए न सुनो। ऐसा अभ्यास हो। इसी को ही 'स्वीट साइलेन्स' स्वरूप की स्थिति कहा जाता है। फिर भी बापदादा समय दे रहा है। अगर कोई भी कमी है, तो अब भी भर सकते हो। **क्योंकि बहुतकाल का हिसाब सुनाया। तो अभी थोड़ा चांस है। इसलिए इस प्रैक्टिस की तरफ फुल अटेन्शन रखो।**

AV, Original 25.10.1987

प्रकृति के पेपर तो अभी और रफ्तार से आने वाले हैं। इसलिए, पहले से ही, पदार्थों के विशेष आधार - खाना, पीना, पहनना, चलना, रहना और सम्पर्क में आना - इन सबकी चेकिंग करो कि कोई भी बात, महीन रूप में भी, विघ्न-रूप तो नहीं बनती? यह अभी से ट्रायल करो। जिस समय पेपर आयेगा, उस समय ट्रायल नहीं करना, नहीं तो फेल होने की मार्जिन है।

AV, Original 13.02.1999

चारों ओर हलचल है, प्रकृति के सभी तत्त्व खूब हलचल मचा रहे हैं, एक तरफ भी हलचल से मुक्त नहीं हैं, व्यक्तियों की भी हलचल है, प्रकृति की भी हलचल है - **ऐसे समय पर जब इस सृष्टि पर चारों ओर हलचल है, तो आप क्या करेंगे? सेफ्टी का साधन कौन-सा है? सेकण्ड में अपने को विदेही, अशरीरी वा आत्म-अभिमानी बना लो, तो हलचल में अचल रह सकते हो।** इसमें टाइम तो नहीं लगेगा? क्या होगा? **अभी ट्रायल करो - एक सेकण्ड में मन-बुद्धि को जहाँ चाहो, वहाँ स्थित कर सकते हो? (ड्रिल) इसको कहा जाता है - 'साधना'।**

AV, Original 30.11.2009

बापदादा इशारा दे रहे हैं, हर सेकण्ड, हर संकल्प चेक करो। मानो अपना तीव्र पुरूषार्थ न कर, एक घण्टा साधारण पुरूषार्थ में रहे, तो एक घण्टे में अचानक अगर फाइनल पेपर का टाइम आ गया - तो अन्त मते सो गति - वह एक घण्टे का साधारण पुरूषार्थ कितना नुकसान कर देगा! इसलिए बापदादा हर बच्चे को, हर संकल्प, हर सेकण्ड समय के महत्व को, समय प्रति समय इशारा दे रहे हैं। हलचल के समय अचल रहने का पुरूषार्थ, तीव्र पुरूषार्थी ही कर सकता। **साधारण पुरूषार्थी एवररेडी बनने में समय लगा देगा, और बापदादा ने कहा है कि सेकण्ड में बिन्दी - अर्थात् फुलस्टॉप!**

SM, Revised 20.04.2017

अभी नाटक पूरा होता है, जो भी एक्टर्स हैं सब चले जायेंगे, **बाकी थोड़े रहेंगे। 'राम गयो, रावण गयो ..', बाकी बचेंगे कौन? दोनों तरफ के थोड़े-थोड़े ही बचेंगे, बाकी सब वापिस चले जायेंगे।** फिर मकान आदि बनाने वाले, सफाई करने वाले भी बचते हैं। समय चाहिए ना। हम भी चले जायेंगे। **तुमको राजाई में जन्म मिलेगा। वो फिर सफाई करते हैं। बाबा ने कहा है, जहाँ जीत वहाँ जन्म।** भारत में ही जीत होगी। बाकी वह सब खलास हो जायेंगे। **राजायें आदि जो धनवान होंगे, वह बचेंगे, जिनके पास तुम जन्म लेंगे। सारी सृष्टि का फिर तुमको मालिक बनना है।**

(साक्षात्कार) 'जो आदि, सो अन्त' – Part 2

49] शुरू में बहुतों को साक्षात्कार होते थे; जैसे एक साकार ब्रह्मा बाप का, आदि में अनुभव किया, वैसे अन्त में, अभी सबका साक्षात्कार होगा; जो आदि में, वह अन्त में विस्तार के रूप में होना है; समाप्ति के समय भी, बाप के साथ-साथ, अनन्य बच्चे भी देव रूप में साक्षात अनुभव होंगे!

SM, Original 29.06.1968 (Page 2)

आगे चल, तुम बच्चों को सब साक्षात्कार होना है - कैसे वहाँ के रस्म-रिवाज़ हैं। यह सभी बातें नई दुनिया के लिए बाप बैठ समझाते हैं। बाप ही नई दुनिया की स्थापना करने वाला है। रस्म-रिवाज़ भी जरूर सुनाते होंगे। आगे चलकर बहुत सुनावेंगे और साक्षात्कार भी होता रहेगा - बच्चे-बच्ची कैसे पैदा होते हैं। कोई नई बात नहीं। तुम तो ऐसी जगह जाते हो, जहाँ कल्प-कल्प जाना ही पड़ता है। वैकुण्ठ तो अभी नजदीक आ गया ना? **अभी बिल्कुल ही नजदीक ही आकर पहुँचे हो! हरेक चीज़ तुमको नजदीक ही देखने में आवेंगे - जितना तुम योग में मज़बूत हो जावेंगे।** अनेक बार तुमने पार्ट बजाया है। अभी तुमको समझ मिलती है - जो ही तुम साथ ले जावेंगे। वहाँ के रस्म-रिवाज़ बाप को समझानी तो यहाँ ही है ना। सीखना यहाँ ही होता है। सभी को साक्षात्कार होगा - वहाँ की क्या रस्म-रिवाज़ होगी। सभी जान जावेंगे। **शुरू में तुमको साक्षात्कार हुआ था - कैसे शादी होगी, कैसे बच्चा पैदा होंगे - सभी साक्षात्कार होता था ना? उस समय तो अजन तुम अलफ-बे पढ़ते थे। फिर लास्ट नम्बर में भी तुमको साक्षात्कार होनी चाहिए।** सो तो बाप बैठ सुनाते हैं। वह सभी देखने की चाहना तुमको यहाँ ही होगी। समझेंगे कहाँ शरीर जल्दी न छूट जाये - सभी कुछ देखकर जावें। इसमें आयु बढ़ाने लिए चाहिए योगबल - जो बाप से हम सभी कुछ सुने, सभी कुछ देखें!

SM, Original 16.04.1968 (Page 2)

गायन है ना, 'राम गयो, रावण गयो ..' - परन्तु रहते तो दोनों ही हैं ना? रावण सम्प्रदाय जाते हैं - तो फिर लौट नहीं आते हैं। बाकी यह (राम सम्प्रदाय) बच जाते हैं। यह भी तुमको आगे चल कर साक्षात्कार होना है। यह जानना है नई दुनिया की कैसे स्थापना होती है। पिछाड़ी में क्या होगा? फिर सिर्फ हमारा ही धर्म रह जावेगा। सतयुग में तुम राज्य करेंगे। कलियुग खत्म हो जावेगा। फिर सतयुग को आना है। अभी राम सम्प्रदाय, और रावण सम्प्रदाय, दोनों ही हैं। संगमयुग पर ही यह सभी होते हैं। अभी तुम सभी को जानते हो। बाप कहते हैं - बाकी जो कुछ राज़ है, वह आगे चल कर धीरे-धीरे समझाते रहेंगे। बाप कहते हैं - मैं भी तो हूँ ना। जो रिकॉर्ड में नूँध है, वह खुलती जावेगी, तुम समझते जावेंगे। इन एडवान्स (in advance) कुछ नहीं बतावेंगे। तुम देवताएं बनते हो, तो आसुरी सृष्टि का ज़रूर विनाश होगा। विनाश भी होने का है। कब होगा, यह बाबा नहीं बतावेंगे। उनको मालूम हो, तो बतावें। बाबा को यह ज्ञान नहीं कि विनाश कैसे होगा! यह तो ड्रामा का प्लैन है। रिकॉर्ड खुलता जाता है।

AV, Original 22.11.1972

जैसे साकार में, आकार का अनुभव करते थे ना? फर्श (साकार) में रहते भी, फरिश्ते का अनुभव करते थे। ऐसी स्टेज तो आनी है ना। **शुरू-शुरू में बहुतों को यह साक्षात्कार होते थे। लाइट ही लाइट दिखाई देती थी। अपने लाइट के क्राउन के भी अनेक बार साक्षात्कार करते थे। जो आदि में सैम्पल था, वह अंत में प्रैक्टिकल स्वरूप होगा।** संकल्प की सिद्धि का साक्षात्कार होगा।

AV, Original 10.12.1978

जैसे शुरू में चलते-फिरते देखते रहते थे। यह ध्यान में जाकर देखने की बात नहीं। **जैसे एक साकार बाप का आदि में अनुभव किया, वैसे अन्त में अभी सबका साक्षात्कार होगा।** यह साधारण रूप गायब हो जावेगा, फरिश्ता रूप, या पूज्य रूप देखेंगे। **जैसे शुरू में आकारी ब्रह्मा और श्रीकृष्ण का साथ-साथ साक्षात्कार होता था। वैसे अभी भी यह साधारण रूप देखते हुए भी, दिखाई न दे। आपके पूज्य देवी या देवता रूप, या फरिश्ता रूप देखें।** लेकिन यह तब होगा, जब आप सबका पुरूषार्थ, देखते हुए न देखने का हो - तब ही अनेक आत्माओं को भी आप महान आत्माओं का यह साधारण रूप, देखते हुए भी नहीं दिखाई देगा।

AV, Original 19.11.1979

जैसे स्थापना के शुरू में एक दिन भी कोई सत्संग में आ जाते थे, तो पहले दिन ही, कुछ-न-कुछ अनुभव करके जाते थे। जो आदि में वह अन्त में विस्तार के रूप में होना है। ऐसा कुछ वातावरण बनाओ। वह तब होगा जब आप सभी निरन्तर इस स्थिति में स्थित रहेंगे। **फिर सूर्य की किरणों के मुआफिक सब अनुभव करेंगे। सबकी नज़र जायेगी कि यह कहाँ से किरणें आ रही हैं। ऐसा अभी पुरूषार्थ करना।**

AV, Original 31.12.1982

जैसे स्थापना के आदि में स्वप्न और साक्षात्कार की लीला विशेष रही, ऐसे अन्त में भी यही विचित्र लीला, प्रत्यक्षता करने के निमित्त बनेंगी। चारों ओर से 'यही है, यही है', यही आवाज गूजेंगी और यह आवाज अनेकों के भाग्य की श्रेष्ठता के निमित्त होगा। एक से, अनेक दीपक जग जायेंगे।

AV, Original 06.03.1985

जैसे शुरू में घर बैठे आवाज़ आया, बुलावा हुआ कि 'आओ, पहुँचो, अभी निकलो' - और फौरन निकल पड़े। ऐसे ही अन्त में भी बाप का आवाज़ पहुँचेगा। जैसे साकार में सभी बच्चों को बुलाया, ऐसे आकार रूप में सभी बच्चों को - 'आओ-आओ' का आह्वान करेंगे। सब आना, और साथ जाना। **ऐसे सदा अपनी बुद्धि क्लीयर हो - और कहाँ अटेन्शन गया, तो बाप का आवाज़, बाप का आह्वान, मिस हो जायेगा।** यह सब होना ही है।

AV, Original 13.11.1997

जैसे आदि में ब्रह्मा बाप को साधारण न देख, कृष्ण के रूप में अनुभव करते थे। साक्षात्कार अलग चीज़ है, लेकिन साक्षात स्वरूप में कृष्ण ही देखते, खाते-पीते चलते थे। ऐसा है ना? **तो स्थापना में एक बाप ने किया, अन्त में आप बच्चे भी आत्माओं के आगे साक्षात देवी-देवता दिखाई देंगे।** वह समझेंगे ही नहीं कि यह कोई साधारण हैं। वही पूज्यपन का प्रभाव अनुभव करेंगे, तब बाप सहित, आप सभी के प्रत्यक्षता का पर्दा खुलेगा। अभी अकेले बाप को नहीं करना है। बच्चों के साथ प्रत्यक्ष होना है। **जैसे स्थापना में ब्रह्मा के साथ, विशेष ब्राह्मण भी स्थापना के निमित्त बनें, ऐसे समाप्ति के समय भी, बाप के साथ-साथ, अनन्य बच्चे भी देव रूप में साक्षात अनुभव होंगे।**

(साक्षात्कार) ‘जो आदि, सो अन्त’ – Part 3

50] अन्तिम लक्ष्य है - अव्यक्त फरिश्ता हो रहना; जैसे आदि में अनेक आत्माओं को साक्षात्कार हुए - वैसे अन्त में भी, उन्हों को, बच्चों का फरिश्ता-सो-देवता रूप का साक्षात्कार होगा; निश्चय और नशा हर परिस्थिति में विजयी बना देता है; आपका चेहरा, आपकी चलन, बाप का साक्षात्कार कराये - ये सेवा नम्बरवन है!

SM, Original 29.06.1968 (Page 4)
शुरू में कितने साक्षात्कार होते थे - बच्चियाँ बैठी-बैठी चली जाती थी। बाबा ने खास बच्चों का स्कूल बनाया था। अभी फिर ख्याल होता है, बच्चों का क्लास बनावें। वहाँ छोटे-छोटे बच्चे थे। अभी तो बड़े बच्चों का बनावें। ऐसे तो नहीं होगा, फिर ध्यान में चले जावेंगे! यह तो बड़ी कुमारियाँ आदि हैं। पता नहीं क्या पार्ट चलेगा! उस समय तुम्हारा भी नामाचार हो जावेगा ना। शुरू में तुमने बहुत ही खेल पाल देखे हैं। कहेंगे ‘जो हमने देखा है, सो तुमने नहीं देखा’। **अभी भी बाप कहते हैं - जिन्होंने देखा वह तो चले गये - अभी फिर जो तुम देखेंगे, यह फिर वह नहीं देखेंगे। पिछाड़ी में बाप बहुत ही साक्षात्कार करावेंगे।** नजदीक होते जावेंगे ना। ‘मिरुवा मौत, मलूका शिकार’ (‘Death for the prey, and victory for the hunter’)। **तुम मलूक बन जाते हो। प्रैक्टिकल नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार मलूक बन जाते हो - जो फिर साक्षात्कार करते हो। पिछाड़ी में कैसे अवस्था रहती है - बिल्कुल निश्चय बुद्धि। भल कुछ भी हो जाये, जरा भी घबरायेंगे नहीं! ऐसी अवस्था आने वाली है - इसलिए अच्छी रीति समझते जाओ।**

AV, Original 20.12.1969
जैसे शुरू में एलान (announcement) निकला कि सभी को इस घड़ी मैदान में आना है, वैसे अब भी रिपीट (repeat) जरूर होना है - लेकिन भिन्न-भिन्न रूप में। ऐसे नहीं कि बापदादा भविष्य को जानकर के आप सभी को एलान देवे - और आप इस सर्विस के बन्धन में भी अपने को बांधे हुए रखो! बन्धन होते हुए भी, बन्धन में नहीं रहना है। कोई भी आत्मा के बन्धन में आना, यह निर्बन्धन की निशानी नहीं है। इसलिए सभी को एक बात, ‘पास विद आनर्स’ की, पास करनी है - जो बातें आपके ध्यान में भी नहीं होंगी, स्वप्न में भी नहीं होंगी, उन बातों का एलान निकलना है। और ऐसे पेपर में जो पास होंगे, वही ‘पास विद आनर्स’ होंगे। **इसलिये पहले से ही सुना रहे हैं। पहले से ही ईशारा मिल रहा है।**

AV, Original 21.01.1972
जैसे शुरू में ब्रह्मा में - सम्पूर्ण स्वरूप, और श्रीकृष्ण का - दोनों साथ-साथ साक्षात्कार करते थे, ऐसे अब उन्हों को तुम्हारे डभले (double) रूप का साक्षात्कार होगा। जैसे-जैसे नंबरवार इस न्यारी स्टेज पर आते जायेंगे, तो आप लोगों के भी यह डभले (फरिश्ता-सो-देवता) साक्षात्कार होंगे। अभी यह पूरी प्रैक्टिस हो जाए, तो यहाँ-वहाँ से यही समाचार आने शुरू हो जायेंगे। **जैसे शुरू में, घर बैठे भी, अनेक समीप आने वाली आत्माओं को साक्षात्कार हुए ना? वैसे अब भी साक्षात्कार होंगे।** यहाँ बैठे भी, बेहद में आप लोगों का सूक्ष्म स्वरूप सर्विस करेगा। अब यही सर्विस रही हुई है।

AV, Original 14.07.1972
जैसे शुरू-शुरू में जोश था कि जिन्होंने हमको गिराया है, उन्हों को ही संदेश देना है। बीच में प्रजा के विस्तार में चले गये। लेकिन जो आदि में था, वह अंत में भी आना है।

AV, Original 04.08.1972
आप लोग क्या कहते हैं कि हमने विश्व-कल्याण का संकल्प उठाया है - लोग आपको क्या कहते हैं? **तो कल्याण का इतना बड़ा कार्य, आपकी ऐसी स्पीड से होगा?** विश्व-कल्याण का कार्य, अब तक तो बहुत थोड़ा किया है। विश्व तक कैसे पहुंचावेंगे? अभी प्रैक्टिकल नहीं है ना। फिर **चारों ओर, जहाँ-जहाँ से, मास्टर बुद्धिवानों की बुद्धि बन, सूक्ष्म मशीनरी द्वारा, सभी की बुद्धियों को टच करेंगे, तो आवाज फैलेगा कि कोई शक्ति, कोई रूहानियत अपने तरफ आकर्षित कर रही है। ढूंढेंगे मिलने लिए, वा एक सेकेण्ड सिर्फ दर्शन करने लिये तड़पेंगे - जिसकी निशानी जड़ चित्रों की अब तक चलती आती है। जब कोई ऐसा उत्सव होता है, जड़ मूर्तियों का, तो कितनी भीड़ लग जाती है!** कितने भक्त उस दिन उस घड़ी दर्शन करने लिये तड़पते हैं, वा तरसते हैं। अनेक बार दर्शन करते हुए भी उस दिन के महत्व को पूरा करने लिये, बेचारे कितने कठिन प्रयत्न करते हैं! **यह निशानी किसकी है? प्रैक्टिकल होने से ही तो यह यादगार निशानियां बनी हैं!**

AV, Original 15.09.1974
जैसे शुरू-शुरू में देह-अभिमान को मिटाने का पुरूषार्थ रखा कि ‘मैं चतुर्भुज हूँ’। इससे स्त्री-भान, कमजोरी, कायरता आदि सब निकल गई, और आप निर्भय और शक्तिशाली बन गये। तो **जैसे आदि में देह-अभिमान मिटाने के लिये, कि ‘मैं चतुर्भुज हूँ’, यह प्रैक्टिकल पुरूषार्थ चला ना? चलते-फिरते, व बात करते, यह नशा रहता था कि ‘मैं नारी नहीं हूँ, मैं चतुर्भुज हूँ’ - तो ये दोनों संस्कार और वह दोनों शक्तियाँ मिल गई, जैसे कि ये दोनों कार्य हम कर सकते हैं, तो वैसे ही अन्तिम लक्ष्य कौन-सा स्मृति में रहे, जिससे कि ऑटोमेटिकली वह लक्षण आ जाएं? वह अन्तिम लक्ष्य पुरूषार्थ के लिये कौन-सा है? वह है - अव्यक्त फरिश्ता हो रहना। अव्यक्त-रूप क्या है? फरिश्ता-पन।**

AV, Original 11.10.1975
जैसे शुरू में घर बैठे ब्रह्मा रूप का साक्षात्कार होता था - जैसे कि प्रैक्टिकल कोई बोल रहा है, इशारा कर रहा है - ऐसे ही अन्त में भी निमित्त बनी हुई शक्ति सेना का अनुभव होगा। **सभी महारथियों का संकल्प है कि अब कुछ नया होना चाहिए, तो ऐसी-ऐसी नई रंगत अब होती जायेंगी। लेकिन इसमें एक तो बहुत हल्कापन चाहिये, किसी भी प्रकार का बुद्धि पर बोझ न हो, और दूसरी सारी दिनचर्या बाप समान हो, तब ब्रह्मा बाप समान आदि से अन्त के दृश्य का अनुभव कर सकते हो। समझा?**

AV, Original 11.01.1977 (21.01.1977?)
जैसे शुरू में बाप से पवित्रता की प्रतिज्ञा की कि मरेंगे, मिटेंगे, सहन करेंगे, मार खायेंगे, घर छोड़ देंगे, लेकिन पवित्रता की प्रतिज्ञा सदा कायम रखेंगे - ऐसी शेरनियों के संगठन ने स्थापना के कार्य में निमित्त बन करके दिखाया, कुछ सोचा नहीं, कुछ देखा नहीं - करके दिखाया, वैसे ही अब ऐसा ग्रुप चाहिए। जो लक्ष्य रखा उस लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए सहन करेंगे, त्याग करेंगे, बुरा-भला सुनेंगे, परीक्षाओं को पास करेंगे - लेकिन लक्ष्य को प्राप्त करके ही छोड़ेंगे। **ऐसे ग्रुप सैम्पल (sample) बनें तब उनको और भी फॉलो (follow) करें। जो आदि में सो अन्त में।** ऐसे मैदान में आने वाले, जो निन्दा, स्तुति, मान-अपमान, सभी को पार करने वाले हों - ऐसा ग्रुप चाहिए।

AV, Original 03.12.1979

जैसे शुरू में भी दूर बैठे हुए ब्रह्मा बाप के स्वरूप को स्पष्ट देखते, इशारा मिलता था कि इस स्थान पर पहुँचो। ऐसे ही अन्त में, आप सब विशेष विश्व-कल्याणकारी आत्माओं का ऐसा ही विचित्र पार्ट चलना है। इसके लिए आत्मा को सर्व बन्धनों से मुक्त, स्वतन्त्र होना चाहिए। जो जब चाहें, जहाँ चाहें, जो शक्ति चाहें, उससे कार्य कर सकें।

AV, Original 20.02.1986

जैसे कोई भी ड्रामा जब समाप्त होता है, तो अन्त में सभी एक्टर्स स्टेज पर सामने आते हैं। तो अभी कल्प का ड्रामा समाप्त होने का समय आ रहा है। **सारी विश्व की आत्माओं को - चाहे स्वप्न में, चाहे एक सेकण्ड की झलक में, चाहे प्रत्यक्षता के चारों ओर के आवाज द्वारा - यह जरूर साक्षात्कार होना है कि इस ड्रामा के हीरो पार्टधारी स्टेज पर प्रत्यक्ष हो गये। धरती के सितारे, धरती पर प्रत्यक्ष हो गये। सब अपने-अपने इष्ट देव को प्राप्त कर, बहुत खुश होंगे। सहारा मिलेगा।**

AV, Original 25.10.1987

जैसे स्थापना के आरम्भ में आसक्ति है वा नहीं, उसकी ट्रायल के लिए बीच-बीच में जानबूझकर प्रोग्राम रखते रहे। **जैसे, 15 दिन सिर्फ डोढ़ा और छाछ खिलाई, गेहूँ होते भी यह ट्रायल कराई गई। कैसे भी बीमार 15 दिन इसी भोजन पर चले। कोई भी बीमार नहीं हुआ। दमा (asthma) की तकलीफ वाले भी ठीक हो गये ना।** नशा था कि बापदादा ने प्रोग्राम दिया है! जब भक्ति में कहते हैं 'विष भी अमृत हो गया', यह तो छाछ थी! निश्चय और नशा हर परिस्थिति में विजयी बना देता है। **तो ऐसे पेपर भी आयेंगे - सूखी रोटी भी खानी पड़ेगी। अभी तो साधन हैं। कहेंगे – 'दांत नहीं चलते, हजम नहीं होता'। लेकिन उस समय क्या करेंगे? जब निश्चय, नशा, योग की सिद्धि की शक्ति होती है, तो सूखी रोटी भी नर्म रोटी का काम करेगी, परेशान नहीं करेगी।**

AV, Original 25.11.1995

आजकल के हिसाब से, प्रत्यक्षता के हिसाब से, **अभी सेवा आपके पास आयेगी - शुरू में स्थापना की बात दूसरी थी, लेकिन अभी आप सेवा के पिछाड़ी नहीं जायेंगे। आपके पास सेवा खुद चलकर आयेगी।** तो जो सच्चा सेवाधारी है उस सेवाधारी को, चलो और कोई सेवा नहीं मिली, लेकिन बापदादा कहते हैं - अपने चेहरे से, अपने चलन से सेवा करो। **आपका चेहरा बाप का साक्षात्कार कराये। आपका चेहरा, आपकी चलन, बाप की याद दिलावे। ये सेवा नम्बरवन है।**

बाबा मिलन

54] साकार वा अव्यक्त मिलन, अल्पकाल के मिलन हैं; सदाकाल के मिलन अनुभव करने के लिए, अव्यक्त स्थिति में स्थित रहने की जरूरी है - जो अव्यक्त बन, अव्यक्त बाप से, जब चाहें, जितना चाहें, निरंतर अव्यक्त मिलन मना सकें - ऐसे अनुभव करेंगे, जैसे बिल्कुल समीप, सम्मुख मिलन मना रहे हैं!

AV, Original 24.12.1972
यह अव्यक्त रूप का मिलन, व्यक्त द्वारा, भी कब तक? इसलिये इस नये वर्ष में अव्यक्त स्थिति में स्थित कराने की, वा अनुभव कराने की ड्रिल सिखला रहे हैं, जो अव्यक्त बन, अव्यक्त बाप से, अव्यक्त मिलन मना सकें। कोई भी पार्ट सदा एक जैसे नहीं चलता, बदलता है - आगे बढ़ाने लिए। तो अब बापदादा विशेष व्यक्त रूप में, अव्यक्त मुलाकात करने का सहज वरदान दे रहे हैं। ... **इसलिये अब, व्यक्त द्वारा, अव्यक्त मिलन भी समाप्त होता जावेगा। फिर क्या करेंगे? मिलन नहीं मनावेंगे? अल्पकाल के मिलन के बजाय, सदाकाल के मिलन के अनुभवी बन जायेंगे। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे बिल्कुल समीप, सम्मुख मिलन मना रहे हैं। समझा?**

AV, Original 13.06.1973
ब्राह्मण जन्म की विशेषता क्या है - जो और कोई जन्म में नहीं होती? **ब्राह्मण जन्म कि विशेषता यह है कि अन्य सर्व जन्म, आत्माओं द्वारा आत्माओं के होते हैं, लेकिन एक ही यह ब्राह्मण जन्म है, जो परमपिता परमात्मा द्वारा डायरेक्ट जन्म होता है। देवता जन्म भी श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा ही होता है - परमात्मा द्वारा नहीं।** तो ब्राह्मण जन्म की विशेषता - जो सारे कल्प के अन्य कोई जन्म में नहीं है।

AV, Original 21.07.1973
जब तक बाप की सम्पूर्ण प्रत्यक्षता नहीं हो जाती, तब तक बच्चों और बाप का मिलन तो होना ही है। लेकिन **चाहे 'व्यक्त द्वारा अव्यक्त मिलन', और चाहे 'अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्त मिलन' - लेकिन मिलन तो अन्त तक है ना?** इसलिये ऐसा समय आने वाला है कि जिसमें **'अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्त मिलन' का अनुभव न होगा - तो बाप के मिलन का, प्राप्ति का, और सर्वशक्तियों के वरदान का, जो सुन्दर मिलन का अनुभव है, उससे वंचित रह जायेंगे।** इसलिये यह दोनों मिलन अभी तक तो साथ-साथ चल रहे हैं - लेकिन लास्ट स्टेज क्या है? लास्ट स्टेज की तैयारी कराने के लिये, बाप को ही समय देना पड़ता है, और सिखलाना पड़ता है। अभी समझा क्या होने वाला है? अभी इतने हलचल में नहीं आओ। जब होने वाला होगा तो **अव्यक्त स्थिति में स्थित रहने वालों को स्वयं ही आवाज़ आयेगा, टचिंग होगी, सूक्ष्म संकल्प होगा, तार पहुंचेगी या ट्रंक-काल होगा। समझा? जब लाइन क्लियर होगी, तभी तो पकड़ सकेंगे! जब अव्यक्त मिलन का अनुभव होगा, तब तो पहचानेंगे व पहुंचेंगे।** इसके बीच-बीच में यह चान्स दे, अभ्यास कराते हैं। बाकी घबराने की कोई बात नहीं। समझा?

AV, Original 28.11.1979
बाप तो एक सेकेण्ड में आप को उड़ाकर वतन में ले जावेंगे, **बाप (निराकार) वतन से आकार में आते हैं, आप साकार से आकार में आओ। मिलने के स्थान पर तो पहुंचो। स्थान भी तो ऐसा बढ़िया चाहिए ना! सूक्ष्म वतन, आकारी वतन, मिलने का स्थान है। समय भी फिक्स (fix) है, अपॉइंटमेंट (appointment) भी है, स्थान भी फिक्स है, फिर क्यों नहीं**

मिलन होता? सिर्फ गलती क्या करते हो कि मिट्टी के साथ वहाँ आना चाहते हो। यह देह मिट्टी है। जब मिट्टी का काम करना है, तब करो। लेकिन **मिलने के समय इस देह के भान को छोड़ना पड़े। जो बाप की ड्रेस, वह आप की ड्रेस होनी चाहिए। समान होना चाहिए ना!** जैसे बाप निराकार से आकारी वस्त्र धारण करते हैं - आकारी और निराकारी, 'बाप-दादा' बन जाते हैं - आप भी आकारी फरिश्ता ड्रेस पहन कर आओ। **चमकीली ड्रेस पहन कर आओ, तब मिलन होगा।**
…
एक पुरानी ड्रेस वाला और एक चमकीली ड्रेस वाला, जोड़ी मिल नहीं सकती - इसलिए अनुभव नहीं होता। पुराने वायब्रेशन्स इन्टरफियर (interfere) कर देते हैं - इसलिए आपसी रूह-रूहान का रेसपान्स नहीं मिलता है। क्लीयर समझ में नहीं आता - इसलिए औरों का अल्पकाल का सहारा लेना पड़ता है।

AV, Original 13.03.1981
मधुबन में साकार ब्रह्मा की अनुभूति करते हो ना? कमरे में जा करके रूह-रूहान करते हो ना? चित्र दिखाई देता है, या चैतन्य दिखाई देता है? **अनुभव होता है, तब तो जिगर से कहते हो - 'ब्रह्मा बाबा'!** आप सबका ब्रह्मा बाबा है, या पहले वाले बच्चों का ब्रह्मा बाबा है? अनुभव से कहते हो, वा नालेज के आधार से कहते हो? अनुभव है? **जैसे अव्यक्त ब्रह्मा बाप, साकार रूप की पालना दे रहे हैं, साकार रूप की पालना का अनुभव करा रहे हैं - वैसे आप, व्यक्त में रहते, अव्यक्त फरिश्ते रूप का अनुभव करो।**

AV, Original 06.01.1983
जैसे साकार में याद है ना, हर ग्रुप को विशेष स्नेह के स्वरूप में, अपने हाथों से खिलाते थे, और बहलाते थे। **वही स्नेह का संस्कार अब भी प्रैक्टिकल में चल रहा है। इसमें सिर्फ बच्चों को, बाप समान, आकारी स्वरूपधारी बन, अनुभव करना पड़े।**

AV, Original 24.02.1983
दिन रात यही संकल्प रहता है कि मिलन मनाना है। आकार रूप में भी मिलन मनाते, फिर भी साकार रूप द्वारा मिलने की शुभ आशा सदा ही रहती है – सब, दिन गिनती करते रहते कि आज हमको मिलना है, यह संकल्प हर बच्चे का बापदादा के पास पहुँचता रहता है - और बापदादा भी यही रेसपान्ड देने के लिए, हर बच्चे को याद करते रहते हैं। इसलिए **आज मुरली चलाने नहीं, लेकिन मिलने का संकल्प पूरा करने के लिये आये हैं। कोई-कोई बच्चे, दिल ही दिल में, मीठे-मीठे उल्हनें भी देते हैं कि हमें तो बोल द्वारा मुलाकात नहीं कराई। बापदादा भी हरेक बच्चे से, दिल भर-भर के मिलने चाहते हैं।** लेकिन समय और माध्यम को देखना पड़ता है। **आकारी रूप से एक ही समय पर, जितने चाहें, जितना समय चाहें, उतना समय और उतने सब मिल सकते हैं।** उसके लिए टर्न आने की बात नहीं है। लेकिन जब साकार सृष्टि में, साकार तन द्वारा मिलन होता है, तो साकारी दुनिया और साकार शरीर के हिसाब को देखना पड़ता है। आकारी वतन मे कभी दिन मुकरर होता है क्या - कि फलाना ग्रुप फलाने दिन मिलेगा - वा एक घण्टे के बाद, आधा घण्टे के बाद मिलने के लिए आना! **यह बन्धन, आपके वा बाप के, सूक्ष्म वतन में, सूक्ष्म शरीर में नहीं है। आकारी रूप से मिलन मनाने के अनुभवी हो ना। वहाँ तो भल सारा दिन बैठ जाओ, कोई उठाएगा नहीं। यहाँ तो कहेंगे - अभी पीछे जाओ, अभी आगे जाओ। फिर भी दोनों मिलन मीठा है।**

AV, Original 03.05.1984
साकार स्वरूप में, साकारी सृष्टि पर, आत्मा और परमात्मा के मिलन, और सर्व सम्बन्ध के प्रीति की रीति का अनुभव, परमात्म अविनाशी खज़ानों का अधिकार, साकार स्वरूप से, ब्राह्मणों का ही यह गीत है - **'हमने देखा, हमने पाया - शिव बाप को, ब्रह्मा बाप द्वारा'। यह देवताई जीवन का गीत नहीं है। साकार सृष्टि पर, इस साकारी नेत्रों द्वारा, दोनों बाप को देखना, उनके साथ खाना, पीना, चलना, बोलना, सुनना, हर चरित्र का अनुभव करना, विचित्र को चित्र से देखना - यह श्रेष्ठ भाग्य ब्राह्मण जीवन का है।**

AV, Original 11.05.1984
संगमयुग है ही मिलने का युग। जितना मिलेंगे, उतना और मिलने की आशा बढ़ेगी। और मिलने की शुभ आशा होनी भी चाहिए। क्योंकि यह मिलने की शुभ आशा ही माया-जीत बना देती है। यह मिलने का शुभ संकल्प सदा बाप की याद स्वत: दिलाता है। **यह तो होनी ही चाहिए। यह पूरी हो जायेगी, तो संगम पूरा हो जायेगा। और सब इच्छायें पूरी हुई, लेकिन याद में सदा समाये रहें, यह शुभ इच्छा आगे बढ़ायेगी।** ऐसे है ना? तो सदा मिलन मेला होता ही रहेगा। चाहे व्यक्त द्वारा, चाहे अव्यक्त द्वारा। **सदा साथ ही रहते हैं - फिर मिलने की आवश्यकता ही क्या! हर मिलन का अपना-अपना स्वरूप और प्राप्ति है। अव्यक्त मिलन अपना, और साकार मिलन अपना। मिलना तो अच्छा ही है।**

AV, Original 18.01.1987
आज अव्यक्त बापदादा अपने 'अव्यक्त स्थिति भव' के वरदानी बच्चों, वा अव्यक्ति फरिश्तों से मिलने आये हैं। **यह अव्यक्त मिलन, इस सारे कल्प में, अब एक ही बार, संगम पर होता है। सतयुग में भी देव मिलन होगा, लेकिन फरिश्तों का मिलन, अव्यक्त मिलन, इस समय ही होता है।** निराकार बाप भी, अव्यक्त ब्रह्मा बाप के द्वारा मिलन मनाते हैं। **निराकार को भी यह फरिश्तों की महफिल अति प्रिय लगती है, इसलिए अपना धाम छोड़, आकारी वा साकारी दुनिया में मिलन मनाने आये हैं।**

AV, Original 13.12.1990
बच्चे अधिकार से कहते - हम सब साकार स्वरूप में मिलन मनाएं। बाप भी चाहते, बच्चे भी चाहते। फिर भी **समय प्रमाण, ब्रह्मा बाप, अव्यक्त फरिश्ते रूप में, साकार स्वरूप से अनेक गुणा तीव्रगति से सेवा करते हुए, बच्चों को अपने समान बना रहे हैं।** न सिर्फ एक दो वर्ष, लेकिन अनेक वर्ष अव्यक्त मिलन, अव्यक्त रूप में सेवा का अनुभव कराया, और करा भी रहे हैं। **तो ब्रह्मा बाप ने अव्यक्त होते भी, व्यक्त में क्यों पार्ट बजाया? समान बनाने के लिए। ब्रह्मा बाप अव्यक्त से व्यक्त में आये, तो बच्चों को रिटर्न में क्या करना है? व्यक्त से अव्यक्त बनना है!**

AV, Original 04.12.1991
सभी मिलन मनाने आये हैं। तो बापदादा भी मिलन मनाने के लिए, आप जैसे, व्यक्त शरीर में आते हैं। **समान बनना पड़ता है ना? आप साकार में हो, तो बाप को भी साकार तन का आधार लेना पड़ता है। वैसे, आपको व्यक्त से अव्यक्त बनना है, या अव्यक्त को व्यक्त बनना है? कायदा क्या कहता है? अव्यक्त बनना है ना? तो फिर अव्यक्त को व्यक्त में क्यों लाते हो? जब आपको भी अव्यक्त ही बनना है, तो अव्यक्त को तो अव्यक्त ही रहने दो ना!** अव्यक्त मिलन के अनुभव को बढ़ाते चलो। अव्यक्त भी, ड्रामा अनुसार, व्यक्त में आने के लिए बांधे हुए हैं, लेकिन समय प्रमाण, सरकमस्टांस प्रमाण, अव्यक्त मिलन का अनुभव बहुत काम में आने वाला है। **इसलिए इस अनुभव को इतना स्पष्ट और**

सहज करते जाओ, जो समय पर यह अव्यक्त मिलन, साकार समान ही अनुभव हो। समझा? उस समय ऐसे नहीं कहना कि हमको तो अव्यक्त से, व्यक्त में मिलने की आदत है। जैसा समय, वैसे मिलन मना सकते हो। समझा?

'साइलेन्स बल से साइंस पर विजय' – Part 2

55] साइन्स का मूल आधार है 'लाइट' - साइलेन्स की शक्ति का आधार है 'डिवाइन इनसाइट'; साइन्स तो आपकी रचना है - आप मास्टर रचयिता हो; साइन्स से तो साइलेन्स की शक्ति अति श्रेष्ठ है; यह साइलेन्स की शक्ति ही विश्व परिवर्तन करेगी!

AV, Original 15.07.1973

जैसे विनाशकारी आत्मायें विनाश के लिए तड़पती हैं - क्या ऐसे ही आप स्थापना वाले विश्व-कल्याण के लिये तड़पते हो? ऐसी सेल्फ-सर्विस (self-service) और विश्व की सर्विस - इन दोनों के लिये नये-नये इन्वेन्शन (invention) निकालते हो? **जैसे वह लोग अभी इन्वेन्शन कर रहे हैं कि ऐसे पॉवरफुल यन्त्र बनायें, जो विनाश सहज और शीघ्र हो जाये - तो क्या ऐसे आप महावीर, सायलेन्स की शक्ति के इन्वेन्टर (inventor) ऐसा प्लान बना रहे हो कि जो सारे विश्व को परिवर्तन होने में, अथवा उसे मुक्ति और जीवनमुक्ति का वर्सा लेने में, सिर्फ एक सेकेण्ड ही लगे, और सहज भी हो जाये?** … तो ऐसी रिफाईन इन्वेन्शन से, एक सेकेण्ड में नज़र से निहाल, एक सेकेण्ड में दु:खी से सुखी, निर्बल से बलवान, और अशान्ति से शान्ति का अनुभव करा सको। क्या ऐसे रिफाईन रूहानी शस्त्र और युक्तियाँ सोचते हो कि एक सेकेण्ड में उनका तड़पना बन्द हो जाय? **जैसे बम (bomb) द्वारा एक सेकेण्ड में मर जायें - वैसे एक सेकेण्ड में उनको वरदान, महादान दे सको, क्या ऐसे महादानी और ऐसे वरदानी बने हो?** क्या सर्व की मनोकामनाएं पूरी करने वाली कामधेनु बने हो - अब क्या स्वयं में कोई कामना तो नहीं रही हुई है ना? अगर अपनी कोई कामना होगी, तो कामधेनु कैसे बनेंगे? 'मेरा नाम हो', और 'मेरी शान हो'- यह कामना भी नहीं हो। समझा?

AV, Original 11.10.1975

साइन्स का मूल आधार है लाइट (light)। लाइट के आधार से साइन्स का जलवा है, लाइट (electricity) की ही शक्ति है। ऐसे ही साइलेन्स की शक्ति का आधार है डिवाइन इनसाइट (Divine insight)। इन द्वारा साइलेन्स की शक्ति के बहुत वन्डरफुल अनुभव कर सकते हो। यह भी अनुभव होंगे। जैसे स्थूल साधन द्वारा सैर कर सकते हैं, वैसे ही जब चाहों, जहाँ चाहो वहाँ का अनुभव कर सकते हो। **न सिर्फ इतना, जो सिर्फ आपको अनुभव हो, लेकिन जहाँ आप पहुँचो, उन्हों को भी अनुभव होगा कि आज जैसे प्रैक्टिकल मिलन हुआ।**

AV, Original 26.01.1977

जैसे वाणी द्वारा किसी आत्मा को परिवर्तन कर सकते हो, वैसे साइलेन्स की शक्ति द्वारा अर्थात् मन्सा द्वारा किसी आत्मा की वृत्ति, दृष्टि को परिवर्तन करने का अनुभव है? वाणी द्वारा तो जो सामने हों उनका ही परिवर्तन करेंगे, लेकिन मन्सा द्वारा वा सायलेंस की शक्ति द्वारा कितनी भी स्थूल में दूर रहने वाली आत्मा हो, उनको सम्मुख का अनुभव करा सकते हो। **जैसे साइंस (science - विज्ञान) के यंत्रों द्वारा दूर का दृश्य सम्मुख अनुभव करते हो - वेसे साइलेन्स की शक्ति से भी दूरी समाप्त हो, सामने का अनुभव आप भी करेंगे, और अन्य आत्माएं भी करेंगी। इसको ही योगबल कहा जाता है। लेकिन जैसे साइंस के साधन का यंत्र भी तब काम करेगा, जिसका कनेक्शन (connection - जोड़) मेन स्टेशन (main station) से होगा, इसी प्रकार साइलेन्स की शक्ति द्वारा अनुभव तब कर सकेंगे, जब कि बाप-दादा से निरन्तर क्लीयर कनेक्शन (clear connection - सीधा सम्बन्ध) होगा।** वहाँ सिर्फ कनेक्शन होता है, लेकिन यहाँ कनेक्शन अर्थात् रिलेशन (relation - सम्बन्ध)! सभी क्लीयर अनुभव होंगे, तब मन्सा शक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण देख सकेंगे।

AV, Original 28.06.1977

जैसे आजकल भी साइंस द्वारा हर चीज़ को क्वान्टिटी (quantity) बजाए क्वालिटी (quality) में ला रहे हैं - ऐसा छोटा सा रूप बना रहे हैं, जो रूप है छोटा, लेकिन शक्ति अधिक भरी हुई होती है। **जैसे मिठास के विस्तार को सैक्रीन (saccharine) के रूप में लाते हैं। विस्तार को सार में ला रहे हैं - इसी प्रकार पाण्डव सेना, अर्थात् साइलेन्स की शक्ति वाली श्रेष्ठ आत्माएं भी, जो एक घन्टे के भाषण द्वारा किसको परिचय दे सकते हो, वह एक सेकेन्ड की पॉवरफुल दृष्टि द्वारा, पॉवरफुल स्टेज द्वारा, कल्याण की भावना द्वारा, आत्मिक भाव द्वारा, 'स्मृति' दिला सकते हो, वा अपरोक्ष साक्षात्कार करा सकते हो? अभी ऐसी प्रैक्टिस की आवश्यकता है!**

AV, Original 03.12.1979

जैसे साइन्स के साधनों द्वारा समय और आवाज़ कितना भी दूर होते समीप हो गया है ना। जैसे प्लेन (plane) द्वारा समय कितना नज़दीक हो गया है, थोड़े समय में कहाँ से कहाँ पहुँच सकते हो। टेलीफोन द्वारा आवाज़ कितना समीप हो गया है। लण्डन के व्यक्ति का आवाज़ भी ऐसे सुनाई देगा, जैसे सम्मुख बात कर रहे हैं। ऐसे ही टेलीविजन (television) के साधनों द्वारा कोई भी दृश्य वा व्यक्ति दूर होते हुए भी सम्मुख अनुभव होता है। **साइन्स तो आपकी रचना है। आप मास्टर रचयिता हो।** साइलेन्स की शक्ति से आप सब भी विश्व की किसी भी दूर रहने वाली आत्मा का आवाज़ सुन सकते हो। कौन-सा आवाज़? **साइन्स मुख का आवाज़ सुनाने का साधन बन सकती है, लेकिन मन का आवाज़ नहीं पहुँचा सकती। साइलेन्स की शक्ति से हर आत्मा के मन का आवाज़ इतना ही समीप सुनाई देगा, जैसे कोई सम्मुख बोल रहा है।** आत्माओं के मन में अशान्ति, दु:ख की स्थिति के चित्र ऐसे ही स्पष्ट दिखाई देंगे, जैसे टी.वी. द्वारा दृश्य वा व्यक्ति स्पष्ट देखते हो। **जैसे इन साधनों का कनेक्शन जोड़ा, स्वीच ऑन किया - और स्पष्ट दिखाई और सुनाई देता है; ऐसे ही बाप से कनेक्शन जोड़ा, श्रेष्ठ भावना और कामना का स्वीच ऑन किया - तो दूर की आत्माओं को भी समीप अनुभव करेंगे।** इसको कहा जाता है विश्व-कल्याणकारी।

AV, Original 31.12.1981

जब साइन्स के साधन सेकण्ड में अंधकार से रोशनी कर सकते हैं, तो हे (मास्टर) ज्ञान सूर्य बच्चे, आप कितने समय में रोशनी कर सकते हो? साइन्स से तो साइलेन्स की शक्ति अति श्रेष्ठ है।

AV, Original 28.01.1985

जैसे अन्तरिक्ष यान (space-craft) वाले ऊँचे होने के कारण, सारे पृथ्वी के जहाँ के भी चित्र खींचने चाहें, खींच सकते हैं - ऐसे साइलेन्स की शक्ति से अन्तर्मुखी यान (craft of introversion) द्वारा, मंसा शक्ति द्वारा, किसी भी आत्मा को चरित्रवान बनने की, श्रेष्ठ आत्मा बनने की, प्रेरणा दे सकते हो! साइंस वाले तो हर चीज़ पर समय और सम्पत्ति खूब लगाते हैं, लेकिन आप बिना खर्चे थोड़े समय में बहुत सेवा कर सकते हो। जैसे आजकल कहाँ-कहाँ फ्लाइंग सासर (flying-saucer – UFO - उड़न तश्तरी) देखते हैं। सुनते हो ना - समाचार। वह भी सिर्फ लाइट ही देखने में आती है। **ऐसे आप मंसा सेवाधारी आत्माओं का आगे चल अनुभव करेंगे कि कोई लाइट की बिन्दी आई, विचित्र अनुभव कराके गई।** यह कौन थे? कहाँ से आये? क्या देकर गये! यह चर्चा बढ़ती जायेगी। **जैसे आकाश के सितारों की तरफ सबकी नजर जाती है, ऐसे धरती के सितारे, दिव्य ज्योति, चारों ओर अनुभव करेंगे।**

AV, Original 21.02.1985

जैसे आजकल के साइंस के साधनों से आगे जो पहली चीज़ दिखाते, वह गुम हो जाती और दूसरी दिखाई देती। ऐसे आपके साइलेन्स की शक्ति आपको देखते हुए आपको गुम कर दे - बाप को प्रत्यक्ष कर दे। ऐसी शक्तिशाली सेवा हो। बाप से संबंध जोड़ने से, आत्मायें सदा शक्तिशाली बन जाती हैं। अगर आत्मा से संबंध जुट जाता, तो सदा के लिए शक्तिशाली नहीं बन सकते। समझा?

AV, Original 04.12.1985

साइन्स के साधन जब फेल (fail) हो जाते हैं तो यह साइलेन्स का साधन काम में आयेगा। लेकिन कोई भी कनेक्शन जोड़ने के लिए सदा लाइन क्लीयर चाहिए। जितना-जितना एक बाप और उन्हीं द्वारा सुनाई हुई नॉलेज में, वा उसी नॉलेज द्वारा सेवा में, सदा बिजी रहने के अभ्यासी होंगे, उतना श्रेष्ठ संकल्प होने के कारण लाइन क्लीयर होगी।

AV, Original 14.01.1990

साइलेन्स की शक्ति को अच्छी तरह से जानते हो? साइलेन्स की शक्ति सेकण्ड में अपने स्वीट होम, शान्तिधाम में पहुँचा देती है। साइंस वाले तो और फास्ट गति वाले यंत्र निकालने का प्रयत्न कर रहे हैं। लेकिन आपका यंत्र कितनी तीव्रगति का है! सोचा और पहुंचा! **ऐसा यंत्र साइंस में है, जो इतना दूर, बिना खर्च के, पहुँच जाएँ? वो तो एक-एक यंत्र बनाने में कितना खर्चा करते हैं, कितना समय और कितनी एनर्जी लगाते हैं, आपने क्या किया? बिना खर्चे मिल गया। 'यह संकल्प की शक्ति सबसे फास्ट है'। आपको शुभ संकल्प का यंत्र मिला है, दिव्य बुद्धि मिली है। शुद्ध मन और दिव्य बुद्धि से पहुँच जाते हो। जब चाहो तब लौट आओ, जब चाहो तब चले जाओ।** साइंस वालों को तो मौसम भी देखनी पड़ती हैं। आपको तो वह भी नहीं देखना पड़ता कि आज बादल हैं - नहीं जा सकेंगे। आजकल देखो - बादल तो क्या थोड़ी-सी फोगी भी होती है, तो भी प्लेन (plane) नहीं जा सकता।

AV, Original 03.02.2006

जैसे आजकल की साइन्स प्रत्यक्ष रूप में दिखाती है ना! अनुभव कराती है ना! गर्म का भी अनुभव कराती है, ठण्डाई का भी अनुभव कराती है - तो साइलेन्स की शक्ति से भी अनुभव करने चाहते हैं। जितना-जितना स्वयं अनुभव में रहेंगे, तो औरों को भी अनुभव करा सकेंगे। बापदादा ने इशारा दिया ही है कि अभी कम्बाइन्ड सेवा करो। सिर्फ आवाज से नहीं, लेकिन आवाज के साथ अनुभवी मूर्त बन, अनुभव कराने की भी सेवा करो। **कोई न कोई शान्ति का अनुभव, खुशी का अनुभव, आत्मिक प्यार का अनुभव .. - अनुभव ऐसी चीज़ है जो एक बारी भी अनुभव हुआ तो छोड़ नहीं सकते हैं।** सुनी हुई चीज़ भूल सकती है, लेकिन अनुभव की चीज़ भूलती नहीं है। वह, अनुभव कराने वाले के समीप लाती है।

AV, Original 18.02.2008

साइंस की सत्ता है प्रकृति द्वारा सत्ता को कार्य करना। तो प्रकृति भी साइंस के साधन होते, प्रयत्न करते, अभी कन्ट्रोल में नहीं है; आरै आगे चलकर यह प्रकृति के खेल और भी बढ़ते जायेंगे क्योंकि प्रकृति में भी अभी आदि समय की शक्ति नहीं रही है। ऐसे समय पर अभी सोचो, अभी कौन सी सत्ता परिवर्तन कर सकती? **यह साइलेन्स की शक्ति विश्व परिवर्तन करेगी। यह चारों ओर की हलचल मिटाने वाले कौन हैं - जानते हो ना? सिवाए परमात्म पालना के अधिकारी**

आत्मा के और कोई नहीं कर सकता! तो आप सभी को यह उमंग-उत्साह है कि हम ही ब्राह्मण आत्मायें बापदादा के साथ भी हैं, और परिवर्तन के कार्य के साथी भी हैं।

ट्रिब्युनल (Tribunal)

56] अंत में सबके लिए ट्रिब्युनल बैठेगी - खास उन बच्चों के लिए, जो फिर ट्रेटर बन जाते हैं - बतायेंगे कि तुमने यह-यह पाप किया - पाप करेंगे, तो सौगुणा सज़ा के निमित्त बनेंगे - बहुत पछतायेंगे, लेकिन उस समय कुछ कर नहीं सकेंगे!

AV, Original 02.02.1972

जैसे प्रीत बुद्धि चलते-फिरते बाप, बाप के चरित्र, और बाप के कर्त्तव्य की स्मृति में रहने से, बाप के मिलने का प्रैक्टिकल अनुभव करते हैं, वैसे विपरीत बुद्धि वाले विमुख होने से, सूक्ष्म सजाओं का अनुभव करेंगे। इसलिए फिर भी बापदादा पहले से ही सुना रहे हैं कि उन सजाओं का अनुभव बहुत कड़ा है। उनके सीरत से, हरेक अनुभव कर सकेंगे कि इस समय यह आत्मा सजा भोग रही है। कितना भी अपने को छिपाने की कोशिश करेंगे, लेकिन छिपा नहीं सकेंगे। **वह एक सेकेण्ड की सजा अनेक जन्मों के दु:ख का अनुभव कराने वाली है।** जैसे बाप के सम्मुख आने से एक सेकेण्ड का मिलन, आत्मा के अनेक जन्मों की प्यास बुझा देता है, ऐसे ही विमुख होने वाले को भी अनुभव होगा।

SM, Original 28.06.1964

अभी तुम आसुरी गोद से ईश्वरीय गोद में आये हो, फिर अगर आसुरी गोद में गये, अथवा उनको याद किया, तो विकर्म विनाश नहीं होंगे। मेहनत सारी इसमें है। नहीं तो अन्त में बहुत रोना, पछताना पड़ेगा। जैसे स्कूल में अच्छी रीति पढ़ते हैं, तो ऊँच पद पाते हैं; कोई नापास हो पड़ते हैं, तो आपघात कर लेते हैं। **तुम भी पिछाड़ी में बहुत रोएँगे, सज़ा भी खावेंगे। पापों का बोझा रह जाता है, तो फिर तुम्हारे लिए ट्रिब्यूनल बैठती है।** साक्षात्कार कराते हैं – 'तुमने फलाने जन्म में, यह किया'। काशी कलवट में भी साक्षात्कार कराके सज़ा देते हैं। यहाँ भी साक्षात्कार कराए, धर्मराज कहेंगे - **'देखो, बाप तुमको इस (लेखराज) ब्रह्मा तन से पढ़ाता था, तुमको इतना सिखलाया, फिर भी तुमने ये-ये पाप किये।'** न सिर्फ इस जन्म के, परन्तु जन्म-जन्मांतर के पापों का साक्षात्कार करावेंगे। टाइम इतना लगता है, जैसे कि बहुत जन्म सज़ा खा रहा हूँ। फिर बहुत पछतावेंगे, रोएँगे - परन्तु हो क्या सकेगा?

SM, Revised 04.08.2020

सुखदाता बाप के बच्चे बनकर भी, अगर दु:ख की फीलिंग आती है, तो बाप कहते - बच्चे, यह तुम्हारा बड़ा कर्मभोग है। जब बाप मिला, तो दु:ख की फीलिंग नहीं आनी चाहिए। जो पुराने कर्मभोग हैं, उसे योगबल से चुक्तू करो। **अगर योगबल नहीं होगा, तो मोचरा खाकर चुक्तू करना पड़ेगा। 'मोचरा और मानी' (सज़ा खाकर पद पाना) तो अच्छा नहीं। पुरूषार्थ करना चाहिए, नहीं तो फिर ट्रिब्युनल बैठती है।** प्रजा तो ढेर है - यह तो ड्रामा अनुसार सब गर्भजेल में बहुत सज़ायें खाते हैं।

SM, Revised 12.12.2012 / 21.12.2017

बच्चों को पढ़ाई पर पूरा ध्यान देना चाहिए। नहीं तो बहुत रोना पड़ेगा। सबके लिए ट्रिब्युनल बैठेगी - बतायेंगे कि तुमने यह-यह पाप किया; इसलिए हम तुमको बहुत समझाता हूँ कि पाप नहीं करना, पुण्य आत्मा बनना। **पाप करेंगे, तो सौगुणा सज़ा के निमित्त बनेंगे। मेरे बनकर विकार में गये, बाप के श्रीमत की अवज्ञा की, तो तुम्हारे पर बहुत सजा आयेगी। वह सजायें भी बहुत कड़ी होती हैं।** बाप कहते हैं मैं परमधाम का रहने वाला हूँ। यहाँ पुरानी दुनिया में आकर

तुमको वर्सा देता हूँ। फिर भी तुम नाम बदनाम करते हो, तब तो कहा हुआ है सतगुरू का निदंक सूर्यवंशी घराने में ठौर न पाये।

SM, Revised 29.11.1996 / 07.11.2016
तुम कहते हो शिव भगवानुवाच। फर्स्ट फ्लोर में ऊंचा बाप रहता है, फिर सेकण्ड फ्लोर में सूक्ष्मवतन। यह है थर्ड फ्लोर। **सृष्टि यहाँ है, पीछे सूक्ष्मवतन में जाते हैं। वहाँ ट्रिब्यूनल बैठती है, सजायें मिलती हैं। सजायें खाकर पवित्र बन चले जाते हैं ऊपर।** बाप सब बच्चों को ले जाते हैं। अब है संगम। इसको 100 वर्ष देने चाहिए।

SM, Revised 16.05.2013 / 29.05.2018
बाप कहते हैं फलाना बच्चा बहुत अच्छा है। धारणा कर औरों को कराने वाला है। **बीस नाखूनों का जोर देकर भी बाप से वर्सा लेना है। नहीं तो बहुत पछतायेंगे। तुम बच्चों के लिए तो खास ट्रिब्युनल बैठेगी। साक्षात्कार करायेंगे। देखो, तुमको कितना समझाते थे।**

SM, Revised 11.11.2009 / 20.11.2019
सब कुछ आत्मा ही करती है, विकर्म आत्मा ही करती है। आत्मा ही शरीर द्वारा भोगती है। तुम्हारे लिए तो ट्रिब्युनल बैठेगी। खास उन बच्चों के लिए जो सर्विस लायक बनकर फिर ट्रेटर बन जाते हैं। यह तो बाप ही जानते हैं, कैसे माया हप कर लेती है। ‘बाबा, हमने हार खा ली, काला मुँह कर लिया .. अब क्षमा करो’। अब गिरा, और माया का बना, फिर क्षमा काहे की? **उनको तो फिर बहुत-बहुत मेहनत करनी पड़े!** बहुत हैं जो माया से हार जाते हैं। बाप कहते हैं - यहाँ बाप पास दान देकर जाओ फिर वापस नहीं लेना। नहीं तो खलास हो जायेगा। हरिश्चन्द्र का मिसाल है ना। दान देकर फिर बहुत खबरदार रहना है। फिर ले लिया तो सौगुणा दण्ड पड़ जाता है। फिर बहुत हल्का पद पा लेंगे।

अष्ट रतन - 'पास विद् ऑनर' - 'pass with honour'

70] अष्ट-शक्तियां अब प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देनी चाहियें - ऐसे आत्मायें ही अष्ट रत्नों में आ सकते हैं; ये लास्ट कर्मातीत अवस्था है - बिल्कुल न्यारे होकर, अधिकारी होकर कर्म में आयें, बन्धन के वश नहीं; मन और बुद्धि - और संस्कार के ऊपर भी कण्ट्रोल होना चाहिए!

AV, Original 18.06.1973

अष्ट रत्नों में सिर्फ शक्तियाँ हैं - वा पाण्डव भी आ सकते हैं? जब भाई-भाई हैं, तो आत्मिक रूप की स्थिति में स्थित हुई आत्मा, अष्ट रत्न बन सकते हैं। इसमें शक्ति अथवा पाण्डवों की बात नहीं है, अपितु आत्मिक स्थिति की बात है। दोनों आ सकते हैं। पाण्डवों की सीट भी आठ में है। अच्छा, फर्स्ट (first) विशेषता क्या हुई जो आत्माओं को, बाप का भी मालिक बनाती है? वो बाप से भी श्रेष्ठ बनते हैं!

AV, Original 06.02.1974

जैसे बाप को अव्यक्त से व्यक्त में लाते हो, क्या इसी प्रकार हर शक्ति को कार्य में व्यक्त कर सकते हो? क्योंकि अब समय है सर्व-शक्तियों को व्यक्त करने का - तथा प्रसिद्ध करने का। जब प्रसिद्धि होगी, तब ही शक्ति सेना के विजय का नारा बुलन्द होगा। **इसमें सफलता का मुख्य आधार है - परखने की शक्ति। जब परखने की शक्ति होगी, तो ही अन्य शक्तियों से भी कार्य ले सकती हो।** परखने की शक्ति कम होने, और शक्तियों के युक्ति-युक्त काम में न लाने से सदा सफलतामुर्त नहीं बन सकते। **अष्ट-शक्तियां अब प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देनी चाहियें। महावीर की निशानी यही है कि अष्ट-शक्तियां हर समय प्रत्यक्ष रूप में नज़र आयें। ऐसे आत्मायें ही अष्ट रत्नों में आ सकते हैं।**

AV, Original 21.06.1974

तीनों सम्बन्ध निभाने वाले त्रिमूर्ति स्नेही आत्मायें, तीन बातों से सम्पन्न होंगी।

बाप के सम्बन्ध से उनमें क्या विशेषता होगी? - **फरमानबरदार।**

शिक्षक के रूप से क्या होगी? शिक्षा में **वफादार** और **ईमानदार** चाहिये।

सतगुरू के सम्बन्ध में आज्ञाकारी।

तो यह तीनों विशेषतायें ऐसी त्रिमूर्ति स्नेही आत्माओं में स्पष्ट दिखाई देंगी। **अब इन तीनों में अपने को देखो कि कितने परसेन्ट है। क्या सारे दिन की दिनचर्या में तीनों ही सम्बन्धों की विशेषतायें दिखाई देती हैं?** इनसे ही अपनी रिज़ल्ट को जान सकते हो। कोई-कोई तो बाप के स्नेही, या विशेष शिक्षक के स्नेही, या सतगुरू के स्नेही बनकर चल भी रहे हैं - **लेकिन बनना त्रिमूर्ति-स्नेही है। तीनों की परसेन्ट पास की होनी चाहिये। एक बात में 'पास विद ऑनर' हो जाओ, और दो बातों में मार्क्स कम हो जाए, तो रिज़ल्ट में बाप के समीप आने वाली आत्माओं में न आ सकेंगे। इसलिए तीनों में ही अपनी परसेन्टेज को ठीक करो।**

AV, Original 27.05.1977

विशेष महारथियों के पुरूषार्थ में क्या महीन अन्तर रह जाता है - जिससे दो नम्बर के बाद, तीसरा आता, फिर चौथा आता? हैं महारथी, नामी-ग्रामी - लेकिन दूसरा, तीसरा नम्बर भी किस आधार से बनता है? तो आज महारथियों के इस गुह्य गति के पुरूषार्थ को देख रहे थे। **अष्ट में भी - पहला नम्बर और आठवाँ नम्बर में क्या अन्तर है? पूजते तो**

आठ ही हैं - लेकिन पूजा में भी अन्तर, विजय में अन्तर है। हरेक की विशेषता भी विशेष है, और फिर जो कमी रह जाती है वह भी विशेष है, जिसके आधार पर फिर नम्बर बनते हैं। आज दोनों ही देख रहे थे - तो यह आपस में विचार करना।

AV, Original 02.01.1978

अष्ट रतन चीफ जस्टिस (Chief Justice) हैं। जस्टिस की जजमेण्ट (judgement), हाँ या ना की - फाइनल (final) होती है। बाप प्रेज़ीडेण्ट (President) है - लेकिन बच्चे चीफ जस्टिस हैं। जजमेण्ट बच्चों की है। चीफ जस्टिस की जजमेण्ट सदा यथार्थ होती है। जस्टिस के ऊपर, चीफ जस्टिस हाँ या ना कर सकते हैं - लेकिन चीफ जस्टिस के जजमेण्ट की बहुत वैल्यु (value) होती है। इसलिए जब तक भविष्य भी वर्तमान के समान स्पष्ट न हो, तो जजमेण्ट यथार्थ कैसे दे सकेंगे?

AV, Original 13.01.1978

अष्ट रत्नों की विशेषता एक विशेष बात से है। **अष्ट रतन प्रैक्टिकल (practical) में - जैसे यादगार हैं विशेष - तो जो अष्ट शक्तियाँ हैं, वह हर शक्ति उनके जीवन में प्रैक्टिकल दिखाई देगी।** अगर एक शक्ति भी प्रैक्टीकल जीवन में कम दिखाई देती - **तो जैसे, अगर मूर्ति की एक भुजा खण्डित हो, तो पूज्यनीय नहीं होती - इसी प्रकार से, अगर एक शक्ति की भी कमी दिखाई देती, तो अष्ट देवताओं की लिस्ट (list) में अब तक फिक्स (fix) नहीं कहे जायेंगे।** दूसरी बात - अष्ट देवताएं, भक्तों के लिए विशेष इष्ट माने जाते हैं। इष्ट अर्थात् महान पूज्य। इष्ट द्वारा, हर भक्त को हर प्रकार की विधि और सिद्धि प्राप्त होती है। **यहाँ भी जो अष्ट रतन होंगे, वह सर्व ब्राह्मण परिवार के आगे अब भी इष्ट अर्थात् हर संकल्प और चलन द्वारा विधि और सिद्धि का मार्ग दर्शन करने वाले - सबके सामने, अब भी ऐसे ही महान मूर्त्त माने जायेंगे।** तो अष्ट शक्तियाँ भी होंगी, और परिवार के सामने इष्ट अर्थात् श्रेष्ठ आत्मा, महान आत्मा, वरदानी आत्मा के रूप में होंगे। यह है अष्ट रतनों की विशेषता।

AV, Original 13.01.1978 (continued)

एक सेकेण्ड का खेल है - अभी-अभी शरीर में आना और अभी-अभी शरीर से अव्यक्त स्थिति में स्थित हो जाना। इस (एक) सेकेण्ड के खेल का अभ्यास है - जब चाहो, जैसे चाहो, उसी स्थिति में स्थित रह सको। **अन्तिम पेपर सेकेण्ड का ही होगा - जो इस (एक) सेकेण्ड के पेपर में पास हुआ, वही 'पास विद् ऑनर' होगा।**

AV, Original 19.12.1978

जैसे साकार में, मम्मा बाबा की तरफ कोई की रीस नहीं हो सकती ना - ऐसे नम्बरवार इतने स्पष्ट होंगे, जो कोई रीस कर हीं नहीं सके। ऐसे रायल फैमली अभी से ही रायल्टी में दिखाई देगी। **अभी तो 8 नम्बर भी नहीं निकाल सकते ना! अभी फिर भी क्वेश्चन मार्क आ जाता है - फिर फुलस्टाप आ जायेगा। अभी स्पष्ट रूप में 8 नम्बर निकालने में भी क्वेश्चन उठता है - रखें ना रखें?** अभी तीव्र पुरूषार्थ की पालिश (polish) हो रही है, पालिश में थोड़ी बहुत कमी छिप जाती है। **जब 8 नम्बर हैं तो कुछ तो कमी होगी ना पहले से। लेकिन इतनी नहीं होगी जो स्पष्ट दिखाई दे - इसलिए पालिश हो रही है।**

AV, Original 16.03.1986

प्रकृति भी, माया भी - सब लास्ट दाँव लगाने लिए अपने तरफ कितना भी खींचे, लेकिन आप न्यारे और बाप के प्यारे बनने की स्थिति में लवलीन रहो। इसको कहा जाता - देखते हुए न देखो, सुनते हुए न सुनो। ऐसा अभ्यास हो। इसी को ही ‘स्वीट साइलेन्स’ स्वरूप की स्थिति कहा जाता है। फिर भी बापदादा समय दे रहा है। अगर कोई भी कमी है, तो अब भी भर सकते हो। क्योंकि बहुतकाल का हिसाब सुनाया। तो अभी थोड़ा चांस (chance) है। **इसलिए इस प्रैक्टिस की तरफ फुल अटेन्शन रखो। ‘पास विद् ऑनर’ बनना, या पास होना - इसका आधार इसी अभ्यास पर है।** ऐसा अभ्यास है? समय की घण्टी बजे, तो तैयार होंगे - या अभी सोचते हो, तैयार होना है। **इसी अभ्यास के कारण ‘अष्ट रत्नों की माला’ विशेष छोटी बनी है।**

AV, Original 07.03.1995

अगर अल्पकाल का अभ्यास है, तो प्राप्ति भी अल्पकाल की होगी। तो ये अभ्यास सारे दिन में जब भी चांस मिले करते रहो। एक सेकण्ड में कुछ बिगड़ता नहीं है। फिर काम करना शुरू कर दो। लेकिन हलचल में फुल स्टॉप लगता है, या नहीं - ये चेक करो। कर्म के सम्बन्ध में आना और कर्म के बन्धन में आना - इसमें भी फर्क है। अगर कर्म के बन्धन में आते हैं तो कर्म आपको खींचेगा, फुल स्टॉप नहीं लगाने देगा। और न्यारे-प्यारे होकर किसी भी कर्म के सम्बन्ध में हो, तो सेकण्ड में फुल स्टॉप लगेगा। क्योंकि बन्धन नहीं है। बन्धन भी खींचता है और सम्बन्ध भी खींचता है - लेकिन न्यारे होकर सम्बन्ध में आना, यह अण्डरलाइन करना। **इसी अभ्यास वाले ही ‘पास विद् ऑनर’ होंगे। ये लास्ट कर्मातीत अवस्था है। बिल्कुल न्यारे होकर, अधिकारी होकर कर्म में आयें, बन्धन के वश नहीं।**

AV, Original 31.01.1998

बापदादा ने कई बार यह इशारा दे दिया है कि समय प्रमाण अभी थोड़ा सा समय है - सर्व खज़ाने जमा करने का। अगर इस समय में - **समय का खज़ाना, संकल्प का खज़ाना, बोल का खज़ाना, ज्ञान धन का खज़ाना, योग की शक्तियों का खज़ाना, दिव्य जीवन के सर्व गुणों का खज़ाना जमा नहीं किया - तो फिर ऐसा जमा करने का समय मिलना सहज नहीं होगा। सारे दिन में अपने इन एक-एक खज़ाने का एकाउण्ट (account) चेक करो। जैसे स्थूल धन का एकाउण्ट चेक करते हो ना, इतना जमा है - ऐसे हर खज़ाने का एकाउण्ट जमा करो। चेक करो। सर्व खज़ाने चाहिए।** अगर ‘पास विद् ऑनर’ बनने चाहते हो, तो हर खज़ाने का जमा खाता इतना ही भरपूर चाहिए जो 21 जन्म जमा हुए खाते से प्रालब्ध भोग सको।

AV, Original 30.11.1999

जैसे इस शरीर के आरगन्स को, बाँह है, पाँव है - इनको सेकण्ड में जहाँ लेकर जाने चाहो वहाँ ले जा सकते हो ना! ऐसे मन और बुद्धि को भी ‘मेरी’ कहते हो ना! जब मन के मालिक हो, यह सूक्ष्म आरगन्स हैं, तो इसके ऊपर कण्ट्रोल क्यों नहीं? **संस्कार के ऊपर भी कण्ट्रोल होना चाहिए। जब चाहो, जैसे चाहो - जब यह अभ्यास पक्का होगा तब समझो ‘पास विद् ऑनर’ होंगे।**

AV, Original 17.02.2011

एवररेडी रहने का अभ्यास – मायाजीत, मनजीत, जगतजीत - यह संस्कार भी बहुत समय से बनायेंगे, तब अन्त समय भी यह बहुतकाल का अभ्यास विजयी बनाकर, आपको विशेष माला का मणका बनायेगी। ‘पास विद् ऑनर’ बनेंगे।

पास नहीं, 'पास विद् ऑनर'। तो बोलो यह हिम्मत है ना! 'पास विद् ऑनर' तो होना है ना? जो द्वापर से लेके अब तक पूज्य बनते हैं अर्थात् माला के मणके बनते हैं - तो अपने को माला के मणके बनाने का शुद्ध संकल्प है ना?

78] महारथी - घोड़े-सवार - प्यादे - की निशानी

AV, Original 22.01.1976

महारथी की परिभाषा क्या हुई? **महारथी** अर्थात् डबल ताजधारी, अर्थात् डबल सेवाधारी। स्वयं की और सर्व की सेवा का बैलेन्स हो, उसको कहेंगे महारथी।

बच्चों के बचपन का समय स्वयं के प्रति होता है, और ज़िम्मेवार आत्माओं का समय सेवा प्रति होता है। तो **घोड़े-सवार** और **प्यादों** का समय स्वयं प्रति ज्यादा जायेगा। स्वयं ही कभी बिगड़ेंगे, कभी धारणा करेंगे, कभी धारणा में फेल (fail) होते रहेंगे। कभी तीव्र पुरूषार्थ में, कभी साधारण पुरूषार्थ में होंगे। कभी किसी संस्कार से युद्ध, तो कभी किसी संस्कार से युद्ध। वे स्वयं के प्रति ज्यादा समय गँवायेंगे।

लेकिन महारथी ऐसे नहीं करेंगे।

AV, Original 05.12.1979

आज बाप-दादा अपनी रूहानी सेना को देख रहे थे। सेना में सब प्रकार की नम्बरवार स्थिति अनुसार महारथी, घोड़े-सवार और प्यादे देखे।

महारथियों के मस्तक में अर्थात् स्मृति में सदा विजय का झण्डा लहरा रहा था।

घोड़े-सवार अर्थात् सेकेण्ड नम्बर - उनके मस्तक अर्थात् स्मृति में विजय का झण्डा तो था ही, लेकिन सदा नहीं लहरा रहा था। कभी खुशी की झलक से व निश्चय की फलक से झण्डा लहराता था, और कभी झलक और फलक की वायु कम होने के कारण, झण्डा लहराने की बजाए एक ही जगह खड़ा हो जाता था।

तीसरे, **प्यादे** बहुत प्रयत्न से, निश्चय की रस्सी से, खुशी की झलक से, झण्डे को लहराने के प्रयत्न में खूब लगे हुए थे। लेकिन कहीं-कहीं कमज़ोरी की गाँठ होने के कारण अटक जाता था, लहराता नहीं था। फिर भी खूब पुरुषार्थ में लगे हुए थे। किसी-किसी का पुरुषार्थ के बाद लहराता भी था, लेकिन कुछ समय के बाद, कुछ मेहनत के बाद। इसलिए वह झलक और फलक नहीं थी।

AV, Original 16.11.1981

जैसे लौकिक पढ़ाई में फर्स्ट डिवीजन, सेकेण्ड, थर्ड होती हैं - वैसे यहाँ भी महारथी, घोड़े-सवार और पैदल तीन डिवीजन हैं।

फर्स्ट डिवीजन - (महारथी) - सदा फास्ट अर्थात् उड़ती कला वाले होंगे। हर सेकेण्ड, हर संकल्प में बाप के साथ का, सहयोग का, स्नेह का अनुभव करेंगे। सदा बाप के साथ, और हाथ में हाथ की अनुभूति करेंगे। 'सहयोग दो' - यह नहीं कहेंगे। सदा स्वयं को सम्पन्न अनुभव करेंगे।

सेकेण्ड डिवीजन – (घोड़े-सवार) - चढ़ती कला का अनुभव करेंगे, लेकिन उड़ती कला का नहीं। चढ़ती कला में आये हुए विघ्नों को पार करने में कभी ज्यादा, कभी कम समय लगायेंगे। उड़ती कला वाले, ऊपर से क्रास करने के कारण, ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कोई विघ्न आया ही नहीं। विघ्न को विघ्न नहीं, लेकिन साइड-सीन (side-scene) समझेंगे - रास्ते के नजारे हैं। और चढ़ती कला वाले रूकेंगे - विघ्न है, यह महसूस करेंगे। इसलिए जरा-सा लेशमात्र कभी-कभी पार करने की थकावट वा दिलशिकस्त होने का अनुभव करेंगे।

तीसरी डिवीजन - (प्यादे) - उसको तो जान गये होंगे। रूकना और चलना, और चिल्लाना। कभी चलेंगे, कब चिल्लायेंगे। याद की *मेहनत* में रहेंगे। क्योंकि सदा कम्बाइन्ड (combined) नहीं रहते। सर्व सम्बन्ध निभाने के *प्रयत्न* में रहते हैं। पुरूषार्थ में ही सदा लगे रहते हैं। वह (प्यादे) प्रयत्न में रहते - और वह (महारथी) प्राप्ति में रहते!

गंगा सागर मेला - कलकत्ता

87] 'गंगा सागर' का मेला वहाँ लगता है, जहाँ ब्रह्मपुत्रा नदी कलकत्ता तरफ सागर में जाकर मिलती है - जो ज्ञान की बड़ी नदी, ब्रह्मा बाबा, और ज्ञान सागर, शिवबाबा, का मेल, जब दोनों कम्बाइन्ड हैं, जो संगम युग में होता है, उसका यादगार है!

SM, Revised 21.07.2020
बाप कहते हैं - मैंने इनको एडाप्ट किया है ना। इन द्वारा तुमको एडाप्ट करता हूँ। तुम मेरे बच्चे हो। परन्तु यह है मेल (male)। तुम सभी को सम्भालने के लिए फिर सरस्वती को भी एडाप्ट किया। उनको माता का टाइटिल मिला - सरस्वती नदी। यह नदी (ब्रह्मा) माता हुई ना। (शिव) बाप सागर है। यह (ब्रह्मा) भी सागर से निकली हुई है। **ब्रह्म-पुत्रा नदी और सागर का बहुत बड़ा मेला लगता है। ऐसा मेला और कहाँ लगता नहीं। वह है नदियों का मेला। यह है आत्माओं और परमात्मा का मेला। वह भी जब शरीर में आते हैं, तब मेला लगता है।** बाप कहते हैं - मैं हुसैन हूँ। मैं इनमें (ब्रह्मा में) कल्प-कल्प प्रवेश करता हूँ। यह ड्रामा में नूँध है।

AV, Original 18.02.1986, Revised 28.06.2020
आज ज्ञान सागर बाप, अपनी ज्ञान गंगाओं को देख रहे हैं। ज्ञान सागर से निकली हुई ज्ञान गंगायें, कैसे और कहाँ-कहाँ से पावन करते हुए, इस समय, सागर और गंगा का मिलन मना रहीं हैं। **यह 'गंगा सागर' का मेला है, जिस मेले में चारों ओर की गंगायें पहुंच गई। बापदादा भी ज्ञान गंगाओं को देख हर्षित होते हैं। हर एक गंगा के अन्दर यह दृढ़ निश्चय और नशा है कि पतित दुनिया को, पतित आत्माओं को पावन बनाना ही है।**

SM, Revised 19.12.2019 (Original 09.01.1969)
बाप इनमें प्रवेश करते हैं। यह भी समझते हो यह (ब्रह्मा बाबा) ज्ञान की बड़ी नदी है। **ज्ञान नदी भी है, फिर पुरुष भी है। ब्रह्मपुत्रा नदी सबसे बड़ी है, जो कलकत्ता तरफ सागर में जाकर मिलती है। मेला भी वहाँ ही लगता है; परन्तु उन्हें यह पता नहीं कि यह आत्माओं और परमात्मा का मेला है।** वह तो पानी की नदी है, जिसका नाम ब्रह्मपुत्रा रखा है। वह तो ब्रह्म को ईश्वर कह देते हैं, इसलिए ब्रह्मपुत्रा को पावन समझते हैं। पतित-पावन वास्तव में गंगा को नहीं कहा जाता है। **यहाँ सागर और ब्रह्मा नदी का मेल है। बाप कहते हैं, यह फीमेल तो नहीं है, जिस द्वारा एडाप्शन होती है; यह बहुत गुह्य समझने की बातें हैं, जो फिर प्राय:लोप हो जानी हैं।**

SM, Revised 30.05.2019
शिवबाबा एडाप्ट करते हैं, ब्रह्मा द्वारा। मेला भी लगता है। **वास्तव में मेला वहाँ लगना चाहिए, जहाँ ब्रह्मपुत्रा बड़ी नदी सागर में जाकर मिलती है। उस संगम पर मेला लगना चाहिए। यह मेला यहाँ है।** ब्रह्मा बैठा है, तुम जानते हो बाप भी है, और बड़ी मम्मा भी तो यह है। परन्तु मेल है, इसलिए मम्मा को मुकरर किया जाता है कि तुम इन माताओं को सम्भालो।

SM, Revised 11.09.2018

परमपिता परमात्मा का यह लोन लिया हुआ शरीर है, इनको मंगल मिलन कहा जाता है। **'कुम्भ का मेला' कहा जाता है ना। कुम्भ को भी संगम कहेंगे। 3 नदियों के संगम का नाम 'कुम्भ' रख दिया है। सबसे बड़ा संगम कौन-सा है? सागर और नदियों का। सबसे बड़ी नदी है ब्रह्मपुत्रा। उसमें बाबा आते हैं, इसलिये सागर और ब्रह्मपुत्रा नदी का इकट्ठा मेला तो है ही। अब कुम्भ का मेला है - संगम पर।** तुम सब ज्ञान सागर बाप से मिलते हो, इसको ईश्वरीय कुम्भ का मेला कह सकते हैं। यह है आत्माओं और परमात्मा का संगम। कुम्भ वा संगम, बात एक ही है।

SM, Revised 30.05.2018

तुम सब इस समय ज्ञान नदियाँ हो। ब्रह्मपुत्रा नदी का छोर (किनारा) सागर में होता है। **कलकत्ता में ब्रह्मपुत्रा नदी है। शिव-जयन्ती पर वहाँ भारी मेला लगता है। ब्रह्मपुत्रा नदी और सागर के संगम पर, सब यात्री जाते हैं। वहाँ जाकर सब स्नान करते हैं। शिवबाबा है ज्ञान सागर, और यह ब्रह्मा है नदी। अभी तुम आये हो ब्रह्मा नदी-शिव सागर के मेले पर। परन्तु यह सब हैं ज्ञान की बातें।** ज्ञान सागर से तुम निकले हो। ज्ञान स्नान से ही सबका कल्याण होना है। पानी की बात नहीं। यह ब्रह्मपुत्रा ब्रह्मा है, शिवबाबा की सन्तान। तीर्थों का राज़ भी तुम समझते हो। हम बुद्धियोग की यात्रा पर हैं। बुद्धियोग लगाते हैं, परमपिता परमात्मा साथ।

SM, Revised 13.12.2017

अच्छा, बाबा कुम्भ के मेले पर समझाते हैं - बहुत स्नान करने जायेंगे, बहुत भीड़ होगी। इलाहाबाद में त्रिवेणी पर मेला लगता है। **अभी वह कोई संगम तो है नहीं! संगम होना चाहिए सागर और नदियों का। यह तो नदियों का संगम है। दो नदियाँ मिलती हैं। वह फिर कह देते तीसरी नदी गुप्त है। अब गुप्त नदी कोई होती नहीं! हैं ही दो नदियां। देखने में भी दो आती हैं।** एक का पानी सफेद, एक का मैला, दिखाई देता है, और तो कोई है नहीं। गंगा, जमुना हैं। तीन नहीं हैं। यह भी झूठ हुआ ना? संगम भी नहीं है! **कलकत्ते में सागर और ब्रह्मपुत्रा मिलती हैं। नांव में बैठकर उस पार जाते हैं, वहाँ मेला लगता है। कितनी मेहनत करते हैं।**

SM, Revised 08.04.2016

तुम बच्चे शिवबाबा से वर्सा लेते हो। ब्रह्मा कोई स्वर्ग का रचयिता वा ज्ञान सागर नहीं है। ज्ञान का सागर एक ही बाप है। आत्मा का बाप ही ज्ञान का सागर है। आत्मा भी (मास्टर) ज्ञान सागर बनती है, परन्तु इनको ज्ञान सागर नहीं कहेंगे क्योंकि सागर एक ही है। तुम सब नदियाँ हो। सागर को अपना शरीर नहीं है। नदियों को है। तुम हो ज्ञान नदियाँ। **कलकत्ता में ब्रह्मपुत्रा नदी बहुत बड़ी है क्योंकि उनका सागर से कनेक्शन है। उनका मेला बहुत बड़ा लगता है। यहाँ भी मेला लगता है। सागर और ब्रह्मपुत्रा दोनों कम्बाइन्ड हैं। यह है चैतन्य, वह है जड़। यह बातें बाप समझाते हैं। शास्त्रों में नहीं हैं।**

88] बंगाल - कलकत्ता

AV Original 08.06.1971

कलकत्ता में सर्विस का साधन तो स्थापन कर लिया है, लेकिन जैसे सर्विस के साधन की स्थापना की है, वैसे पालना का रूप अभी विस्तार को पाना चाहिए। **कलकत्ते के म्यूजियम द्वारा सभी आत्माओं को कैसे शान्ति का वरदान प्राप्त हो सके!** क्योंकि कलकत्ता में अशान्ति ज्यादा है ना। तो इतना आवाज़ फैलना चाहिए, जो गवर्नमेन्ट तक यह आवाज़ जाये कि इस स्थान द्वारा शान्ति सहज प्राप्त हो सकती है। गवर्नमेन्ट द्वारा शान्ति-दल के रूप में ऑफर (offer) हो सकती है। जैसे जेल (jail) आदि में भाषण के लिए ऑफर करते हैं। क्योंकि पापात्माओं को पुण्यात्मा बनाने का साधन है, तब निमन्त्रण देते हैं। ऐसे ही कहाँ अशान्ति होगी, तो यह शक्ति-दल शान्ति-दल समझा जायेगा। ऐसी भी गवर्नमेन्ट द्वारा ऑफर होगी, तब तो आफरीन गाई जायेगी। ऐसा कुछ प्लैन बनाओ जो आवाज़ फैले चारों ओर। **अशान्ति के बीच यह शान्ति-दल सेफ्टी का साधन है - ऐसे तुम प्रसिद्ध हो जायेंगे।** जैसे भट्ठी के प्रोग्राम का गायन है। आग जलते हुए भी वह स्थान सेफ्टी का साधन रहा। चारों ओर आग होगी लेकिन यह एक ही स्थान शान्ति का है - ऐसा अनुभव करेंगे। इसी स्थान से ही हमको सेफ्टी वा शान्ति मिल सकती है। **यह पालना का कर्त्तव्य बढ़ाओ।** वह तब होगा जब कोई एक स्थान बनाओ जो विशेष (योग) अभ्यास का हो, जिसमें जाने से ही ऐसा अनुभव करें कि ना मालूम हम कहाँ आ गये हैं। स्थान भी अवस्था को बढ़ाता है। मधुबन का स्थान ही स्थिति को बढ़ाता है ना। **तो ऐसा कोई स्थान बनाओ जो कोई कभी भी परेशान-दु:खी आत्मा हो, चिन्ता में डूबी हुई हो, तो वह आने से ही महसूस करे कि हम कहाँ आये हैं। ऐसा प्लैन बनाओ।**

AV Original 01.02.1979

बंगाल, बिहार का ज़ोन तो श्रृंगार करना जानता है, …

साकार तन को ढूंढा भी यहाँ से ही है। तो स्थान की विशेषता रही ना? जैसे गवर्मेन्ट को किस स्थान से कोई विशेष अमूल्य वस्तु मिलती है, तो उस स्थान का महत्व रहता है - नामीग्रामी रहती है - हिस्ट्री में आ जाती है। **ऐसे यह स्थान भी बाप की हिस्ट्री में विशेष स्थान है। आगे चलकर इस स्थान का महत्व विश्व में महत्वपूर्ण होगा** - जैसे देहली की विशेषता अपनी है, बाम्बे की अपनी है। इस स्थान (कलकत्ता) का महत्व भी बहुत बड़ा अपना है, इसलिए आगे चलकर और भी इस स्थान को विशेष भूमि की रीति से देखेंगे और सुनेंगे। **ऐसे विशेष भूमि के निवासी भी विशेष आत्मायें हो।** भूमि के साथ आप लोग के भाग्य का भी सब वर्णन करेंगे।

AV Original 14.11.1979

बंगाल - (कलकत्ता): कलकत्ता निवासी क्या प्लान बना रहे हैं? मेले तो बहुत किये - अभी क्या सोचा है? अभी हर वर्ष में कोई नया प्लान बनाना चाहिए।

कलकत्ता भक्तिमार्ग में भी मशहूर है - वहाँ की विशेषता है बलि चढ़ने की। जैसे भक्तिमार्ग की बलि मशहूर है, वैसे ज्ञान में महाबलि चढ़ने वाले ज्यादा होंगे ना। **एक तरफ भक्ति का फोर्स, दूसरी तरफ ज्ञान का फोर्स।** मेले के साथ अभी और कोई विधि अपनाओ। **जितना बड़ा कलकत्ता है, उतनी बड़ी आवाज़ हो। पुरानी गद्दी का स्थान है, तो और कोई ऊंची आवाज़ निकालो।**

AV Original 09.03.1981

आबू में इकट्ठा करें, तो आबूरोड़ तक अपना बनाना पड़े। वह भी दिन आयेगा जो सब आफर करेंगे कि हमारे मकान में आओ। **कलकत्ता का विक्टोरिया ग्राउण्ड आपको तैयार करके देंगे।** कहेंगे आओ - पधारो। धीरे-धीरे आवाज फैलेगी। अभी यह तो समझते हैं ना कि यह कोई कम नहीं हैं। ब्रह्मा बाप के अव्यक्त होने के बाद, इतना संगठन हो, यह देखकर बलिहारी जाते हैं। **सब जगह संस्था टूटती है, यहाँ बढ़ती है, यह कमाल देखते हैं।** सभी ने अपने-अपने शुद्ध संकल्प से, सहयोग की शक्ति, संगठन की शक्ति से, सेवा की। अभी सब जगह से निमन्त्रण मिलेगा। **यह राष्ट्रपति भवन आपका घर हो जायेगा।**

AV Original 06.11.1981

विशेष आत्माओं की सभा में बैठे हो ना! और ग्रुप भी विशेष है। दोनों ही गद्दी वाले हैं। एक प्रवेशता की गद्दी, दूसरी राजगद्दी। वह राज्य की चाबी मिलने की गद्दी (कलकत्ता), और वह है राज्य करने की गद्दी (दिल्ली); तो दोनों ही गद्दी हो गई ना! तो दोनों की विशेषता हुई ना! **चाबी नहीं मिलती, तो राज्य भी नहीं करते। इसलिए विशेषता को नहीं भूलना!**

AV Original 11.11.1981

इस बारी मेले में शान्ति कुण्ड बनाना। जिससे सब समझें कि यहाँ आवाज होते भी शान्ति है। वृत्ति और अनुभूति ही बदल जाए।

(बापदादा कलकत्ते में आवें) **जरूर – हाँ, वह समय दिखायेगा, क्योंकि बच्चे बुलावें, बाप न आवें - यह हो नहीं सकता। लेकिन किस रीति से आयेंगे यह देखना।** कुछ नया होना चाहिए ना!

AV Original 19.01.1995

बंगाल, बिहार, उड़ीसा, नेपाल, आसाम - ये पांच नदियाँ इकट्ठी हैं। अच्छा है, पांचों का मिलन है। **सबसे पहले बंगाल (कलकत्ता) में सूर्योदय होता है** तो माया का अंधकार तो आ नहीं सकता। अच्छा है, अभी थोड़ी और संख्या को बढ़ाओ। कोई वारिस निकालो, पांच प्रदेश हैं, तो पांचों प्रदेशों से अच्छे से अच्छे वारिसों को स्टेज पर लाओ। अगर गुप्त हैं, तो स्टेज पर लाओ। अगर नहीं हैं, तो निकालो। दूसरे सीजन में सबसे ज्यादा संख्या इन पांच नदियों की होनी चाहिये।

AV Original 18.01.2005

अच्छा, **ब्रह्मा बाप के प्रत्यक्ष होने की भूमि (आदि में) कलकत्ता है, तो बापदादा के प्रत्यक्ष होने की भूमि (अंत में) कौन सी होगी?** कलकत्ता होगी? क्या करेंगे? बडा प्रोग्राम तो कर लिया। अभी क्या करेंगे? कोई कमाल करके दिखाओ। **जहाँ से आदि हुई, वहाँ समाप्ति भी हो।** सभी कलकत्ता की भूमि को प्रणाम करें, वाह! कलकत्ता निवासी, वाह! ऐसा कोई कमाल का प्रोग्राम बनाओ। नया कुछ बनाओ। मेगा प्रोग्राम अभी बहुत हो गये। **अभी कोई नया प्रोग्राम बनाओ।**

AV Original 02.02.2008

तो बंगाल वालों ने कोई नवीनता दिखाई? कोई नया कार्य किया है? कोई इन्वेन्शन की है? की है? **क्योंकि बंगाल (कलकत्ता) में बाप की पधरामणी हुई है, प्रवेशता हुई है।** तो नया कार्य करना है ना! कोई नई इन्वेन्शन निकालो, …

89] <u>इस्टर्न जोन – (कलकत्ता)</u>

AV Original 15.04.1984

ईस्टर्न जोन भी आया है, ईस्ट की विशेषता क्या होती है? (सनराइज) सूर्य सदा उदय होता है। सूर्य अर्थात् रोशनी का पुंज। **तो सभी ईस्टर्न जोन वाले मास्टर ज्ञान सूर्य हैं। सदा अंधकार को मिटाने वाले, रोशनी देने वाले हैं ना! यह विशेषता है ना।** कभी माया के अंधकार में नहीं आने वाले। अंधकार मिटाने वाले मास्टर दाता हो गये ना! सूर्य दाता है ना। तो सभी मास्टर सूर्य अर्थात् मास्टर दाता बन, विश्व को रोशनी देने के कार्य में बिजी रहते हो ना। जो स्वयं बिजी रहते हैं, फुर्सत में नहीं रहते, माया को भी उन्हों के लिए फुर्सत नहीं होती। तो ईस्टर्न जोन वाले क्या समझते हो? ईस्टर्न जोन में माया आती है? आती भी है तो नमस्कार करने आती, या मिक्की माउस बना देती है? क्या मिक्की माउस का खेल अच्छा लगता है? **ईस्टर्न जोन की गद्दी है - बाप की गद्दी। तो राजगद्दी हो गई ना!** राजगद्दी वाले राजे होंगे, या मिक्की माउस होंगे? तो सभी मास्टर ज्ञान सूर्य हो? **ज्ञान सूर्य उदय भी वहीं (कलकत्ता) से हुआ है ना। इस्ट से ही उदय हुआ। समझा, अपनी विशेषता? प्रवेशता की श्रेष्ठ गद्दी के अर्थात् वरदानी स्थान की श्रेष्ठ आत्मायें हो। यह विशेषता किसी और जोन में नहीं है। तो सदा अपने विशेषता को विश्व की सेवा में लगाओ। क्या विशेषता करेंगे? सदा मास्टर ज्ञान सूर्य। सदा रोशनी देने वाले मास्टर दाता।**

AV Original 02.11.1987

यह ईस्टर्न जोन है। ईस्टर्न जोन क्या कर रहा है? प्रत्यक्षता का सूर्य कहाँ से उदय करेंगे? बाप में प्रत्यक्षता हुई, वह बात तो अब पुरानी हो गई। लेकिन अब क्या करेंगे? पुरानी गद्दी है - यह तो नशा अच्छा है, लेकिन अब क्या करेंगे? अभी कोई नवीनता का सूर्य उदय करो, जो सब के मुख से निकले कि यह ईस्टर्न जोन से नवीनता का सूर्य प्रकट हुआ! **जो कार्य अभी तक किसी ने न किया हो, वह अब करके दिखाओ।** फंक्शन, सेमीनार किये, आई.पी. (विशिष्ट व्यक्ति) की सेवा की, अखबारों में डाला - यह तो सभी करते, लेकिन नवीनता की कुछ झलक दिखाओ। समझा?

AV Original 17.11.1994

इस्टर्न जोन (बंगाल, बिहार, उड़ीसा, आसाम, नेपाल):-

पांच नदियां मिलकर इस्टर्न जोन बना है। तो इस्टर्न जोन क्या करके दिखायेंगे? सदा स्वयं कम्बाइन्ड स्वरूप, मास्टर सर्वशक्तिमान अनुभव करेंगे। सबसे ज्यादा विस्तार ईस्टर्न जोन का है। देखो, नेपाल भी इस्टर्न में आ गया, इस्टर्न में फॉरेन भी आ गया, तो कितना बड़ा है। बड़ा जोन है तो बड़ा ही दिखायेंगे ना। **इस्टर्न जोन महान लक्की जोन है। क्यों लक्की है? क्योंकि ब्रह्मा बाप की कर्म भूमि और प्रवेशता भूमि है।** इसलिये सदा कम्बाइन्ड स्वरूप में रहने वाले मास्टर सर्वशक्तिमान आत्मायें हैं - ये प्रैक्टिकल में दिखायेंगे ना। सेकण्ड भी अलग नहीं होना। कम्बाइन्ड कभी अलग नहीं होता। सदा साथ और सदा साथ रहकर, औरों को भी साथ में मिलाने वाला।

AV Original 31.12.2005

अच्छा, कितने भी हो लेकिन ईस्टर्न जोन की विशेषता है कि सूर्य ईस्ट से ही निकलता है। निकलता है ना? **और ज्ञान सूर्य की प्रवेशता भी ईस्ट (कलकत्ता) से हुआ है।** अच्छा, अभी बाकी क्या रहा है? एक काम रह गया है। **जब दो बातें कर ली हैं, सूर्य भी उदय हुआ, ज्ञान सूर्य भी उदय हुआ, लेकिन प्रत्यक्षता का झण्डा ईस्टर्न से होना चाहिए।** हाँ उसके

लिए कुछ करो। ऐसा प्लैन बनाओ जो प्रत्यक्षता का झण्डा आरम्भ ही ईस्टर्न से हो, फैलेगा तो विश्व में ही। यहाँ बैठकर मीटिंग करना, क्या करें; हर एक जोन समझता है हम निमित्त बनेंगे, प्रत्यक्षता का झण्डा फहराने के लिए। करो, सब प्रयत्न करो; लेकिन बापदादा कहते **ईस्टर्न को नम्बरवन जाना चाहिए।** जायेंगे? प्रत्यक्ष करना पड़ेगा। आवाज फैलाना पड़ेगा।

104] अंत तक दाल-रोटी जरूर मिलेगी

AV, Original 24.02.1985

स्थूल सम्पत्ति किसलिए कमाते हैं? दाल-रोटी सुख से खावें, परिवार सुखी हो, दुनिया में नाम अच्छा हो! आप अपने को देखो, कितने सुख और खुशी की दाल-रोटी मिल रही है। **जो गायन भी है - 'दाल-रोटी खाओ, भगवान के गीत गाओ'। ऐसे गायन की हुई दाल-रोटी खा रहे हो। और ब्राह्मण बच्चों को बापदादा की गैरन्टी (guarantee) है - ब्राह्मण बच्चा दाल-रोटी से वंचित हो नहीं सकता। आसक्ति वाला खाना नहीं मिलेगा, लेकिन दाल-रोटी जरूर मिलेगी।** दाल-रोटी भी है, परिवार भी ठीक है, और नाम कितना बाला है! इतना आपका नाम बाला है, जो आज लास्ट जन्म तक आप पहुँच गये हो। लेकिन आपके जड़ चित्रों के नाम से अनेक आत्मायें अपना काम सिद्ध कर रही हैं। नाम आप देवी-देवताओं का लेते हैं - काम अपना सिद्ध करते हैं। इतना नाम बाला है। **एक जन्म नाम बाला नहीं होता, सारा कल्प आपका नाम बाला है।** तो सुखमय, सच्चे सम्पत्तिवान हो। बाप के सम्पर्क में आने से आपका भी श्रेष्ठ सम्पर्क बन गया है। **आपका ऐसा श्रेष्ठ सम्पर्क है, जो आपके जड़ चित्रों की सेकण्ड के सम्पर्क की भी प्यासी हैं। सिर्फ दर्शन के सम्पर्क के भी कितने प्यासे हैं! सारी-सारी रातें जागरण करते रहते हैं। सिर्फ सेकण्ड के दर्शन के सम्पर्क के लिए पुकारते रहते हैं। चिल्लाते रहते वा सिर्फ सामने जावें उसके लिए कितना सहन करते हैं! हैं चित्र, और ऐसे चित्र घर में भी होते हैं, फिर भी एक सेकण्ड के सम्मुख सम्पर्क के लिए कितने प्यासे हैं!** एक बेहद के बाप के बनने के कारण सारे विश्व की आत्माओं से सम्पर्क हो गया। बेहद के परिवार के हो गये। विश्व की सर्व आत्माओं से सम्पर्क बन गया। तो चारों ही बातें अविनाशी प्राप्त हैं। इसलिए सदा सुखी जीवन है। प्राप्ति स्वरूप जीवन है। **अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के जीवन में।** यही आपके गीत हैं।

AV, Original 14.12.1983

जो सेवा करता वह मेवा खाता। मेवा खाने वाले सदा तन्दरूस्त रहते हैं। सूखा मेवा खाने वाले नहीं, ताजा मेवा खाने वाले। सेवाधारी सो भाग्य अधिकारी। कितना बड़ा भाग्य है। **यादगार चित्रों के पास जाकर भक्त लोग सेवा करते हैं। उस सेवा को महापुण्य समझते हैं। और आप कहाँ सेवा करते हो! चैतन्य महातीर्थ पर।** वे सिर्फ तीर्थों पर जाकर चक्कर लगाकर आते, तो भी महान आत्मा गाये जाते। आप तो महान तीर्थ पर सेवा कर, महान भाग्यशाली बन गये। **सेवा में तत्पर रहने वाले के पास माया आ नहीं सकती। सेवाधारी माना मन से भी सेवाधारी, तन से भी सेवा में बिजी रहने वाले। तन के साथ मन भी बिजी रहे तो माया नहीं आयेगी।** तन से स्थूल सेवा करो और मन से वातावरण, वायुमण्डल को शक्तिशाली बनाने की सेवा करो। डबल सेवा करो, सिंगल नहीं। **जो डबल सेवाधारी होगा, उसको प्राप्ति भी इतनी होगी। मन का भी लाभ, तन का भी लाभ - धन तो अकीचार (अथाह) मिलना ही है। इस समय भी सच्चे सेवाधारी कभी भूखे नहीं रह सकते। दो रोटी जरूर मिलेगी।** तो सभी ने सेवा की लॉटरी (lottery) में अपना नम्बर ले लिया। जहाँ भी जाओ, जब भी जाओ, यह खुशी सदा साथ रहे क्योंकि बाप तो सदा साथ है। खुशी में नाचते-नाचते सेवा का पार्ट बजाते चलो।

मिनी मधुबन

106] मिनी मधुबन - अव्यक्त मधुबन; संगमयुग है ही मिलने का युग; साकार रूप से व आकारी रूप से मिलन - दोनों मिलना मीठा है। मिलने की शुभ आशा ही, माया-जीत बना देती है!

AV, Original 25.10.1969
बापदादा अभी स्नेह का रिटर्न देते हैं। अभी जाने के बाद देखेंगे। जाते हो, आने के लिये। जाना और आना। जाना तो है ही। लेकिन जाना है, आने के लिये। **जितना-जितना अव्यक्त स्थिति के अनुभवी होते जायेंगे, उतना ही अव्यक्त मधुबन में आकर्षित हो आयेंगे। अब व्यक्त मधुबन नहीं है।**

AV, Original 06.12.1969
साकार रूप में स्नेह मिलना कोई छोटी बात नहीं है। उसके लिए तो आगे चलकर, जब रोना देखेंगे, तब आप लोगों को उसकी वैल्यू का मालूम होगा। रो-रोकर आप के चरणों में गिरेंगे। स्नेह की एक बूँद की प्यासी हो चरणों में गिरेंगे। आप लोगों ने स्नेह के सागर को अपने में समाया है। वह एक बूँद के भी प्यासे रहेंगे। ऐसा सौभाग्य किसका हो सकता है? सर्व सम्बन्धों का सुख, रसना - जो आप आत्माओं में भरी हुई है, वह और कोई में नहीं हो सकती। **तो ड्रामा में अपने इतने ऊँच भाग्य को सदैव सामने रखना। सामने रखने से, रिटर्न देना आपेही याद आयेगा।**

AV, Original 21.05.1970
बापदादा सभी को मास्टर नॉलेजफुल बनाने की पढ़ाई पढ़ाते हैं। प्रैक्टिकल में भगवान् के जितना साकार सम्बन्ध में नजदीक आएंगे, उतना पुरुषार्थ में भी नजदीक आयेंगे।

AV, Original 07.06.1970
जैसे बाप सर्व-समर्थ है, तो बच्चों को भी मास्टर सर्व-समर्थ बनना है। **विनाश के पहले अगर स्नेह के साथ सहयोगी बनेंगे, तो वर्से के अधिकारी बनेंगे। विनाश के समय भल सभी आत्माएं पहचान लेंगी, लेकिन वर्सा नहीं पा सकेंगी क्योंकि सहयोगी नहीं बन सकेंगी।**

AV, Original 10.09.1975
'प्रत्यक्ष फल का वरदान' सिर्फ संगमयुग को है। अभी-अभी देना, अभी-अभी मिलना। पहले देखते हो - फिर करते हो - पक्के सौदागर हो। **संगमयुग की विशेषता है कि इस युग में ही बाप भी प्रत्यक्ष होते हैं, ऊंच ते ऊंच ब्राह्मण भी प्रत्यक्ष होते हैं। आप सबके 84 जन्मों की कहानी भी प्रत्यक्ष होती है। श्रेष्ठ नॉलेज भी प्रत्यक्ष होती है।**

AV, Original 31.05.1977
सब से बड़े ते बड़ा संगमयुग का फल है, जो स्वयं बाप प्रत्यक्ष रूप में मिलता। **परमात्मा भी साकार रूप में, साकार मनुष्य रूप में मिलने आता। इस फल में और सब फल आ जाते।**

AV, Original 18.01.1978

हज़ार भुजा वाले ब्रह्मा के रूप का वर्तमान समय पार्ट चल रहा है, तब तो साकार सृष्टि में इस रूप का गायन और यादगार है। भुजाएं बाप के बिना कर्त्तव्य नहीं कर सकतीं। भुजाएं बाप को प्रत्यक्ष करा रही हैं। कराने वाला है, तब तो कर रहे हैं। जैसे आत्मा के बिना, भुजा कुछ नहीं कर सकती - वैसे बाप-दादा कम्बाइन्ड (combined) रूप की सोल (soul) के बिना, भुजाएं रूपी बच्चे क्या कर सकते? हर कर्त्तव्य में अन्त तक पहले कार्य का हिस्सा ब्रह्मा का ही तो है। **ब्रह्मा अर्थात् आदि देव। आदि देव अर्थात् हर शुभ कार्य की आदि करने वाला। बाप-दादा के आदि करने के बिना, अर्थात् आरम्भ करने के बिना, कोई भी कार्य सफल कैसे हो सकता?**

AV, Original 24.01.1978

जैसे मधुबन में मेला है, वैसे अन्त में आत्माओं का मेला भी होने वाला है। मधुबन अच्छा लगता है, या विदेश अच्छा लगता है? मधुबन किसको कहा जाता है? जहाँ ब्राह्मणों का संगठन है, वह मधुबन है - तो हरेक विदेश के स्थान को मधुबन बनाओ। **मधुबन बनावेंगे तो बाप-दादा भी आयेंगे। क्योंकि बाप का वायदा है कि मधुबन में आना है। तो जहाँ मधुबन, वहाँ बाप-दादा। आगे चल कर बहुत वन्डर्स देखेंगे।** अभी जैसे भारत की संख्या बढ़ती जा रही है, वैसे थोड़े समय में विदेश की संख्या बढ़ाओ। जहाँ रहते हो वहाँ चारों ओर आवाज़ फैल जाए। क्वेश्चन उत्पन्न हो कि यह कौन है, और क्या है। **जब ऐसे संगठन तैयार करेंगे - तो जहाँ संगठन है, वहाँ बाप-दादा भी हाज़िर नाज़िर हैं।** …
मधुबन जैसा नक्शा बनाओ। जब मिनी मधुबन भी होगा, तो सभी को आकर्षण होगी देखने की।

AV, Original 03.12.1979

समझते हो कि हम इतनी श्रेष्ठ आत्मायें हैं, जो स्वयं परम आत्मा - बाप, शिक्षक और सतगुरू बने हैं। इससे बड़ा भाग्य और किसी का हो सकता है? **ऐसा भाग्य तो कभी सोचा भी नहीं होगा कि सर्व सम्बन्धों से परम-आत्मा मिल जायेगा। यह असम्भव बात भी सम्भव साकार में हो रही है, तो कितना भाग्य है। सिर्फ बाप नहीं, लेकिन शिक्षक और सतगुरू भी बनें।** जैसे भक्त लोग कहते हैं भगवान जब राज़ी हो जाते हैं, तो छप्पर फाड़ कर देते हैं। **तो यह भी इस आकाश तत्व को भी पार कर, देने के लिए आ गये ना। वह तो सिर्फ छप्पर फाड़कर कहते - लेकिन यह तो आकाश तत्व से पार रहने वाले, 5 तत्वों को भी पार करके प्राप्ति करा रहे हैं, तो कितने भाग्यशाली हुए।** ऐसा भाग्य सदा याद रहे।

AV, Original 14.10.1981

विधाता द्वारा अविनाशी तकदीर की लकीर खिंचवा सकते हो। क्योंकि भाग्य विधाता - दोनों बाप इस समय बच्चों के लिए हाजिर-नाजिर हैं। जितना भाग्य विधाता से भाग्य लेने चाहो उतना अब ले सकते हो। इस समय ही भाग्य-दाता भाग्य बाँटने के लिए आयें हैं।

AV, Original 17.03.1982

कितने भाग्यवान हो जो भगवान के साथ पिकनिक (picnic) कर रहे हो! **ऐसा कब सोचा था - कि ऐसा दिन भी आयेगा जो साकार रूप में भगवान के साथ खायेंगे, खेलेंगे, हंसेंगे .. यह स्वप्न में भी नहीं आ सकता, लेकिन इतना श्रेष्ठ भाग्य है, जो साकार में अनुभव कर रहे हो।** कितनी श्रेष्ठ तकदीर की लकीर है - जो सर्व प्राप्ति सम्पन्न हो।

AV, Original 24.02.1983

आकार रूप में भी मिलन मनाते - फिर भी साकार रूप द्वारा मिलने की शुभ आशा सदा ही रहती है, सब दिन गिनती करते रहते कि आज हमको मिलना है, यह संकल्प हर बच्चे का बापदादा के पास पहुँचता रहता है - और बापदादा भी यही रेसपान्ड देने के लिए, हर बच्चे को याद करते रहते हैं। इसलिए आज मुरली चलाने नहीं, लेकिन मिलने का संकल्प पूरा करने के लिये आये हैं। कोई-कोई बच्चे दिल ही दिल में मीठे-मीठे उल्हनें भी देते हैं कि हमें तो बोल द्वारा मुलाकात नहीं कराई। **बापदादा भी हरेक बच्चे से दिल भर-भर के मिलने चाहते हैं। लेकिन समय और माध्यम को देखना पड़ता है।** आकारी रूप से एक ही समय पर, जितने चाहें, जितना समय चाहें, उतना समय, और उतने सब मिल सकते हैं। उसके लिए टर्न (turn) आने की बात नहीं है। **लेकिन जब साकार सृष्टि में, साकार तन द्वारा मिलन होता है, तो साकारी दुनिया और साकार शरीर के हिसाब को देखना पड़ता है।** आकारी वतन मे कभी दिन मुकरर होता है क्या कि फलाना ग्रुप फलाने दिन मिलेगा - वा एक घण्टे के बाद, आधा घण्टे के बाद मिलने के लिए आना? यह बन्धन आपके वा बाप के सूक्ष्मवतन में, सूक्ष्म शरीर में नहीं है। आकारी रूप से मिलन मनाने के अनुभवी हो ना? वहाँ तो भल सारा दिन बैठ जाओ, कोई उठाएगा नहीं। यहाँ तो कहेंगे अभी पीछे जाओ, अभी आगे जाओ। **फिर भी दोनों मिलना मीठा है।**

AV, Original 05.04.1983

बापदादा आपस में रूह-रूहान कर रहे थे। ब्रह्मा बोले - ब्राह्मणों की वृद्धि तो यज्ञ समाप्ति तक होनी है। **लेकिन साकारी सृष्टि में, साकारी रूप से मिलन मेला मनाने की विधि, वृद्धि के साथ-साथ, परिवर्तन तो होगी ना!** …

लोन ली हुई पुरानी वस्तु को चलाने की विधि भी देखनी होगी ना? तो शिव बाप मुस्कराते हुए बोले कि तीन सम्बन्धों से, तीन रीति की विधि, वृद्धि प्रमाण परिवर्तन हो ही जायेगा। वह क्या होगा?

बाप रूप से विशेष अधिकार है - मिलन की विशेष 'टोली'। और **शिक्षक के रूप में** 'मुरली'। **सतगुरू के रूप में** 'नजर से निहाल' - अर्थात् अव्यक्त मिलन की रूहानी स्नेह की दृष्टि। **इसी विधि के प्रमाण, वृद्धि को प्राप्त होने वाले बच्चों का स्वागत और मिलन मेला चलता रहेगा।**

AV, Original 03.05.1984

साकार स्वरूप में साकारी सृष्टि पर आत्मा और परमात्मा के मिलन, और सर्व सम्बन्ध के प्रीति की रीति का अनुभव, परमात्म अविनाशी खज़ानों का अधिकार, **साकार स्वरूप से ब्राह्मणों का ही यह गीत है – 'हमने देखा, हमने पाया, शिव बाप को ब्रह्मा बाप द्वारा'। यह देवताई जीवन का गीत नहीं है। साकार सृष्टि पर इस साकारी नेत्रों द्वारा दोनों बाप को देखना, उनके साथ खाना-पीना, चलना, बोलना, सुनना, हर चरित्र का अनुभव करना, विचित्र को चित्र से देखना - यह श्रेष्ठ भाग्य ब्राह्मण जीवन का है।**

AV, Original 11.05.1984

संगमयुग है ही मिलने का युग। जितना मिलेंगे उतना और मिलने की आशा बढ़ेगी। और मिलने की शुभ आशा होनी भी चाहिए। क्योंकि यह मिलने की शुभ आशा ही माया-जीत बना देती है। …

तो सदा मिलन मेला होता ही रहेगा। चाहे व्यक्त द्वारा, चाहे अव्यक्त द्वारा। सदा साथ ही रहते हैं - फिर मिलने की आवश्यकता ही क्या? हर मिलन का अपना-अपना स्वरूप और प्राप्ति है। **अव्यक्त मिलन अपना, और साकार मिलन अपना। मिलना तो अच्छा ही है।**

107] शिव शक्ति, पाण्डव सेना

AV, Original 21.01.1969
तो विचार सागर मंथन करो, हलचल का मंथन न करो। जो शक्ति ली है, उनको प्रत्यक्ष में लाओ। **'भारत माता शक्ति अवतार' अन्त का यही नारा है। 'सन शोज फादर'। ड्रामा की नूंध करायेगी।** साकार बाबा ने कहा - मैं बच्चों से मिलन मनाने आऊंगा। अगर आज आ जाता तो बच्चे आंसू बहा देते।

AV, Original 31.05.1972
अपने आपको सदा शिवशक्ति समझ कर हर कर्म करती हो? अपने अलंकार वा अष्ट भुजाधारी मूर्त सदा अपने सामने रहती है? अष्ट भुजाधारी अर्थात् अष्ट शक्तिवान। तो सदा अपने अष्ट शक्ति-स्वरूप स्पष्ट रूप में दिखाई देते हैं? **शक्तियों का गायन है ना - शिवमई शक्तियाँ। तो शिव बाबा की स्मृति में सदा रहती हो? शिव और शक्ति - दोनों का साथ-साथ गायन है। जैसे आत्मा और शरीर, दोनों का साथ है - जब तक इस सृष्टि पर पार्ट है, तब तक अलग नहीं हो सकते। ऐसे ही शिव और शक्ति - दोनों का भी इतना ही गहरा सम्बन्ध है, जो गायन है शिवशक्तिपन का।** तो ऐसे ही सदैव साथ का अनुभव करती हो वा सिर्फ गायन है? सदा साथ ऐसा हो जो कोई भी कब इस साथ को तोड़ न सके, मिटा न सके। **ऐसे अनुभव करते हुए सदा शिवमई शक्ति-स्वरूप में स्थित होकर चलो, तो कब भी दोनों की लगन में माया विघ्न डाल नहीं सकती। कहावत भी है – दो, दस के बराबर होते हैं। तो जब शिव और शक्ति दोनों का साथ हो गया, तो ऐसी शक्ति के आगे कोई कुछ कर सकता है? इन डभले शक्तियों के आगे और कोई भी शक्ति अपना वार नहीं कर सकती, वा हार खिला नहीं सकती!**

AV, Original 18.01.1982
सब क्या कहते हैं? 'बाबा को देखा, बाबा को पाया'। तो अनुभव कराने वाले, प्रत्यक्ष करने वाले कौन? आप ताजधारी विशेष आत्मायें! **अभी जल्दी, फिर से, ब्रह्मा बाप और ब्रह्मा वत्स शक्तियों के रूप में, शक्ति में शिव समाया हुआ - शिव शक्ति और साथ में ब्रह्मा बाप - ऐसे साक्षात्कार चारों ओर शुरू हो जायेंगे।** ब्रह्माकुमारी के बजाए ब्रह्मा बाप दिखाई देगा। **साधारण स्वरूप के बजाए शिवशक्ति स्वरूप दिखाई देगा।** जैसे आदि में साकार की लीला देखी। ऐसे ही अन्त में भी होगी। **सिर्फ अभी एडीशन (addition) 'शिवशक्ति' स्वरूप का भी साक्षात्कार होगा।** फिर भी साकार पिता तो ब्रह्मा है ना। तो साकार रूप में आये हुए बच्चे बाप को देखेंगे और अनुभव जरूर करेंगे। यह भी समाचार सुनेंगे।

AV, Original 28.01.1985, Revised 15.09.2019
आज सर्वशक्तिवान बाप अपने शक्ति सेना, पाण्डव सेना, रूहानी सेना को देख रहे हैं। सेना के महावीर अपनी रूहानी शक्ति से कहाँ तक विजयी बने हैं। विशेष तीन शक्तियों को देख रहे हैं। हर एक महावीर आत्मा की मंसा शक्ति कहाँ तक स्व परिवर्तन प्रति और सेवा के प्रति धारण हुई है? ऐसे ही वाचा शक्ति, कर्मणा शक्ति अर्थात् श्रेष्ठ कर्म की शक्ति कहाँ तक जमा की है? **विजयी रत्न बनने के लिए यह तीनों ही शक्तियाँ आवश्यक हैं।**

AV, Original 18.01.1985, Revised 25.08.2019
आज समर्थ दिवस पर, समर्थ बाप अपने समर्थ बच्चों को देख रहे हैं। आज का दिन, विशेष ब्रह्मा बाप द्वारा, विशेष बच्चों को समर्थी का वरदान अर्पित करने का दिन है। **आज के दिन बापदादा अपनी शक्ति सेना को विश्व की स्टेज पर लाते - तो साकार स्वरूप में, शिव शक्तियों का प्रत्यक्ष रूप में पार्ट बजाने का दिन है। शक्तियों द्वारा शिव बाप प्रत्यक्ष हो, स्वयं गुप्त रूप में पार्ट बजाते रहते हैं।**

SM, Revised 06.01.2020
श्रीमत पर तुम भारत की ऊंच ते ऊंच सेवा अपने तन-मन-धन से कर रहे हो। कांग्रेसी लोग कितना जेल आदि में गये। तुमको तो जेल आदि में जाने की दरकार नहीं। तुम्हारी तो है ही रूहानी बात। तुम्हारी लड़ाई भी है 5 विकारों रूपी रावण से - जिस रावण का सारे पृथ्वी पर राज्य है। तुम्हारी यह सेना है। लंका तो एक छोटा टापू है। यह सृष्टि बेहद का टापू है। तुम बेहद के बाप की श्रीमत पर सबको रावण की जेल से छुड़ाते हो। यह तो तुम जानते हो कि इस पतित दुनिया का विनाश तो होना ही है। **तुम शिव शक्तियाँ हो। शिव शक्ति यह गोप भी हैं। तुम गुप्त रीति भारत की बहुत बड़ी सेवा कर रहे हो।**

SM, Revised 28.12.2018
जो मम्मा की महिमा, सो बाप की महिमा, सो दादे की। ... **बाप बैठ समझाते हैं, यह जगदम्बा कौन है - यह है भारत की सौभाग्य विधाता, इनकी 'शिव शक्ति सेना' भी मशहूर है।** हेड (Head) है जगदम्बा अर्थात् भारत में वन गवर्मेन्ट की स्थापना करने वाली हेड। भारत माता शक्ति अवतारों ने भारत में वन गवर्मेन्ट स्थापन की है, श्रीमत के आधार पर।

SM, Revised 19.12.2018
वह जिस्मानी यात्रा मनुष्य सिखलाते हैं। बुद्धि की यात्रा, बाप के सिवाए कोई सिखलाने वाला नहीं है। यह राजयोग सीखने वाले ही स्वर्ग में आयेंगे। अब फिर से सैपलिंग लग रहा है। हम सब उस बाप के बच्चे हैं, हम बच्चों को शिवबाबा से वर्सा मिलता है। यह दादा (ब्रह्मा) भी शिवबाबा से वर्सा लेते हैं। आप भी बेहद के बाप से वर्सा लो। **यह बड़ी हॉस्पिटल है। हम 21 जन्म के लिए फिर कभी रोगी नहीं बनेंगे। हम भारत की सच्ची सेवा कर रहे हैं, इसलिए गायन है 'शिव शक्ति सेना'।**

SM, Revised 29.11.2018
(सच्ची) गीता है भगवान् की गाई हुई, परन्तु कृष्ण का नाम डाल, खण्डन कर दिया है। तुम बच्चों को अब सबका कल्याण करना है। **तुम हो 'शिव शक्ति सेना'। 'वन्दे मातरम्' गाया हुआ है। वन्दना पवित्र की ही की जाती है।**

SM, Revised 16.11.2018
तो परमपिता परमात्मा आकर, इस ब्रह्मा मुख द्वारा 'शक्ति सेना' रचते हैं। पहले-पहले परिचय देना है, हम ब्रह्मा मुख वंशावली हैं। 'तुम भी ब्रह्मा के बच्चे हो ना। प्रजापिता ब्रह्मा है सबका बाप'।

SM, Revised 30.10.2018

भारत को माताओं द्वारा फिर से स्वर्ग बनाता हूँ। यह है 'शिव शक्ति, पाण्डव सेना'। पाण्डवों की प्रीत एक बाप से है। उन्हों को बाप पढ़ाते हैं। शास्त्र आदि हैं सब भक्ति मार्ग की सामग्री। वह है भक्ति कल्ट। अभी बाप आकर सबको भक्ति का फल ज्ञान देते हैं, जिससे तुम सद्गति में जाते हो। सद्गति दाता सबका बाप एक ही है।

SM, Revised 08.10.2018

बाप कहते हैं - बच्चे, मेरे मददगार बनो, तो मैं तुमको स्वर्ग का मालिक बनाऊंगा। 'हिम्मते मर्दा, मददे खुदा'। गाते तो हैं, 'खुदाई खिदमतगार'। **वास्तव में वह है जिस्मानी सैलवेशन आर्मी। सच्चे-सच्चे रूहानी सैलवेशन आर्मी तुम हो। भारत का बेड़ा जो डूबा हुआ है, उनको सैलवेज करने वाली तुम भारत माता शक्ति अवतार हो। तुम गुप्त सेना हो। शिवबाबा गुप्त, तो उनकी सेना भी गुप्त – 'शिव शक्ति, पाण्डव सेना'।** सच्ची-सच्ची सत्य नारायण की कथा यह है, बाकी सब हैं झूठी कथायें, इसलिए कहते हैं, 'सी नो ईविल, हियर नो ईविल', मैं जो समझाता हूँ वह सुनो।

SM, Revised 28.09.2018

तुम हो जगत अम्बा के बच्चे, 'शिव शक्ति सेना'। एक की तो महिमा नहीं है। तुम भी साथ हो। यह कमान्डर (commander) है। तुमको रूहानी ड्रिल सिखलाते हैं। तुम उनके बच्चे हो। तुम हो लक्की सितारे। यह सरस्वती भी लक्की सितारा है। ब्रह्मा की बेटी है ना। उस ज्ञान सूर्य का चन्द्रमा तो यह (ब्रह्मा) है ना। परन्तु यह मेल (male) होने कारण माता पर कलष रखा जाता है।

SM, Revised 16.06.2018

तुम जानते हो, हम बच्चों में, युद्ध के मैदान में, मुख्य कौन है? ब्रह्मा! सेकेण्ड ग्रेड में मम्मा, सरस्वती। इनका नाम तो बहुत ऊंच है। नाम बाला करना है। यह ब्रह्मा तो गुप्त है। शक्ति सेना में नाम है मम्मा का। जगत अम्बा, ब्रह्मा की बेटी, सरस्वती।

SM, Revised 23.01.2018

यह तो तुम जानते हो - जगत अम्बा सो लक्ष्मी, सो फिर 84 जन्मों का चक्र लगाकर फिर जगत अम्बा बनती है। **झाड़ में देखो जगत अम्बा बैठी है। यही फिर महारानी बनेंगी जरूर, तुम बच्चे भी राजधानी में आयेंगे। तुम कल्प वृक्ष के नीचे बैठे हो। संगम पर फाउन्डेशन लगा रहे हो। कामधेनु के तुम बच्चे ही, सबकी मनोकामना पूर्ण करने वाले हो। तुम भारत माता शक्ति सेना हो - इसमें पाण्डव भी हैं।**

SM, Revised 08.01.2018

तुम हो 'शिव शक्ति, पाण्डव सेना'। पण्डे भी हो, सबको रास्ता बताते हो। तुम्हारे बिगर रूहानी स्वीट होम का रास्ता कोई बता न सके। वह पण्डे लोग तो करके अमरनाथ पर, कोई तीर्थ पर ले जाते हैं। तुम बी.के. तो एकदम सभी से दूर, परमधाम ले जाते हो। वह जिस्मानी गाइड हैं - धक्के खिलाने वाले। तुम सभी को बाप के पास, शान्तिधाम ले जाते हो।

SM, Revised 17.07.2017

तुम यह भी जानते हो, हम श्रीमत पर चल श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ राजधानी स्थापन कर रहे हैं - कल्प पहले मुआफिक। **वह नशा चढ़ना चाहिए ना। गुप्त अननोन वारियर्स (unknown warriors) कहते हैं ना। तुम वास्तव में सच्चे अननोन (unknown) हो, परन्तु 'वेरी वेल नोन' (very well known) हो। वह कहते हैं - अननोन वारियर्स फिर इतना वेल-नोन, जो बड़े आदमी भी जाते हैं फूल चढ़ाने।** तुम भी कितने वेल-नोन बनते हो। तुम्हारे ऊपर कितने फूल चढ़ायेंगे, कितने मन्दिर बनायेंगे। अभी तुमको कोई नहीं जानते हैं। वह तो बन्दूक-बाज़ी आदि से मारे जाते हैं। **तुम भारत को स्वर्ग बना देते हो, फिर तुम विष्णु माला वा रुद्र माला में पिरो जाते हो। परन्तु यह भी कोई समझते नहीं हैं कि 'शिव शक्ति, पाण्डव सेना' ने क्या किया था। अब भी नहीं जानते हैं कि तुम क्या कर रहे हो। तुम कितने जबरदस्त वारियर्स हो।** तुम्हारी वार (युद्ध) किसके साथ है? रावण के साथ।

SM, Revised 31.05.2017

या तो योगबल से विकर्मों को भस्म करना होगा, या तो बहुत कड़ी सजा खानी पड़ेगी। कितने ढेर ब्रह्माकुमार और कुमारियां हैं, सब पवित्र रहते हैं, भारत को स्वर्ग बनाते हैं। **तुम हो 'शिव शक्ति, पाण्डव सेना' - गोप गोपियां, इसमें दोनों आ जाते हैं। भगवान तुमको पढ़ाते हैं।**

गुप्त वेश में बापदादा का पार्ट – Part 1

108] यह पुरे परिवार का साकार सहारा बहुत श्रेष्ठ है; ब्रह्मा का पार्ट स्थापना के कार्य में, अन्त तक नूंधा हुआ है; ब्रह्मा बाप की अब सत्-संकल्प की सेवा है; ब्रह्मा बाप ने भी सेवा स्थान चेन्ज किया - रूप वही, सेवा वही!

AV, Original 28.11.1969
सिर्फ सन्देश देना तो चींटी मार्ग की सर्विस है - यह विहंग मार्ग की सर्विस है। दुनिया के अन्दर यह आवाज फैलाओ कि बापदादा अपने कर्तव्य को कैसे गुप्त वेश में कर रहे हैं। उनको इस स्नेह, सम्बन्ध में लाओ।

AV, Original 18.01.1970
इस वर्ष में पहली परीक्षा कोनसी हुई? इस निश्चय की परीक्षा में हरेक ने कितने-कितने मार्क्स ली? वह अपने आप को जानते हैं। निश्चय की परीक्षा तो हो गयी। अब कौन सी परीक्षा होनी है? **परीक्षा का मालुम होते भी फ़ैल हो जाते हैं। कोई-कोई के लिए यह बड़ा पेपर है, लेकिन कोई-कोई का अब बड़ा पेपर होना है।** जैसे इस पेपर में निश्चय की परीक्षा हुई, वैसे ही अब कौन सा पेपर होना है? **व्यक्त में भी अब भी सहारा है। जैसे पहले भी निमित्त बना हुआ साकार तन सहारा था, वैसे ही अब भी ड्रामा में निमित्त बने हुए साकार में सहारा हैं। पहले भी निमित्त ही थे। अब भी निमित्त हैं। यह पुरे परिवार का साकार सहारा बहुत श्रेष्ठ है।** अव्यक्त में तो साथ है ही। जितना स्नेह होता है, उतना सहयोग भी मिलता है। स्नेह की कमी के कारन सहयोग भी कम मिलता है। **साकार से स्नेह अर्थात् सारे सिजरे से स्नेह। साकार अकेला नहीं हैं। प्रजापिता ब्रह्मा तो उनके साथ परिवार है। माला के मनके हो ना? माला में अकेला मनका नहीं होता है।** माला में एक ही याद के सूत्र में, स्नेह में परिवार समाया हुआ है। तो यह जैसे माला में स्नेह के सूत्र में पिरोये हुए हैं। …

यहाँ पेपर पहले ही सुनाया जाता है। निश्चय का पेपर तो हुआ। लेकिन अब पेपर होना है - हरेक के स्नेह, सहयोग और शक्ति का। अब वह समय नजदीक आ रहा है - जिसमे आप का भी कल्प पहले वाला चित्र प्रत्यक्ष होना है। अनेक प्रकार की समस्याओं को परिवर्तन के लिए ऊँगली देनी है। कलियुगी पहाड़ तो पार होना ही है। लेकिन इस वर्ष में मन की समस्याएं, तन की समस्याएं, वायुमण्डल की समस्याएं सर्व समस्याओं के पहाड़ को स्नेह और सहयोग की अंगुली देनी है। तन की समस्या भी आनी है। **लौकिक सम्बन्ध में तो पास हो गए। लेकिन यह जो अलौकिक सम्बन्ध है, उस सम्बन्ध द्वारा भी छोटी-मोटी समस्याएं आएँगी। लेकिन यह समस्याएं सभी पेपर (paper) समझना, यह प्रैक्टिकल बातें नहीं समझना। यह पेपर समझना। अगर पेपर समझकर उनको पास करेंगे तो पास हो जायेंगे। अभी देखना है पेपर आउट होते भी कितने पास होते हैं।**

AV, Original 30.06.1974
ब्रह्मा का पार्ट स्थापना के कार्य में, अन्त तक नूंधा हुआ है। जब तक, स्थापना का कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है, तब तक निमित्त बनी हुई आत्मा (ब्रह्मा) का पार्ट समाप्त नहीं होना है। वह तब तक दूसरा पार्ट नहीं बजा सकते। जगत पिता के नये जगत की रचना सम्पन्न करने का पार्ट ड्रामा में नूँधा हुआ है। **मनुष्य-सृष्टि की सर्व-वंशावली रचने का सिर्फ ब्रह्मा के लिए ही गायन है - 'ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फादर' (great-great-grand-Father) इसीलिये गाया हुआ है। सिर्फ स्थिति, स्थान और गति (स्पीड - speed) का परिवर्तन हुआ है, लेकिन पार्ट ब्रह्मा का अभी तक वही है।** …

ब्राह्मण बच्चों के साथ जो बाप का वायदा है कि साथ चलेंगे, साथ मरेंगे और साथ जियेंगे अर्थात् पार्ट समाप्त करेंगे; ब्रह्मा बाप ने बच्चों के साथ जो कॉन्ट्रैक्ट विश्व-परिवर्तन का उठाया है, वह आधे में छोड़ सकते हैं क्या? स्थापना के कार्य में निमित्त बनी हुई नींव (फाउण्डेशन) बीच से निकल सकती है क्या?

AV, Original 16.01.1975

बापदादा अन्त तक आपके साथ है - और सदा बच्चों के ऊपर स्नेह और सहयोग की छत्र-छाया के समान हैं। इसलिये **घबराओ मत। बैक-बोन (back-bone) बाप-दादा, सामना करने के लिए किसी भी व्यक्ति द्वारा, समय पर प्रत्यक्ष हो ही जायेंगे, और अब भी हो रहे हैं।**

AV, Original 06.09.1975

बाप सम्मुख आते, और बच्चे अलमस्त होने के कारण देखते हुए भी नहीं देखते, सुनते हुए भी नहीं सुनते। ऐसा खेल अभी नहीं करना है। अपने तीनों कम्बाइन्ड रूपों को स्मृति में रखो, तो ही सदा के लिए, सदा साथी से साथ निभा सकेंगे।

AV, Original 07.10.1975

बच्चों को संकल्प उठता है कि बाप वतन में क्या करते रहते हैं - ब्रह्मा बाप साकार रूप से भी अव्यक्त रूप में अभी दिन-रात सेवा में ज्यादा सहयोगी बनने का पार्ट बजा रहे हैं। क्योंकि अब बाप-समान जन्म-मरण से न्यारा कर्म-बन्धन से मुक्त, कर्मातीत हैं। सिद्धि स्वरूप है। इस स्टेज में हर संकल्प से सिद्धि प्राप्त होती है। जो संकल्प किया वह सत्। इसलिए चारों ओर संकल्प की सिद्धि रूप से सहयोगी हैं। वाणी से संकल्प की गति तीव्र होती है। साकार से आकार की गति तीव्र है। तो संकल्प से सेवा का पार्ट है - वह भी सत-संकल्प। शुद्ध संकल्प। आपकी है ज्यादा वाणी द्वारा सेवा - मन्सा से भी है, लेकिन ज्यादा वाणी से है - लेकिन **ब्रह्मा बाप की अब सत्-संकल्प की सेवा है। तो तीव्र गति होगी ना? तो अभी सेवा का पार्ट ही चल रहा है। सेवा के बन्धन से मुक्त नहीं हैं, कर्म-बन्धन से मुक्त हैं।**

AV, Original 18.01.1978

बाप का वायदा है साथ चलेंगे - कब चलेंगे? जब कार्य समाप्त होगा। तो पहले ही बाप को क्यों भेज देते हैं? **'बाबा चला गया' - यह कह अविनाशी सम्बन्धों को विनाशी क्यों बनाते हो? सिर्फ पार्ट परिवर्तन हुआ है। जैसे आप लोग भी सेवा स्थान चेन्ज (change) करते हो ना? तो ब्रह्मा बाप ने भी सेवा स्थान चेन्ज किया है। रूप वही, सेवा वही है।** …

बाप देख रहे हैं कि बच्चे मेरे साथी हैं - और बच्चे जुदाई का पर्दा डाल देखते रहते हैं। **फिर ढूंढने में समय गँवाते हैं। हाज़िर हजूर को भी छिपा देते। अगर आँख मिचौनी का खेल अच्छा लगता है, तो खेल समझकर भले खेलो, लेकिन स्वरूप नहीं बनो।** बहलाने की बातें नहीं सुना रहे हैं। **और ही सेवा की स्पीड (speed) को अति तीव्र गति देने के लिए सिर्फ स्थान परिवर्तन किया है। इसलिए बच्चों को भी बाप समान सेवा की गति को अति तीव्र बनाने में बिज़ी (busy) रहना चाहिए।**

109] <u>ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश, विष्णु द्वारा पालना</u>

SM, Revised 05.12.2020
सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त को और कोई नहीं जानते। तुम जानने से चक्रवर्ती राजा बन जाते हो। **त्रिमूर्ति में लिखा हुआ है - यह तुम्हारा ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश, विष्णु द्वारा पालना ..** विनाश भी जरूर होना है।

SM, Revised 11.07.2020
महिमा एक (शिव) की ही है। और कोई की महिमा गाई नहीं जा सकती, जबकि ब्रह्मा-विष्णु-शंकर की भी कोई महिमा नहीं है। **ब्रह्मा द्वारा स्थापना कराते हैं, शंकर द्वारा विनाश कराते हैं, विष्णु द्वारा पालना कराते हैं।** लक्ष्मी-नारायण को ऐसा लायक भी शिवबाबा ही बनाते हैं, उनकी (शिव की) ही महिमा है।

SM, Revised 28.12.2019 (Original 25.12.1968)
त्रिमूर्ति का चित्र भी है - ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना, शंकर द्वारा विनाश क्योंकि करनकरावनहार तो बाप है ना। एक ही है जो करता है और कराता है। पहले किसका नाम आयेगा? जो करता है, फिर जिस द्वारा कराते हैं। करनकरावनहार कहा जाता है ना। ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना कराते हैं।

SM, Revised 18.04.2019
ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का नाम तो लेते हैं, परन्तु इन तीनों में से भगवान् किसमें प्रवेश करते हैं, अर्थ नहीं जानते। वो लोग विष्णु का नाम लेते हैं। अब वह तो हैं देवता। वह कैसे पढ़ायेंगे? **बाबा खुद बतलाते हैं, मैं इनमें प्रवेश करता हूँ इसलिए दिखाया है - ब्रह्मा द्वारा स्थापना। वह (विष्णु द्वारा) पालना, और वह (शंकर द्वारा) विनाश। यह बड़ी समझने की बातें हैं।**

SM, Revised 30.10.2018
बाप आकर ब्रह्मा द्वारा ज्ञान देकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं; और शंकर द्वारा विनाश, विष्णु द्वारा पालना कराते हैं। परमात्मा के कर्तव्य को कोई समझते नहीं। मनुष्य को 'पाप आत्मा', 'पुण्य आत्मा' कहा जाता है, 'पाप परमात्मा', 'पुण्य परमात्मा' नहीं कहा जाता। महात्मा को भी 'महान् आत्मा' कहेंगे, 'महान् परमात्मा' नहीं कहेंगे।

SM, Revised 22.03.2018
अब सारी बेहद सृष्टि में ऊंच ते ऊंच मनुष्य कौन है? ड्रामा में ऊंच ते ऊंच पार्ट किसका है? यह भी समझना चाहिए। ... शिवबाबा डायरेक्शन देते हैं ब्रह्मा को कि तुमको देवी-देवता धर्म की स्थापना करनी है। स्थापना कर फिर तुमको जाकर पालना करनी है। हम नहीं करेंगे। ... **ड्रामा अनुसार, ब्रह्मा यह स्थापना कर, फिर राज्य करेंगे।** ...
तो सबसे मुख्य हुआ परमपिता परमात्मा, फिर ब्रह्मा विष्णु शंकर सूक्ष्मवतन वासी, फिर संगमयुग पर है जगदम्बा सरस्वती और जगतपिता ब्रह्मा। यह बड़े ते बड़े हुए ना। इन द्वारा रचना होती है।

SM, Revised 14.12.2017

अभी तुम बच्चे जानते हो, बाबा आया हुआ है, आदि सनातन धर्म की स्थापना करने। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश, विष्णु द्वारा पालना .. बरोबर यह तीनों कर्तव्य अभी चल रहे हैं। अभी तुम ब्राह्मण हो, और जानते हो अभी हम ब्राह्मण से फिर देवता बन रहे हैं। अभी शिवबाबा के पोत्रे हैं। शिवबाबा का एक बच्चा, एक से फिर तुम कितने बच्चे बनते जाते हो।

SM, Revised 15.09.2017

सूक्ष्मवतन में तो हैं सिर्फ ब्रह्मा-विष्णु-शंकर। ब्रह्मा और विष्णु तो पुनर्जन्म में आते हैं, बाकी शंकर नहीं आता। **जैसे शिवबाबा सूक्ष्म है, वैसे शंकर भी सूक्ष्म है, तो उन्होंने फिर शिव शंकर को इकट्ठा कर दिया है। परन्तु हैं तो अलग-अलग ना। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना, फिर शंकर द्वारा विनाश कराते हैं।** ब्रह्मा सो विष्णु हो जाता है। ब्रह्मा-सरस्वती सो लक्ष्मी-नारायण बनते हैं।

SM, Revised 18.07.2017

तुम्हारी बुद्धि में यह रहना है, ऊंच ते ऊंच बाप है, वही वर्सा देते हैं। फिर है ब्रह्मा विष्णु शंकर। **ब्रह्मा द्वारा स्थापना होती है, फिर वही पालना करते हैं - विष्णुपुरी के मालिक बन। विष्णुपुरी कहो वा लक्ष्मी-नारायण की पुरी कहो, बात एक ही है।**

SM, Revised 20.09.2016

शिव है परमपिता परमात्मा। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी चित्र हैं। परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा स्थापना कर रहे हैं। विष्णुपुरी सामने खड़ी है। विष्णु द्वारा नई दुनिया की पालना। विष्णु है राधे-कृष्ण के दो रूप। अब गीता का भगवान कौन ठहरा? पहले तो यह लिखो कि गीता का भगवान निराकार शिव है, न कि कृष्ण। ब्रहमा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा कैसे बनते हैं।

110] <u>एवररेडी (Ever Ready)</u>

AV, Original 15.11.2011

बापदादा जानते हैं कि अभी भी रेडी हैं - एवररेडी बनना पड़े। जो बापदादा ने दो बातें कही थी कि सेकण्ड में फुलस्टाप लगाने वाले बच्चे चाहिए। व्यर्थ संकल्पों का नाम निशान न रहे। जिसको भी सन्देश देते हो, वह सन्देश सुन, परिवर्तन करने के उमंग उत्साह में आ जाएं। अब बापदादा यह रिजल्ट चाहते हैं। इसके लिए बापदादा बच्चों को राय देते हैं, आज्ञा भी करते हैं, कि सेवा करते हो, लेकिन जिनकी भी सेवा करते हो, **एक ही समय पर तीन रूपों और तीन रीति से सेवा करो। तीन रूप नॉलेजफुल, पावरफुल और लवफुल - इन तीनों रूपों से सेवा करो - और तीनों रीति से सेवा करो, वह तीन रीति है मन्सा-वाचा-कर्मणा एक ही समय - सिर्फ वाणी से सेवा नहीं, लेकिन वाणी के साथ मन्सा सेवा भी साथ-साथ हो।** पावरफुल माइन्ड हो। तो अभी आवश्यकता एक ही समय मन्सा पावरफुल हो, जिससे आत्माओं की भी मन्सा परिवर्तन हो जाए। **वाणी द्वारा सारी नॉलेज स्पष्ट हो जाए और कर्मणा द्वारा, कर्म द्वारा सेवा से, वह आत्मायें अनुभव करें कि सचमुच हम अपने परिवार में पहुंच गये हैं। परिवार की फीलिंग (feeling) आने से नजदीक के साथी बन जायें। तो बापदादा अभी एक ही समय तीन रूप की सेवा इकट्ठी चाहते हैं।**

AV, Original 06.03.1985

'हाय मेरा सेन्टर' - यह याद न आये। 'फलाना जिज्ञासु भी साथ ले जाउँ, यह अनन्य है, मददगार है' - ऐसा भी नहीं। किसी के लिए भी अगर रूके तो रह जायेंगे। ऐसे तैयार हो ना? इसको कहते हैं एवररेडी। सदा ही सब कुछ समेटा हुआ हो। उस समय समेटने का संकल्प नहीं आवे। 'यह कर लूँ, यह कर लूँ।' साकार में याद है ना - जो सर्विसएबुल बच्चे थे, उन्हों की स्थूल बैग-बैगेज सदा तैयार होती थी। ट्रेन पहुँचने में 5 मिनट हैं, और डायरेक्शन मिलता था कि जाओ। तो बैग-बैगेज तैयार रहते थे। एक स्टेशन पहले ट्रेन पहुँच गई है - और वह जा रहे हैं। ऐसे भी अनुभव किया ना? **यह भी मन की स्थिति में बैग-बैगेज तैयार हो। बाप ने बुलाया और बच्चे 'जी हाजर' हो जाएँ। इसको कहते हैं एवररेडी।**

AV, Original 28.06.1973

फुलस्टॉप करना चाहो तो कर सको क्या ऐसा अभ्यास है? विस्तार में जाने के बजाय एक सेकेण्ड में फुलस्टॉप हो जाय, ऐसी स्थिति समझते हो? **जैसे ड्राइविंग का लाइसेन्स लेने जाते हैं तो जानबूझ कर भी उनसे तेज स्पीड करा के, फिर फुलस्टॉप कराते हैं, व बैक (back) कराते हैं। यह भी प्रैक्टिस है ना? तो अपनी बुद्धि को चलाने और ठहराने की भी प्रैक्टिस करनी है। कमाल तब कहेंगे जब ऐसे समय पर एक सेकेण्ड में स्टॉप हो जायें। निरन्तर विजयी वह जिसके युक्ति-युक्त संकल्प व युक्ति-युक्त बोल व युक्ति-युक्त कर्म हों, या जिसका एक संकल्प भी व्यर्थ न हो।** वह तब होगा जब यह प्रैक्टिस होगी - मानो कोई ऐसी सर्विस है जिसमें फुल विजयी होना होता है, तो ऐसे समय भी स्टॉप करने का अभ्यास करो।

AV, Original 04.05.1973

श्रीमत है - एक सेकेण्ड में साक्षी अवस्था में स्थित हो जाओ - तो उस साक्षी अवस्था में स्थित होने में एक सेकेण्ड के बजाय अगर दो सेकेण्ड भी लगाये तो क्या उसको एवररेडी कहेंगे? **जैसे मिलिट्री को ऑर्डर होता है 'स्टॉप' - तो फौरन स्टॉप हो जाते हैं। 'स्टॉप' कहने के बाद एक पाँव भी आगे नहीं बढ़ा सकते हैं। इसी प्रमाण श्रीमत मिले व डायरेक्शन**

मिले, और एक सेकेण्ड में उस स्थिति में स्थित हो जायें, दूसरा सेकेण्ड भी न लगे - इसको कहा जाता है एवर-रेडी।
ऐसी स्टेज में एक सेकेण्ड में उस स्थिति में स्थित हो जायें।

= सार =
जैसे अपनी कार (car) या कोई भी सवारी को जहाँ चाहें, वहाँ रोक सकते हैं, ऐसे ही अपनी हर कर्मेन्द्रिय को जहाँ और जैसे लगाना चाहें वहाँ लगा सकें, और अपनी स्थिति जैसी बनाना चाहें, बना सकें - इसी को ही कहा जाता है एवर-रेडी या तीव्र पुरुषार्थी।

112] आदि-देव - ब्रह्मा बाप

AV, Original 30.01.1988
आज आलमाइटी अथार्टी बाप (शिव) अपनी पहली श्रेष्ठ रचना को देख रहे हैं। पहली रचना 'ब्राह्मणों' की रचना है। **उसकी पहली रचना में भी, पहला नम्बर 'ब्रह्मा' (लेखराज की आत्मा) को ही कहेंगे। पहली रचना का पहला नम्बर होने कारण, ब्रह्मा को 'आदि-देव' कहा जाता है।** इसी नाम से इस आबू-पर्वत पर यादगार भी 'आदि-देव' नाम से ही है। 'आदि-देव' अर्थात् 'आदि-रचता' भी कहा जाता, और साथ-साथ 'आदि-देव' अर्थात् नई सृष्टि के आदि का पहला नम्बर का देव है। पहली देव आत्मा श्रीकृष्ण के रूप में ब्रह्मा ही बनते हैं, **इसलिए नई सृष्टि के आदि का 'आदि-देव' कहा जाता है। संगमयुग में भी आदि रचना का पहला नम्बर - अर्थात् 'आदि-देव' कहो वा ब्राह्मण आत्माओं के रचता ब्रह्मा कहो। तो संगम पर और सृष्टि के आदि पर - दोनों समय के आदि हैं, इसलिए 'आदि-देव' कहा जाता है।**

AV, Original 18.01.1991
निराकार बाप (शिव) ने साकार ब्रह्मा (लेखराज की आत्मा) के साथ ब्राह्मण रचे। तब ही ब्राह्मणों द्वारा अविनाशी यज्ञ की रचना हुई। ब्रह्मा बाप आप ब्राह्मणों के साथ-साथ स्थापना के निमित्त बने, तो ब्रह्मा बाप के साथ आदि ब्राह्मणों की भी जीवन कहानी है। **आदि-देव ब्रह्मा और आदि ब्राह्मण दोनों का महत्व यज्ञ स्थापना में रहा। अनादि बाप ने आदि-देव ब्रह्मा द्वारा आदि ब्राह्मणों की रचना की।**

AV, Original 13.02.1991
आप ब्राह्मण बच्चों ने यह महान व्रत लिया - इसके यादगार स्वरूप में आज तक भी भक्त लोग व्रत रखते हैं। यह महान जयन्ती प्रतिज्ञा लेने की जयन्ती है। एक तरफ प्रत्यक्ष होने की जयन्ती है, दूसरी तरफ प्रतिज्ञा लेने की जयन्ती है। आदि समय में आप सभी जो भी निमित्त बने, **आदि-देव के साथ आदि रत्न निकले - उन्हों की प्रतिज्ञा का प्रत्यक्ष फल आप सभी प्रत्यक्ष हुए।**

AV, Original 18.01.2008
आप सब नयनों में समाये हुए हो, वह दिल में समाये हुए हैं। कितनी सुन्दर सभा है, सबके चेहरों पर आज के विशेष दिवस पर अव्यक्त स्थिति के स्मृति की झलक दिखाई दे रही है। **सबके दिल में ब्रह्मा बाप की स्मृति समाई हुई है। आदि-देव ब्रह्मा बाप और शिव बाप - दोनों ही सर्व बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं।**

SM, Revised 30.10.2020
शिवबाबा भी बाबा है, प्रजापिता ब्रह्मा भी बाबा है। प्रजापिता ब्रह्मा, आदि-देव नाम बाला है। सिर्फ पास्ट हो गये हैं (कल्प पहले)। जैसे गांधी भी पास्ट हो गये हैं। उनको बापू जी कहते हैं, परन्तु समझते नहीं, ऐसे ही कह देते हैं। यह शिवबाबा सच-सच है, ब्रह्मा बाबा भी सच-सच है, लौकिक बाप भी सच-सच होता है। बाकी मेयर आदि को तो ऐसे ही 'बापू' कह देते हैं। वह सब हैं आर्टीफिशल। यह है रीयल (real)। परमात्मा बाप आकर आत्माओं को प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा अपना बनाते हैं।

SM, Revised 29.04.2020

यह भी जानते हैं प्रजापिता ब्रह्मा होकर गया है (कल्प पहले), उसको 'आदि-देव' कहते हैं। आदि देवी जगत अम्बा, वह कौन है! यह भी दुनिया नहीं जानती। जरूर ब्रह्मा की मुख वंशावली ही होगी। वह कोई ब्रह्मा की स्त्री नहीं ठहरी। एडाप्ट करते हैं ना। तुम बच्चों को भी एडाप्ट करते हैं। ब्राह्मणों को देवता नहीं कहेंगे। यहाँ ब्रह्मा का मन्दिर है, वह भी मनुष्य है ना। ब्रह्मा के साथ सरस्वती भी है।

SM, Revised 05.02.2020

वह है जड़ देलवाड़ा मन्दिर, और यह है चैतन्य देलवाड़ा। यह भी वण्डर है ना। जहाँ जड़ यादगार है, वहाँ तुम चैतन्य आकर बैठे हो। परन्तु मनुष्य कुछ समझते थोड़ेही हैं। आगे चलकर समझेंगे कि बरोबर यह गॉड फादरली युनिवर्सिटी है, यहाँ भगवान पढ़ाते हैं। इससे बड़ी युनिवर्सिटी और कोई हो न सके। और यह भी समझेंगे कि यह तो बरोबर चैतन्य देलवाड़ा मन्दिर है। **यह देलवाड़ा मन्दिर तुम्हारा एक्यूरेट यादगार है। ऊपर छत में सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी हैं, नीचे आदि-देव, आदि-देवी, और बच्चे बैठे हैं। इनका नाम है ब्रह्मा, फिर सरस्वती है ब्रह्मा की बेटी। प्रजापिता ब्रह्मा है, तो जरूर गोप-गोपियाँ भी होंगे ना।**

SM, Revised 25.12.2019 (Original 14.01.1969)

बच्चों को सीढ़ी पर समझाया गया है - कैसे हम सीढ़ी नीचे उतरते आये हैं। पूरे 84 जन्म लगे हैं मैक्सीमम (maximum)। फिर कोई एक जन्म भी लेते हैं। आत्मायें ऊपर से आती ही रहती हैं। अभी बाप कहते हैं - मैं आया हूँ पावन बनाने। **शिवबाबा, ब्रह्मा द्वारा तुम्हें पढ़ाते हैं। शिवबाबा है आत्माओं का बाप, और ब्रह्मा को आदि-देव कहते हैं। इस दादा में बाप कैसे आते हैं, यह तुम बच्चे ही जानते हो।**

SM, Revised 03.09.2019 (Original 24.09.1968)

कैसे यह देलवाड़ा मन्दिर है, आदि-देव भी है, और ऊपर में विश्व में शान्ति का नज़ारा भी है। ...
मन्दिर बनाने वाले खुद नहीं जानते हैं - जिन्होंने ही बैठ यह यादगार बनाया है, जिसका देलवाड़ा मन्दिर नाम रख दिया है। **आदि-देव को भी बिठाया है, ऊपर में स्वर्ग भी दिखाया है। जैसे वह जड़ है, वैसे तुम हो चैतन्य। इनको चैतन्य देलवाड़ा नाम रख सकते हैं।**

SM, Revised 18.03.2019

माला में ऊपर फूल होता है, फिर मेरू। नाम भी है 'आदम-बीबी'। तुम कहेंगे 'मम्मा-बाबा'। 'आदि-देव और आदि-देवी', यह हैं संगम के। संगमयुग ही सबसे उत्तम है, जबकि इस राज्य की स्थापना हो रही है। तुम बच्चों को 16 कला सम्पूर्ण यहाँ बनना है।

SM, Revised 17.12.2018

बाप कहते हैं - मेरे को याद करो; बच्चों को माला का राज़ भी समझाया है। परमपिता परमात्मा बेहद का फूल है; फिर हैं दो दाने, ब्रह्मा-सरस्वती। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा रचना रची हुई है। यह हैं आदि-देव और आदि-देवी। यह ब्राह्मण हैं जिन्होंने स्वर्ग बनाया है इसलिए इनकी पूजा होती है। बीच में वह 8 दाने हैं, जो सूर्यवंशी बने हैं। बहुत मदद की है। नॉलेज बुद्धि में रहनी चाहिए।

SM, Revised 06.04.2018
मात-पिता बड़े हैं ना। जगदम्बा माँ भी तो बच्ची ठहरी। यह बाबा इस दुनिया का भी अनुभवी है। ड्रामा में मुख्य एक्टर्स देखे जाते हैं ना। बाप ने यह भी रथ लिया है, जरूर कुछ तो होगा ना। **आदि देव ब्रह्मा का कितना नाम है! मनुष्य नहीं समझते आदि-देव किसको कहा जाता है। वास्तव में आदि-देव और आदि-देवी, मात-पिता, यह (ब्रह्मा) बन जाते हैं।** फिर इनके मुख से सरस्वती माँ निकलती है, तो सब बच्चे हो गये। यह कहते हैं- मैं शिवबाबा का बच्चा भी हूँ तो उनकी वन्नी (युगल) भी हूँ क्योंकि मुझमें प्रवेश कर मेरे मुख से बच्चे पैदा करते हैं। कितनी गुह्य बात है! सतोप्रधान बुद्धि वाले अच्छी रीति समझेंगे। नम्बरवार होते ही हैं।

SM, Revised 21.11.2017
बाप कहते हैं, सब बच्चे ड्रामा के वश हैं। मैं भी भल क्रियेटर, डायरेक्टर, करनकरावनहार हूँ। परन्तु मैं भी ड्रामा के वश हूँ। सिवाए एक टाइम, एक शरीर के, दूसरे कोई शरीर में आ नहीं सकता हूँ। कहते हैं, सदैव दादा के तन में आयेगा, और इनको ही ब्रह्मा बनायेगा? हाँ! **पहले-पहले इनका ही जन्म लक्ष्मी-नारायण था ना, फिर इनको ही आदि-देव, आदि-देवी बनायेंगे।**

SM, Revised 08.10.2016
ब्रह्मा को भी कोई ‘आदि-देव’ कहते, कोई ‘एडम’ कहते, कोई ‘महावीर’ कहते - तुम ‘प्रजापिता’ कहते हो। ...
इस एक ब्रह्मा (लेखराज की आत्मा) को अच्छी तरह पकड़ा - खर्च करने के लिए। इनमें प्रवेश कर इनसे सब कुछ कराया। यह तो झट स्वाहा हो गया। सब कुछ जो इनके पास था, सब दे दिया। बाबा बोले, ‘बेगर’ (beggar) बन जाओ, तो फिर ऐसा 'प्रिन्स' (Prince) बनाऊंगा, साक्षात्कार करा दिया। ...
नहीं तो इतने बच्चों का खर्च कैसे चलता? ... एक को ही पैसे के लिए पकड़ लिया!

SM, Revised 30.04.2016
यह मनुष्य सृष्टि का सिजरा है। पहले नम्बर में हैं ब्रह्मा-सरस्वती – आदि-देव, आदि-देवी। पीछे फिर अनेक धर्म होते जाते हैं। वह है सर्व आत्माओं का बीज। बाकी सब हैं पत्ते। प्रजापिता ब्रह्मा सबका बाप है। इस समय प्रजापिता हाज़िर है। यह बैठ शूद्र से कनवर्ट (convert) कर ब्राह्मण बनाते हैं। ऐसे कोई कर न सके। बाप ही तुमको शूद्र से ब्राह्मण बनाए, फिर देवता बनाने लिए पढ़ा रहे हैं। यह है ही सहज राजयोग की पढ़ाई।

113] ‘एडम’ (Adam) - ब्रह्मा बाप

SM, Revised 16.12.2020

ऐसे कोई कहेंगे कि प्रजापिता ब्रह्मा को सन्तान नहीं है? इनकी सन्तान तो सारी दुनिया है। पहले-पहले है ही प्रजापिता ब्रह्मा (दादा लेकराज वा श्री कृष्ण की आत्मा)। **मुसलमान भी आदम-बीबी जो कहते हैं, सो जरूर किसको तो कहते होंगे ना। ‘एडम-ईव’, ‘आदि-देव आदि-देवी’ - यह प्रजापिता ब्रह्मा के लिए ही कहेंगे। जो भी धर्म वाले हैं, सब इनको मानेंगे!**

SM, Revised 07.08.2020

बाप कहते हैं - त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। ... तीन का ही मुख्य पार्ट है (विष्णु, ब्रह्मा और शिव।)। ब्रह्मा और विष्णु का तो बड़ा पार्ट है 84 जन्मों का। विष्णु का और प्रजापिता ब्रह्मा का अर्थ भी समझा है, पार्ट है इन तीन का। **ब्रह्मा का तो नाम गाया हुआ - ‘आदि देव’, ‘एडम’। प्रजापिता का मन्दिर भी है। यह है विष्णु का अथवा कृष्ण का अन्तिम 84 वां जन्म, जिसका नाम ब्रह्मा रखा है।**

SM, Revised 08.04.2020

बाप ही बतलाते हैं - आत्मा इतनी छोटी है, मैं भी इतना हूँ। नॉलेज भी जरूर कोई शरीर में प्रवेश कर देंगे। (ब्रह्मा की) आत्मा के बाजू में आकर बैठूँगा। मेरे में पॉवर है, (ब्रह्मा के) आरगन्स मिल गये, तो मैं धनी हो गया। इन आरगन्स द्वारा बैठ समझाता हूँ, इनको (ब्रह्मा को) ‘एडम’ भी कहा जाता है। एडम है पहला-पहला आदमी। मनुष्यों का सिजरा है ना। यह (ब्रह्मा) माता-पिता भी बनते हैं, इनसे फिर रचना होती है, है पुराना परन्तु एडाप्ट किया है, नहीं तो ब्रह्मा कहाँ से आया? ब्रह्मा के बाप का नाम कोई बताये। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर यह किसकी रचना तो होगी ना! रचयिता तो एक ही है, बाप ने तो इनको एडाप्ट किया है।

SM, Revised 13.09.2019 (Original 12.10.1968)

बाप ही पतित-पावन सर्वशक्तिमान् अथॉरिटी हैं, उनको वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी कहा जाता है। वह सारे सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं। वेदों-शास्त्रों आदि सबको जानते हैं, तब तो कहते हैं, इनमें कोई सार नहीं है। गीता में भी कोई सार नहीं है। भल वह सर्व शास्त्रमई शिरोमणी है माई बाप, बाकी सब हैं बच्चे। जैसे पहले-पहले प्रजापिता ब्रह्मा है, बाकी सब बच्चे हैं। **प्रजापिता ब्रह्मा को ‘आदम’ कहते हैं। ‘आदम’ माना आदमी। मनुष्य है ना, तो इनको देवता नहीं कहेंगे। एडम को ‘आदम’ कहते हैं। भक्त लोग ब्रह्मा एडम को देवता कह देते। बाप बैठ समझाते हैं ‘एडम’ अर्थात् आदमी। न देवता है, न भगवान् है।**

SM, Revised 19.02.2019

सतयुग में है एक बाप, और रावण राज्य में हैं दो बाप। संगम पर हैं तीन बाप - लौकिक, पारलौकिक, और तीसरा है वन्डरफुल अलौकिक बाप। इन द्वारा बाप वर्सा देते हैं। इनको भी उनसे वर्सा मिलता है। **ब्रह्मा को ‘एडम’ भी कहते हैं - ग्रेट ग्रेट ग्रैन्ड फादर। शिव को तो ‘फादर’ ही कहेंगे। सिजरा मनुष्यों का ब्रह्मा से शुरू होता है, इसलिए उनको ‘ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड-फादर’ कहा जाता है।**

SM, Revised 05.09.2018

'मात-पिता' कहा जाता है निराकार को। परन्तु यह समझते नहीं कि इनको 'मात-पिता' क्यों कहा जाता है! वह तो 'गॉड फादर' है। **फिर कहते हैं, एडम और ईव। एडम ही ईव है, यह नहीं समझते। प्रजापिता ब्रह्मा, वही फिर माता हो जाती है। एडम और ईव अथवा 'आदम-बीबी' कहते हैं। परन्तु अर्थ नहीं समझ सकते हैं। बच्चे समझ सकते हैं, 'आदम-बीबी' वास्तव में यह है।** बीबी सो आदम है। इनको 'बीबी-आदम' दोनों कह देते हैं। वह तो है बाप। यह बड़ी पेचीली बातें हैं। भारत में गाते भी हैं, 'तुम मात-पिता ..', ऐसे ही सुनी-सुनाई पर गाते रहते हैं, अर्थ कुछ नहीं समझते।

SM, Revised 26.07.2018

फिर गाया जाता है, 'जगदम्बा आदि देवी और ब्रह्मा आदि देव'। एडम-ईव - यह दोनों अब काले हैं, फिर गोरे बनने हैं। दुनिया इन बातों को नहीं जानती। काली, दुर्गा, अम्बा - सब एक के ही नाम हैं। सच्चा नाम सरस्वती है।

SM, Revised 27.06.2018

सभी आत्माओं का फादर एक परमपिता परमात्मा है। उनकी महिमा है सभी से ऊंची। परन्तु मनुष्य बिल्कुल नहीं जानते हैं। **सभी आत्माओं का फादर वह निराकार बाप; और फिर साकार बाप प्रजापिता ब्रह्मा, जिसको आदि देव, महावीर, एडम भी कहते हैं। जिस द्वारा निराकार परमपिता परमात्मा मनुष्य सृष्टि रचते हैं।**

SM, Revised 29.05.2018

जो सभी का गॉड फादर है, वह क्या कर्त्तव्य करते हैं, जिस कारण उनको फादर कहा जाता है। **गॉड फादर कहा जाता है, और फिर एडम-ईव, आदम-बीबी, ब्रह्मा-सरस्वती को कहेंगे। गॉड फादर, उन्हों द्वारा रचना रचते हैं।** वह गॉड फादर है सभी आत्माओं का बाप। यह है प्रजापिता। हम आत्मायें हैं उनके अविनाशी बच्चे। फिर चक्र में आते हैं, तो यह है प्रजापिता ब्रह्मा। उनको 'ग्रेट ग्रेट ग्रैण्ड फादर' कहा जाता है।

SM, Revised 11.05.2018

तो सब बच्चों को फादर और मदर का शो करना है। **'त्वमेव माताश्च पिता', कहते हैं, तो फादर के साथ मदर भी चाहिए। मनुष्य समझते हैं - एडम ब्रह्मा, ईव सरस्वती। वास्तव में यह रांग है। निराकार गॉड फादर है, तो मदर भी जरूर होगी। परन्तु वो लोग ईव, जगत अम्बा को कह देते हैं। वास्तव में यह बहुत मुख्य बात है। निराकार शिवबाबा इस ब्रह्मा मुख से कहते हैं - तुम हमारे बच्चे हो। यह ब्रह्मा माता बन जाती। ब्रह्मा प्रजापिता भी है, तो माता भी है। वह है सुप्रीम रूहानी बाप।** फिर स्थूल में माता, ब्रह्मा की बेटी, सरस्वती कहलाती है। जगत अम्बा का कितना भारी मेला लगता है। जगतपिता ब्रह्मा का, अजमेर में, इतना मेला आदि नहीं लगता है। जगत अम्बा का बहुत मान है क्योंकि माता का प्रभाव बढ़ाना है।

SM, Revised 07.05.2018

संगम पर ही नॉलेज मिलती है। बाप कैसे पहले सूक्ष्मवतन की रचना करते हैं, फिर प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा नई सृष्टि रचते हैं। इनका ही मनुष्य सृष्टि सिजरा है। इसको ही आदि देव, आदि देवी कहा जाता है। **एडम ईव भी कहते हैं। अब मात-पिता है तो सृष्टि कैसे रची, एडम को आदि देव ब्रह्मा कहेंगे। परन्तु वह क्रियेटर नहीं है। ऐसे नहीं समझते, परमपिता परमात्मा ने एडम द्वारा कराया।** जरूर गॉड ही स्वर्ग का रचयिता है। वह है निराकार बाबा।

SM, Revised 10.04.2018

ब्रह्मा के हाथ में शास्त्र दिये हैं। सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा हो न सके। **नाम है प्रजापिता ब्रह्मा, जिसको एडम, आदम कहते हैं, वही इस सारे जीनालॉजिकल ट्री का हेड है।** सो तुम जानते हो। हम रूद्र माला के दाने हैं। हम आत्मायें वहाँ से आती हैं। हमारा निवास स्थान वह परमधाम है।

SM, Revised 27.03.2018

आत्माओं की भी बड़ी-बड़ी माला है। वैसे ही फिर मनुष्य सृष्टि की बड़े ते बड़ी माला है। **प्रजापिता ब्रह्मा है मुख्य। इनको आदम, आदि देव, महावीर भी कहते हैं। अब यह बड़ी गुह्य बातें हैं।**

SM, Revised 24.02.2018

ब्रह्मा भी कहेंगे सभी जीव आत्मायें हमारे बच्चे हैं। **आदि देव अथवा आदम सभी का बाप है।** ...
निराकार बाप को पहले जरूर आदम में आना पड़े, तब तो मुख वंशावली रचे।

SM, Revised 18.09.2017

वास्तव में प्रजापिता ब्रह्मा मनुष्य सृष्टि झाड़ का फाउन्डेशन है, जिसको कल्प वृक्ष कहा जाता है। **गोया शिवबाबा, मनुष्य मात्र का बाबा, पिता है, और ब्रह्मा गैन्ड फादर है। मनुष्य सृष्टि झाड़, वा जीनालाजिकल ट्री, का पहला मनुष्य, आदम वा एडम वा प्रजापिता ब्रह्मा है।** प्रजापिता ब्रह्मा और मुख वंशावली, परमपिता मुझ परमात्मा शिव से सहज राजयोग और ज्ञान सीख, सुख घनेरे सोझरे में जाते हो। गाया भी जाता है, 'ज्ञान सूर्य प्रगटा..', ज्ञान सूर्य भी पतित-पावन परमपिता परमात्मा को ही कहा जाता है।

SM, Revised 08.10.2016

ब्रह्मा को भी कोई 'आदि-देव' कहते, कोई 'एडम' कहते, कोई 'महावीर' कहते - तुम 'प्रजापिता' कहते हो। ...
इस एक ब्रह्मा (लेखराज की आत्मा) को अच्छी तरह पकड़ा - खर्च करने के लिए। इनमें प्रवेश कर इनसे सब कुछ कराया। यह तो झट स्वाहा हो गया।

SM, Revised 23.02.2016

अभी तुम बच्चे जानते हो हम शिवबाबा की सन्तान हैं। वर्सा शिवबाबा से मिलता है। यह दादा, वह डाडा (ग्रैन्ड-फादर); वर्सा डाडे का मिलता है, डाडे की प्रॉपर्टी पर सबका हक रहता है। **ब्रह्मा को कहा जाता है प्रजापिता। एडम और ईव, आदम बीबी। वह है निराकार गॉड फादर। यह (प्रजापिता) हो गया साकारी फादर। इनको अपना शरीर है। शिवबाबा को अपना शरीर नहीं है। तो तुमको वर्सा मिलता है शिवबाबा से ब्रह्मा द्वारा।** डाडे की मिलकियत मिलेगी तो बाप द्वारा ना। शिवबाबा से भी ब्रह्मा द्वारा तुम फिर मनुष्य से देवता बन रहे हो।

SM, Revised 02.01.2016

बच्चे चिट्ठी लिखते हैं तो एड्रेस लिखते हैं-शिवबाबा केअरआफ ब्रह्मा बाबा। **शिवबाबा है आत्माओं का बाप और ब्रह्मा को कहा जाता है आदि देव, एडम, दादा।** दादा में बाप आते हैं, कहते हैं तुमने मुझे बुलाया है - हे पतित-पावन आओ। …

पहले-पहले है ब्राह्मण कुल; प्रजापिता ब्रह्मा भी गाया जाता है ना। जिसको एडम, आदि देव कहा जाता है। यह कोई को पता नहीं है। बहुत हैं जो आकर सुनकर फिर माया के वश हो जाते हैं। पुण्यात्मा बनते-बनते पाप आत्मा बन जाते हैं। माया बड़ी जबरदस्त है, सबको पाप आत्मा बना देती है।

114] <u>ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर - ब्रह्मा बाप</u>

AV, Original 25.12.1985, Revised 12.04.2020
आज बड़े ते बड़े बाप, ग्रैण्ड फादर, अपने ग्रैण्ड चिल्ड्रेन लवली बच्चों से मिलने आये हैं। ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फादर ब्रह्मा गाया हुआ है। निराकार बाप ने साकार सृष्टि की रचना के निमित्त ब्रह्मा को बनाया। मनुष्य सृष्टि का रचयिता होने के कारण, मनुष्य सृष्टि का यादगार वृक्ष के रूप में दिखाया है। **बीज गुप्त होता है - पहले दो पत्ते, जिससे तना निकलता है - वो ही वृक्ष के आदि देव आदि देवी, माता पिता के स्वरूप में - वृक्ष का फाउन्डेशन ब्रह्मा निमित्त बनता है। उस द्वारा ब्राह्मण तना प्रगट होता है, और ब्राह्मण तना से अनेक शाखायें उत्पन्न होती हैं, इसलिए 'ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर' ब्रह्मा गाया हुआ है।**

SM, Revised 11.09.2020
श्रीकृष्ण यह बातें समझा नहीं सकते। उनको 'बाप' भी नहीं कहेंगे। बाप है लौकिक, अलौकिक और पारलौकिक। हद का बाप लौकिक, बेहद का बाप है - पारलौकिक, आत्माओं का। और एक यह है सगंमयुगी वन्डरफुल बाप, इनको अलौकिक कहा जाता है। **प्रजापिता ब्रह्मा को कोई याद ही नहीं करते। वह हमारा 'ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फादर' है, यह बुद्धि में नहीं आता है। कहते भी हैं, 'आदि देव, एडम ..', परन्तु कहने मात्र।**

SM, Revised 09.07.2020
यह तो प्रजापिता ब्रह्मा है ना। प्रजापिता ब्रह्मा को 'ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर' कह सकते हैं, शिवबाबा को सिर्फ बाबा ही कहेंगे। बाकी सब हैं ब्रदर्स। इतने सब ब्रह्मा के बच्चे हैं। …
इनको (ब्रह्मा को) तुम 'बाबा' कहते हो, फिर ग्रैन्ड-फादर भी होगा। ग्रेट-ग्रैन्ड-फादर भी होगा। बिरादरियां हैं ना। 'एडम', 'आदि देव' नाम हैं, परन्तु मनुष्य समझते नहीं हैं। तुम बच्चों को बाप बैठ समझाते हैं। बाप द्वारा सृष्टि चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी को तुम जानकर, चक्रवर्ती राजा बन रहे हो।

SM, Revised 11.01.2020
बाप तो है ही हाइएस्ट अथॉरिटी, और फिर यह प्रजापिता ब्रह्मा भी हाइएस्ट अथॉरिटी ठहरे। **यह दादा है सबसे बड़ी अथॉरिटी। शिव और प्रजापिता ब्रह्मा। आत्मायें हैं शिव बाबा के बच्चे, और फिर साकार में हम भाई-बहन सब हैं प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे। यह है सबका ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर।** …
शिवबाबा और प्रजापिता ब्रह्मा, आत्माओं का बाप और सब मनुष्य मात्र का बाप।

SM, Revised 31.12.2019 (Original 10.01.1969)
तो पहले-पहले समझानी देनी है एक बाप की। शिव को 'बाबा' कह सभी याद करते हैं। दूसरा, ब्रह्मा को भी 'बाबा' कहते हैं। **प्रजापिता है, तो सारी प्रजा का पिता हुआ ना - ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर। यह सारा ज्ञान अभी तुम बच्चों में है। प्रजापिता ब्रह्मा तो कहते बहुत हैं, परन्तु यथार्थ रीति जानते कोई नहीं। ब्रह्मा किसका बच्चा है? तुम कहेंगे परमपिता परमात्मा का। शिवबाबा ने इनको एडाप्ट किया है, तो यह शरीरधारी हुआ ना।** ईश्वर की सभी औलाद हैं। फिर जब शरीर मिलता है, तो प्रजापिता ब्रह्मा की एडाप्शन कहते हैं।

SM, Revised 24.09.2019 (Original 06.10.1968)
अभी तुम बाप के बने हो तो जरूर चेन्ज होना पड़े। बाप ने बुद्धि का ताला खोला है। ब्रह्मा और विष्णु का भी राज़ समझाया है। यह है पतित, वह है पावन। एडाप्शन इस पुरूषोत्तम संगमयुग पर ही होती है। प्रजापिता ब्रह्मा जब है, तब ही एडाप्शन होती है। सतयुग में तो होती नहीं। यहाँ भी किसको बच्चा नहीं होता है, तो फिर एडाप्ट करते हैं। **प्रजापिता को भी जरूर ब्राह्मण बच्चे चाहिए। यह हैं 'मुख वंशावली'। वह होते हैं 'कुख वंशावली'। ब्रह्मा तो नामीग्रामी है। इनका सरनेम ही बेहद का है। सब समझते हैं, प्रजापिता ब्रह्मा आदि देव है, उसको अंग्रेजी में कहेंगे 'ग्रेट ग्रेट ग्रैन्ड फादर'।**

SM, Revised 19.07.2019
बाप बैठ समझाते हैं, **मैं इस ब्रह्मा तन में प्रवेश करता हूँ। यह भी कोई मानते नहीं कि ब्रह्मा के तन में आते हैं। अरे, ब्राह्मण तो चाहिए जरूर। ब्राह्मण कहाँ से आयेंगे। जरूर ब्रह्मा से ही तो आयेंगे ना। अच्छा, ब्रह्मा का बाप कभी सुना? वह है ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फादर। उनका साकार फादर कोई नहीं।** ब्रह्मा का साकार बाप कौन? कोई बतला न सके।

SM, Revised 14.03.2019
लौकिक से भी वर्सा मिलता है, और पारलौकिक से भी वर्सा मिलता है। बाकी **यह अलौकिक बाप है वन्डरफुल, इनसे कोई वर्सा नहीं मिलता है। हाँ, इनके द्वारा शिवबाबा वर्सा देते हैं, इसलिए उस पारलौकिक बाप को बहुत याद करते हैं।** लौकिक को भी याद करते हैं। बाकी इस अलौकिक ब्रह्मा बाप को कोई याद नहीं करते। **तुम जानते हो यह है प्रजापिता, यह कोई एक का पिता नहीं। प्रजापिता 'ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर' है। शिवबाबा को 'ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर' नहीं कहते।**

SM, Revised 30.10.2018
इनकारपोरियल गॉड फादर ही आकर पढ़ाते हैं। उनको भी जरूर शरीर चाहिए। **जरूर ब्रह्मा तन में आना पड़े। शिवबाबा तो तुम सब आत्माओं का बाप है। प्रजापिता भी गाया हुआ है। पिता तो बाप ठहरा ना। ब्रह्मा को 'ग्रेट ग्रेट ग्रैन्ड फादर' कहा जाता है।** आदि देव और आदि देवी दोनों बैठे हैं, तपस्या कर रहे हैं। तुम भी तपस्या कर रहे हो। यह है राजयोग। सन्यासियों का है हठयोग। वह कभी राजयोग सिखला नहीं सकते। **गीता आदि जो भी शास्त्र हैं, वह सब हैं भक्ति मार्ग की सामग्री। पढ़ते आये हैं, परन्तु तमोप्रधान बन गये हैं।**

SM, Revised 20.10.2018
तुम बच्चों के अन्दर सृष्टि चक्र का ज्ञान हर वक्त गूँजना चाहिए। पहले तो वह समझें कि इन्हों को शिक्षा देने वाला कौन है! तब समझें बरोबर हम भी तो शिव के बच्चे हैं। **प्रजापिता ब्रह्मा के भी बच्चे हैं। यह सिजरा है। प्रजापिता ब्रह्मा है ग्रेट ग्रेट ग्रैन्ड फादर। मनुष्य सृष्टि का बड़ा तो ब्रह्मा हो गया ना। शिव को ऐसे नहीं कहेंगे, उनको सिर्फ फादर कहेंगे। ग्रेट ग्रेट ग्रैन्ड फादर - यह टाइटिल हो गया प्रजापिता ब्रह्मा का।**

SM, Revised 08.12.2017
त्रिमूर्ति शिव, परमपिता परमात्मा, ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं। ... **जो भी मनुष्य मात्र हैं, सब धर्म वाले उन्हों को समझ में आता है कि हमारा ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फादर ब्रह्मा है, जिसको आदम-बीबी अथवा आदि देव, आदि देवी कहते हैं।** वह भी शिवबाबा की रचना है। बाबा ने रचना कैसे रची? एडाप्ट किया। यह है पहले नम्बर की बात। अल्फ के बाद, फिर बे। इन बातों को जो अच्छी रीति समझते हैं, वही ऊंच पद पाते हैं।

SM, Revised 07.10.2017
तो ऊंच ते ऊंच हुआ शिवबाबा, सभी का बाबा। फिर गाया जाता है ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर, जिससे मनुष्य सृष्टि रूपी सिजरा निकलता है। यह मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है। पहले-पहले एडम अर्थात् आदि देव, आदि देवी, उनसे रचना रचते हैं। परन्तु ब्रह्माकुमार कुमारी कोई सब थोड़ेही बनते हैं। जो ब्राह्मण बनते हैं, वही फिर देवता बनते हैं।

SM, Revised 12.04.2016
वर्ल्ड गॉड फादर सिर्फ एक ही निराकार बाप को कहा जाता है। **ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर शिवबाबा को नहीं कह सकते। ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर है प्रजापिता ब्रह्मा। उनसे बिरादरी निकलती है।** वह इनकारपोरियल गॉड फादर, निराकार आत्माओं का बाप है।

SM, Revised 03.02.2016
वर्सा शिवबाबा से मिलता है। वह शिवबाबा तो सबका बाप है। **इस ब्रह्मा को ग्रेट ग्रेट ग्रैन्ड फादर कहा जाता है। लौकिक बाप तो सबको होते हैं। पारलौकिक बाप को भक्ति मार्ग में याद करते हैं। अब तुम बच्चे समझते हो यह है अलौकिक बाप जिनको कोई नहीं जानते।** भल ब्रह्मा का मन्दिर है, यहाँ भी प्रजापिता आदि देव का मन्दिर है। उनको कोई महावीर कहते हैं, दिलवाला भी कहते हैं। परन्तु वास्तव में दिल लेने वाला है शिवबाबा, न कि प्रजापिता आदि देव ब्रह्मा।

SM, Revised 25.01.2016
सतयुग में होता है एक बाप। इस समय तुमको 3 बाप हैं क्योंकि भगवान आते हैं प्रजापिता ब्रह्मा के तन में, वह भी तो बाप है सबका। लौकिक बाप भी है। अच्छा, अब तीनों बाप से ऊंच वर्सा किसका? निराकार बाप वर्सा कैसे दें? वह फिर देते हैं ब्रह्मा द्वारा। इस चित्र पर तुम बहुत अच्छी रीति समझा सकते हो। **शिवबाबा निराकार है और यह है प्रजापिता ब्रह्मा, आदि देव, ग्रेट ग्रेट ग्रैन्ड फादर। बाप कहते हैं मुझ शिव को तुम ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर नहीं कहेंगे। मैं सभी का बाप हूँ। यह है प्रजापिता ब्रह्मा।**

115] <u>अन्तिम नारा - 'भारत माता शिवशक्ति अवतार'</u>

1] AV, Original 18.05.1969
कई प्राकृतिक आपदायें भी अपना कर्तव्य करेंगी। उसका सामना करने लिये अपने में ईश्वरीय शक्ति धारण करनी है। उस समय स्नेह नहीं रखना है। उस समय शक्ति-रूप की आवश्यकता है। **किस समय स्नेहमूर्त, किस समय शक्तिरूप बनना है, यह भी सोचना है। इन सभी बातों में शक्तिरूप की आवश्यकता है।** अगर कोई ऐसा आया और उनको ज्यादा स्नेह दिखाया, तो कहाँ नुकसान भी हो सकता है। **स्नेह बापदादा और दैवी परिवार से करना है। बाकी सभी से शक्तिरूप से सामना करना है।** कई बच्चे गफलत करते हैं, जो उन्हों के स्नेह में आ जाते हैं। वह स्नेह वृद्धि होकर कमजोर कर देता है, इसलिये अब शक्तिरूप की आवश्यकता है। **अन्तिम नारा भी 'भारत माता शक्ति अवतार' का गायन है। 'गोपी माता' थोड़ेही कहते हैं। अब शक्ति रूप का पार्ट है। गोपीकाओं का रूप साकार में था। अब अव्यक्त रूप से शक्ति का पार्ट है। हरेक जब अपने शक्तिरूप में स्थित होंगे, तो इतने सभी की शक्ति मिलाकर कमाल कर दिखायेगी।**

2] AV, Original 21.01.1969
तो विचार सागर मंथन करो, हलचल का मंथन न करो। जो शक्ति ली है उनको प्रत्यक्ष में लाओ।
'भारत माता शक्ति अवतार' अन्त का यही नारा है। 'सन शोज फादर'। ड्रामा की नूंध करायेगी। साकार बाबा ने कहा - मैं बच्चों से मिलन मनाने आऊंगा; अगर आज आ जाता तो बच्चे आंसू बहा देते।

SM, Original 15.05.1964 (Page 3)
वह है विनाश काले विपरीत बुद्धि यादव और विनाश काले विपरीत बुद्धि कौरव। फिर विनाश काले प्रीत बुद्धि हो तुम पाण्डव, जिनकी ही जयजयकार होनी है। तुम हो गुप्त शिवशक्ति भारत माता। इसमें गोप-गोपियाँ दोनों हैं।

SM, Revised 28.12.2018
जो मम्मा की महिमा, सो बाप की महिमा, सो दादे की। ... **बाप बैठ समझाते हैं, यह जगदम्बा कौन है - यह है भारत की सौभाग्य विधाता, इनकी 'शिव शक्ति सेना' भी मशहूर है। हेड (Head) है जगदम्बा अर्थात् भारत में वन गवर्मेन्ट की स्थापना करने वाली हेड। भारत माता शक्ति अवतारों ने भारत में वन गवर्मेन्ट स्थापन की है, श्रीमत के आधार पर।**

SM, Revised 08.10.2018
बाप कहते हैं - बच्चे, मेरे मददगार बनो, तो मैं तुमको स्वर्ग का मालिक बनाऊंगा। 'हिम्मते मर्दा, मददे खुदा'। गाते तो हैं, 'खुदाई खिदमतगार'। **वास्तव में वह है जिस्मानी सैलवेशन आर्मी। सच्चे-सच्चे रूहानी सैलवेशन आर्मी तुम हो। भारत का बेड़ा जो डूबा हुआ है, उनको सैलवेज करने वाली तुम भारत माता शक्ति अवतार हो। तुम गुप्त सेना हो। शिवबाबा गुप्त, तो उनकी सेना भी गुप्त – 'शिव शक्ति, पाण्डव सेना'।** सच्ची-सच्ची सत्य नारायण की कथा यह है, बाकी सब हैं झूठी कथायें, इसलिए कहते हैं, 'सी नो ईविल, हियर नो ईविल', मैं जो समझाता हूँ वह सुनो।

SM, Revised 16.06.2018
तुम जानते हो, हम बच्चों में, युद्ध के मैदान में, मुख्य कौन है? ब्रह्मा! सेकेण्ड ग्रेड में मम्मा, सरस्वती। इनका नाम तो बहुत ऊंच है। नाम बाला करना है। यह ब्रह्मा तो गुप्त है। शक्ति सेना में नाम है मम्मा का। जगत अम्बा, ब्रह्मा की बेटी, सरस्वती।

SM, Revised 23.01.2018
यह तो तुम जानते हो - जगत अम्बा सो लक्ष्मी, सो फिर 84 जन्मों का चक्र लगाकर फिर जगत अम्बा बनती है। **झाड़ में देखो जगत अम्बा बैठी है। यही फिर महारानी बनेंगी जरूर, तुम बच्चे भी राजधानी में आयेंगे। तुम कल्प वृक्ष के नीचे बैठे हो। संगम पर फाउन्डेशन लगा रहे हो। कामधेनु के तुम बच्चे ही, सबकी मनोकामना पूर्ण करने वाले हो। तुम भारत माता शक्ति सेना हो - इसमें पाण्डव भी हैं।**

116] विनाश के समय बच्चों के शरीर सेफ (safe) रहेंगे

AV, Original 03.09.1974

आगे चल कर, जब प्रकृति के प्रकोप (epidemic) होंगे और आपदाएं (calamities) आवेंगी, तब सबका पेट भरने के लिये कौन-सी चीज काम आयेगी? उस समय सबके अन्दर कौन-सी भूख होगी? अन्न की कमी या धन की? तब तो, शान्ति और सुख की भूख होगी। क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं के कारण, धन होते हुए भी, धन काम में नहीं आयेगा। साधन होते हुए भी, साधनों द्वारा प्राप्ति नहीं हो सकेगी। **जब सब स्थूल साधनों से, व स्थूल धन से, प्राप्ति की कोई आशा नहीं रहेगी, तब उस समय सबका संकल्प क्या होगा कि कोई शक्ति देवे, जो कि इन आपदाओं से पार हो सकें, और कोई हमें शान्ति देवे।** तो ऐसे-ऐसे लंगर बहुत लगने वाले हैं। उस समय पानी की एकादा बूंद भी कहीं दिखाई नहीं देगी। अनाज भी, प्राकृतिक आपदाओं के कारण, खाने योग्य नहीं होगा, तो फिर उस समय आप लोग क्या करेंगे? **जब ऐसी परीक्षायें आपके सामने आयें तो, उस समय आप क्या करेंगे? क्या ऐसी परीक्षाओं को सहन करने की इतनी हिम्मत है?** क्या उस समय योग लगेगा, या कि प्यास लगेगी? अगर कूएँ भी सूख जावेंगे, फिर क्या करेंगे?

AV, Original 03.09.1974 (continued)

क्या इतनी सहनशक्ति है? यह क्यों नहीं समझते - **जैसा कि गायन है कि 'चारों ओर आग लगी हुई थी, लेकिन भट्ठी में पडे हुए पूंगरे, ऐसे ही सेफ रहे, जो कि उनको सेक तक नहीं आया'।** आप इस निश्चय से क्यों नहीं कहते? अगर योग-युक्त हैं, तो भल नजदीक वाले स्थान पर नुकसान भी होगा, पानी आ जायेगा - लेकिन बाप द्वारा जो निमित्त बने हुए स्थान हैं, वह सेफ रह जावेंगे - **यदि अपनी गफलत नहीं है तो। अगर अभी तक कहीं भी नुकसान हुआ है, तो वह अपनी बुद्धि की जजमेन्ट की कमजोरी के कारण।** लेकिन अगर महारथी, विशाल बुद्धि वाले, और सर्वशक्तियों के वरदान प्राप्त करने वाले, **किसी भी स्थान में रहते हैं, तो वहाँ 'सूली से काँटा बन जाता है', अर्थात् वे सेफ रह जाते हैं।** कैसा भी समय हो, यदि शक्तियों का स्टॉक जमा होगा, तो शक्तियाँ आपकी प्रकृति को दासी जरूर बनावेंगी, अर्थात् साधन स्वत: जरूर प्राप्त होंगे।

AV, Original 27.10.1981

जहाँ आप प्रकृतिजीत ब्राह्मणों का पाँव होगा, स्थान होगा, वहाँ कोई भी नुकसान हो नहीं सकता। **एक दो मकान के आगे नुकसान होगा, लेकिन आप सेफ होंगे। सामने दिखाई देगा यह हो रहा है, तूफान आ रहा है, धरनी हिल रही है - लेकिन वहाँ सूली होगी, यहाँ काँटा होगा। वहाँ चिल्लाना होगा, यहाँ अचल होंगे। सब आपके तरफ स्थूल-सूक्ष्म सहारा लेने के लिए भागेंगे। आपका स्थान एसाइलम (asylum) बन जायेगा।** तब सबके मुख से, 'अहो प्रभु, आपकी लीला अपरमपार है', यह बोल निकलेंगे। 'धन्य हो, धन्य हो - आप लोगों ने पाया, हमने नहीं जाना, गंवाया'। यह आवाज चारों ओर से आयेगा। फिर आप क्या करेंगे? **विधाता के बच्चे, विधाता और वरदाता बनेंगे। लेकिन इसमें भी एसाइलम (asylum) देने वाले भी स्वत: ही नम्बरवार होंगे।**

117] ओम् मण्डली

AV Original 05.12.1984

जैसे शुरू में, स्थापना की आदि में, एक ओम की ध्वनि शुरू होती थी, और कितने साक्षात्कार में चले जाते थे। लहर फैल जाती थी। ऐसे सभा में अनुभूतियों की लहर फैल जाए। किसको शान्ति की, किसको शक्तियों को अनुभूति हो। यह लहर फैले। सिर्फ सुनने वाले न हो, लेकिन अनुभव की लहर हो। जैसे झरना बह रहा हो, तो जो भी झरने के नीचे आयेगा उसको शीतलता का, फ्रेश (fresh) होने का अनुभव होगा ना! ऐसे वह भी शान्ति, शक्ति, प्रेम, आनंद, अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति करते जाएं। **आज भी साइंस के साधन गर्मी-सर्दी की अनुभूति कराते हैं ना? सारे कमरे में ही वह लहर फैल जाती है। तो क्या यह इतनी शिव-शक्तियाँ, पाण्डव, मास्टर शान्ति, शक्ति, सबके सागर .. यह लहर नहीं फैला सकते?**

AV Original 22.12.1995

मनी (money) डाउन तो होनी ही है। और आपकी मनी सबसे ज्यादा मूल्यवान है। **जैसे शुरू में अखबार में डलवाया था ना कि 'ओम् मण्डली - रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड'।** कमाई का साधन कुछ नहीं था। ब्रह्मा बाप के साथ एक-दो समर्पण हुए, और अखबार में डाला 'रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड'। **तो अभी भी जब चारों ओर ये स्थूल हलचल होगी, फिर आपको अखबार में नहीं डालना पड़ेगा। आपके पास अखबार वाले आयेंगे और खुद ही डालेंगे, टी.वी. में दिखायेंगे कि 'ब्रह्माकुमारीज़ - रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड'।**

118] सद्गति दाता सतगुरू एक ही है

AV, Original 15.02.1969
(*सन्तरी दादी के तन द्वारा*)
बच्चे, सदैव अपने को सौभाग्यशाली समझें। सदा सौभाग्यशाली उनको कहा जाता है जिनका बाप, टीचर और सतगुरू से पूरा कनेक्शन, पूरी लगन है।

AV, Original 05.04.1983
शिव बाप मुस्कराते हुए बोले कि **तीन सम्बन्धों से तीन रीति की विधि, वृद्धि प्रमाण परिवर्तन हो ही जायेगा।** वह क्या होगा?
बाप रूप से विशेष अधिकार है - मिलन की विशेष 'टोली'।
और शिक्षक के रूप में 'मुरली'।
सतगुरू के रूप में 'नजर से निहाल'। अर्थात् अव्यक्त मिलन की रूहानी स्नेह की दृष्टि।
इसी विधि के प्रमाण वृद्धि को प्राप्त होने वाले बच्चों का स्वागत और मिलन मेला चलता रहेगा।

SM, Revised 17.08.2020
इस समय भी सारी दुनिया बाप को जानती नहीं। न जानने कारण इतनी दुर्गति हुई है। जानने से सद्गति होती है। सर्व का सद्गति दाता एक है। उनको 'बाबा' कहा जाता है। उनका नाम शिव ही है। उनका नाम कभी बदल नहीं सकता। ...

गाया भी जाता है सतगुरू तारे; बाप को कहा जाता है सचखण्ड की स्थापना करने वाला सच्चा बाबा। झूठ खण्ड स्थापन करने वाला है रावण। अब जबकि सद्गति करने वाला मिला है, तो फिर हम भक्ति कैसे करेंगे? **भक्ति सिखलाने वाले हैं अनेक गुरू लोग। सतगुरू तो एक ही है। कहते भी हैं, 'सतगुरू अकाल ..', फिर भी अनेक गुरू बनते रहते हैं।**

SM, Revised 26.10.2019
सतगुरू तो एक ही बेहद का बाप है। सबकी सद्गति करने वाला है। परन्तु इन बातों को बहुत हैं जो बिल्कुल समझते नहीं! बाप ने समझाया है यह राजधानी स्थापन हो रही है, तो नम्बरवार होंगे ना। कोई तो रिंचक भी समझ नहीं सकते। ड्रामा में पार्ट ऐसा है।

SM, Revised 21.10.2019 (Original 23.11.1968)
बाप, सतगुरू ही सद्गति देते हैं। बाप समझाते तो बहुत रहते हैं; यह भी सुनते हैं ना। **गुरू लोग भी बाजू में शिष्य को बिठाते हैं, सिखलाने के लिए। यह भी उनके बाजू में बैठता है। बाप समझाते हैं, तो यह भी समझाते होंगे ना, इसलिए 'गुरू ब्रह्मा' नम्बरवन में जाता है। शंकर के लिए तो कहते हैं, 'आंख खोलने से भस्म कर देते हैं', फिर उनको तो गुरू नहीं कहा जाए।** फिर भी बाप कहते हैं, बच्चों, मामेकम् याद करो।

SM, Revised 18.09.2019 (Original 08.10.1968)
क्राइस्ट अथवा बुद्ध को थोड़ेही पतित-पावन कहेंगे। गुरू वह जो सद्गति करे। वह तो आते हैं, उनके पिछाड़ी सबको नीचे उतरना है। यहाँ से वापिस जाने का रास्ता बतलाने वाला, *सर्व का सद्गति करने वाला, अकाल मूर्त एक ही बाप है। वास्तव में 'सतगुरू' अक्षर ही राइट है। तुम सबसे, राइट अक्षर फिर भी सिक्ख लोग बोलते हैं। बड़ी-बड़ी आवाज़ से कहते हैं – 'सतगुरू अकाल'।* बड़ी ज़ोर से धुन लगाते हैं, 'सतगुरू अकाल मूर्त' कहते हैं।

SM, Revised 22.08.2019
तो सबका सुख दाता एक शिवबाबा है। वही ऊंच ते ऊंच बाप है, उनको परमपिता परमात्मा कहा जाता है। बेहद का बाप जरूर बेहद का वर्सा देते हैं। ... **'राम' कहा जाता है बाप को। वह राम नहीं, जिसकी सीता चुराई गई। वह कोई सद्गति दाता थोड़ेही है, वह राम, राजा था। महाराजा भी नहीं था। महाराजा और राजा का भी राज़ समझाया है - वह 16 कला, वह 14 कला।**

SM, Revised 29.04.2019
सुप्रीम को 'परम' कहा जाता है। उस एक को ही याद करना है। **नज़र से नज़र मिलाते हैं। गायन है, 'नज़र से निहाल कींदा स्वामी सतगुरू'। उनका अर्थ चाहिए। 'नज़र से निहाल' किसको? जरूर सारी दुनिया के लिए कहेंगे क्योंकि सर्व का सद्गति दाता है।** सर्व को इस पतित दुनिया से ले जाने वाला है। **अब नज़र किसकी? क्या यह आखें? नहीं! तीसरी आंख मिलती है ज्ञान की। जिससे आत्मा जानती है - यह हम सभी आत्माओं का बाप है।**

SM, Revised 12.01.2019
शिव और कृष्ण की गीता का कान्ट्रास्ट तो है ही। त्रिमूर्ति शिव भगवान से, संगम पर गीता सुनने से, सद्गति होती है। ऐसी-ऐसी प्वाइंट्स पर जब कोई विचार सागर मंथन करे, तब औरों पर भी असर पड़े। **मनुष्य, मनुष्य की सद्गति कभी कर नहीं सकते। सिर्फ एक ही त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव जो टीचर भी है, सतगुरू भी है, वह इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर सर्व की सद्गति कर रहे हैं।**

SM, Revised 05.01.2019
भगवानुवाच, भगवान उनको कहा जाता है, जो सभी ब्रदर्स का बाप है। मनुष्य अपने को भगवान कहला न सकें। **भगवान तो निराकार है। वह बाप टीचर सतगुरू है। कोई मनुष्य बाप, टीचर, सतगुरू हो न सके। कोई भी मनुष्य किसकी सद्गति कर नहीं सकते। भगवान हो न सकें। बाबा है पतित-पावन। पतित बनाता है रावण।** बाकी यह सब हैं भक्ति के गुरू।

SM, Revised 22.10.2018
सिक्ख लोग कहते हैं, 'सतगुरू अकाल'। **वास्तव में 'सत श्री अकाल' एक ही परमात्मा है, जिसको सतगुरू भी कहते हैं। वही सद्गति करने वाला है।** इस्लामी, बौद्धी, या ब्रह्मा आदि नहीं कर सकते। भल कहते हैं 'गुरू ब्रह्मा', 'गुरू विष्णु'। **अब गुरू भल ब्रह्मा को कहा जाए, बाकी 'गुरू विष्णु', 'गुरू शंकर' तो हो न सके। 'गुरू ब्रह्मा' का नाम है जरूर। परन्तु 'ब्रह्मा गुरू' का भी तो गुरू होगा ना? 'सत श्री अकाल' का तो फिर कोई गुरू नहीं। वह एक ही सतगुरू है।**

SM, Revised 16.09.2017
कहते भी हैं सर्व का सद्गति दाता एक है। **गाते भी हैं, 'ज्ञान अंजन सतगुरू दिया..', अर्थात् ब्रह्मा की रात खत्म होती है। ज्ञान सूर्य प्रगटा, ब्रह्मा की रात पूरी होती, फिर दिन शुरू हो जाता है। परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा नया ज्ञान देते हैं।**

SM, Revised 26.06.2017
यह बाप भी है, टीचर, सतगुरू भी है। इनका कोई बाप, टीचर नहीं है। **पहले-पहले हैं मात-पिता, फिर टीचर और फिर सद्गति के लिए गुरू। यह वन्डर है - बेहद का बाप एक ही बाप, टीचर और सतगुरू है।** तुम जानते हो वह बाप ऊंचे ते ऊंचा है। वही भारत को स्वर्ग का वर्सा देने वाला है।

SM, Revised 17.02.2017
सबका सद्गति दाता तो एक ही है। सबको शरण में लेने वाला भी है, सब आकर माथा झुकाने वाले हैं। परन्तु उस समय क्या कर सकेंगे। फिर, ऐसा होगा, तो इतनी भीड़ इकट्ठी आ न सके। यह खेल ही बड़ा वन्डरफुल बना हुआ है। इतनी भीड़ आकर क्या करेगी? फिर शीघ्र ही विनाश सामने आ जायेगा। हाँ, आवाज सुनेंगे कि बाप कहते हैं, मुझे याद करो, अब वापिस जाना है। बाकी मिलने से क्या फायदा? बाबा डायरेक्शन देते हैं कि भल कोई विलायत में है तो भी बाप को याद करते रहो, तो विकर्म विनाश होंगे। **अन्त मती सो गति हो जायेगी। सबको पैगाम तो मिलना ही है। एक जगह पर इतने थोड़ेही मिल सकेंगे। परन्तु ड्रामा बड़ा वन्डरफुल बना हुआ है। सबको पता पड़ेगा कि फादर (Father) आया हुआ है।**

SM, Revised 14.12.2016
इस समय है ही भक्ति मार्ग। शास्त्र भी सब भक्ति मार्ग के हैं। **शास्त्रों में कोई सद्गति का ज्ञान नहीं है। कहते भी हैं ज्ञान, भक्ति, वैराग्य.. बस। इतना बुद्धि में आता है। इसका भी अर्थ नहीं जानते।** ज्ञान का सागर एक ही परमपिता परमात्मा है, जरूर उनको ही ज्ञान देना है। **वही सतगुरू, सद्गति दाता है, इसलिए उनको पुकारते हैं, आकर दुर्गति से बचाओ।** द्वापर में हम पहले सतोप्रधान पुजारी बनते हैं, फिर पुनर्जन्म लेते, उतरते आते हैं।

SM, Revised 11.04.2016
अब सबको ग्रहण लगा हुआ है, काले हो गये हैं इसलिए पुकारते हैं हे ज्ञान सूर्य आओ। आकर हमको सोझरे में ले जाओ। **'ज्ञान अंजन सतगुरू दिया, अज्ञान अंधेर विनाश ..' - बुद्धि में बाप आता है। ऐसे नहीं 'ज्ञान अंजन गुरू दिया ..' - गुरू तो ढेर हैं, उनमें ज्ञान कहाँ है। उनका थोड़ेही गायन है। ज्ञान-सागर, पतित-पावन, सर्व का सद्गति दाता एक ही बाप है। फिर दूसरा कोई ज्ञान दे कैसे सकता?**

SM, Revised 16.03.2016
इस पतित दुनिया में कोई भी मनुष्य सद्गति दाता वा पतित-पावन हो नहीं सकता। बाप कहते हैं कितनी एडल्ट्रेशन (ADULTERATION), करेप्शन (CORRUPTION) है। अब मुझे कन्याओं माताओं के द्वारा सबका उद्धार करना है।

गुप्त वेश में बापदादा का पार्ट – Part 2

119] दुनिया वाले समझते हैं बाप चले गये, और बाप बच्चों से विचित्र रूप में जब चाहें तब मिलन मना सकते; अंत में - मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, चर्च आदि से, सबसे मिलकर एक ही आवाज होगी कि 'हमारा बाबा आ गया है'!

AV, Original 28.12.1978
विश्व में विश्व पिता स्पष्ट दिखाई देगा। हर धर्म की आत्मा द्वारा एक ही बोल निकलेगा कि हमारा बाप हिन्दुओं वा मुसलमानों का नहीं - सबका बाप। इसको कहा जाता है परमात्म बाम्ब (bomb) द्वारा अन्तिम प्रत्यक्षता। अब रिज़ल्ट सुनी कि क्या कर रहे हैं और क्या करना है! अब के वर्ष परमात्म बाम्ब फैंको। बाप को स्वच्छता और निर्भयता के आधार से सत्यता द्वारा प्रत्यक्षता करो।

AV, Original 08.01.1979
आवाज़ तब पहुँचेगा जब बुलन्द होगा। **बुलन्द आवाज़ करने के लिए चारों ओर से एक आवाज़ निकले कि हमारा बाप गुप्तवेष में आ गया है। जैसे बाप ने आप बच्चों को गुप्त से प्रत्यक्ष किया, वैसे आप सबको फिर बाप को प्रत्यक्ष करना है।** सब शक्तियाँ मिलकर अंगुली देंगी तो सहज ही हो जायेगा।

AV, Original 18.01.1979
जैसे बाप विचित्र है, विचित्र बाप की लीला भी विचित्र है - **दुनिया वाले समझते हैं बाप चले गये, और बाप बच्चों से विचित्र रूप में जब चाहें तब मिलन मना सकते। दुनिया वालों की आँखों के आगे पर्दा आ गया - वैसे भी स्नेही मिलन पर्दे के अन्दर अच्छा होता है - तो दुनिया की आँखों में पर्दा आ गया - लेकिन बाप बच्चों से अलग हो नहीं सकता।**

AV, Original 21.03.1981
जब बाप आते हैं तो बड़े-बडे लोग महामूर्ख ही बन जाते हैं, जितने बड़े उतने ही मूर्ख बनते। जो बाप को ही नहीं जान सकते तो महामूर्ख हुए ना? देखो, बड़े-बड़े नेतायें जानते हैं? तो महामूर्ख हुए ना? यह भी अपनी कल्प पहले की महामूर्खता की यादगार मनाते हैं। सारा उल्टा कार्य करते हैं। **बाप कहते - मेरे को जानो; वह कहते - बाप हैं ही नहीं। तो उल्टे हुए ना? आप कहते हो - बाप आया है; वह कहते - हो ही नहीं सकता। तो उल्टा कार्य करते हैं ना? ऐसे तो बहुत कुछ विस्तार कर लिया है। लेकिन सार है - बाप और बच्चों के मंगल मिलन का यादगार।** संगमयुग ही मंगल मिलन का युग है।

AV, Original 12.01.1982
बीज के साथ-साथ वृक्ष की जड़ में आप आधारमूर्त्त श्रेष्ठ आत्मायें हो। तो **बापदादा ऐसी श्रेष्ठ आत्माओं से मिलन मनाने के लिए आते हैं। ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें हो जो निराकार और आकार को भी आप समान साकार रूप में लाते हो। तो कितने श्रेष्ठ हो गये।**

AV, Original 16.01.1982

अभी जैसे मस्जिद के ऊपर, चर्च के ऊपर चढ़कर अपने-अपने गीत गाते हैं। मस्जिद में अल्लाह का नाम चिल्लाते हैं, चर्च में गॉड का .. मन्दिरों में 'आओ, आओ' कहते हैं - लेकिन **अब ऐसा समय आयेगा जो सभी मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, चर्च आदि से सबसे मिलकर एक ही आवाज होगी कि 'हमारा बाबा आ गया है'।**

AV, Original 06.01.1983

जैसे साकार में याद है ना, हर ग्रुप को विशेष स्नेह के स्वरूप में अपने हाथों से खिलाते थे, और बहलाते थे। वही स्नेह का संस्कार अब भी प्रैक्टिकल में चल रहा है। इसमें सिर्फ बच्चों को बाप समान आकारी स्वरूपधारी बन अनुभव करना पड़े।

AV, Original 26.01.1983

इस बेहद के कार्य द्वारा यह एडवरटाइज (advertise) विशाल रूप में होनी है - जैसे धरती के अन्दर कोई छिपी हुई वा दबी हुई चीजें अचानक मिल जाती हैं, तो खुशी-खुशी से सब तरफ प्रचार करते हैं। **ऐसे ही यह आध्यात्मिक खज़ानों की प्राप्ति का स्थान जो अभी गुप्त है, इसको अनुभव के नेत्र द्वारा देख, ऐसे ही समझेंगे जैसे गँवाया हुआ, खोया हुआ गुप्त खज़ाने का स्थान फिर से मिल गया है। धीरे-धीरे सबके मन से, मुख से यही बोल निकलेंगे कि ऐसे कोने में इतना श्रेष्ठ प्रापति का स्थान! इसको तो खूब प्रसिद्ध करो। तो विचित्र बाप, विचित्र लीला और विचित्र स्थान, यही देख-देख हर्षित होंगे।**

AV, Original 20.03.1987

अब तक जो रिजल्ट रही, सेवा की विधि, ब्राह्मणों की वृद्धि रही, वह बहुत अच्छा है। क्योंकि **पहले बीज को गुप्त रखा, वह भी आवश्यक है। बीज को गुप्त रखना होता है, बाहर रखने से फल नहीं देता। धरनी के अन्दर बीज को रखना होता है - लेकिन अन्दर धरनी में ही न रह जाए। बाहर प्रत्यक्ष हो, फल स्वरूप बनें - यह आगे की स्टेज है।**

गॉड-फ़ादर सभी आत्माओं से मिलेंगे

120] गॉड-फ़ादर सभी आत्माओं से मिलेंगे, दृष्टि देंगे, सभी की आशा पूर्ण करेंगे!

AV, Original 28.12.1978

विश्व में विश्व पिता स्पष्ट दिखाई देगा। हर धर्म की आत्मा द्वारा एक ही बोल निकलेगा कि हमारा बाप हिन्दुओं वा मुसलमानों का नहीं - सबका बाप। इसको कहा जाता है परमात्म बाम्ब (bomb) द्वारा अन्तिम प्रत्यक्षता। अब रिज़ल्ट सुनी कि क्या कर रहे हैं - और क्या करना है! अब के वर्ष परमात्म बाम्ब फैंको। बाप को स्वच्छता और निर्भयता के आधार से सत्यता द्वारा प्रत्यक्षता करो।

AV, Original 16.01.1982

अभी जैसे मस्जिद के ऊपर, चर्च के ऊपर चढ़कर अपने-अपने गीत गाते हैं। मस्जिद में अल्लाह का नाम चिल्लाते हैं, चर्च में गॉड का .. मन्दिरों में 'आओ, आओ' कहते हैं - लेकिन **अब ऐसा समय आयेगा जो सभी मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, चर्च आदि से सबसे मिलकर एक ही आवाज होगी कि 'हमारा बाबा आ गया है'।**

AV, Original 21.03.1981

जब बाप आते हैं तो बड़े-बडे लोग महामूर्ख ही बन जाते हैं, जितने बड़े उतने ही मूर्ख बनते। जो बाप को ही नहीं जान सकते तो महामूर्ख हुए ना? देखो, बड़े-बड़े नेतायें जानते हैं? तो महामूर्ख हुए ना? यह भी अपनी कल्प पहले की महामूर्खता की यादगार मनाते हैं। सारा उल्टा कार्य करते हैं। **बाप कहते - मेरे को जानो; वह कहते - बाप हैं ही नहीं। तो उल्टे हुए ना? आप कहते हो - बाप आया है; वह कहते - हो ही नहीं सकता। तो उल्टा कार्य करते हैं ना? ऐसे तो बहुत कुछ विस्तार कर लिया है। लेकिन सार है - बाप और बच्चों के मंगल मिलन का यादगार। संगमयुग ही मंगल मिलन का युग है।**

SM, Revised 29.04.2019

सुप्रीम को 'परम' कहा जाता है। उस एक को ही याद करना है। **नज़र से नज़र मिलाते हैं। गायन है, 'नज़र से निहाल कींदा स्वामी सतगुरू'। उनका अर्थ चाहिए। 'नज़र से निहाल' किसको? जरूर सारी दुनिया के लिए कहेंगे क्योंकि सर्व का सद्गति दाता है।** सर्व को इस पतित दुनिया से ले जाने वाला है। **अब नज़र किसकी? क्या यह आखें? नहीं! तीसरी आंख मिलती है ज्ञान की। जिससे आत्मा जानती है - यह हम सभी आत्माओं का बाप है।**

SM, Revised 26.09.2017

जब महाभारत लड़ाई हुई, तब (शिव) बाप भी था, जिस से वर्सा मिलता है। कृष्ण को तो कोई 'बाप' कह न सके। **मनुष्य जब 'गॉड फादर' कहकर पुकारते हैं, तब निराकार (शिव) को ही याद करते हैं।**

SM, Revised 17.02.2017

सबका सद्गति दाता तो एक ही है। सबको शरण में लेने वाला भी है, सब आकर माथा झुकाने वाले हैं। परन्तु उस समय क्या कर सकेंगे? फिर, ऐसा होगा, तो इतनी भीड़ इकट्ठी आ न सके। यह खेल ही बड़ा वन्डरफुल बना हुआ है। इतनी भीड़ आकर क्या करेगी? फिर शीघ्र ही विनाश सामने आ जायेगा। हाँ, आवाज सुनेंगे कि बाप कहते हैं, मुझे याद करो,

अब वापिस जाना है। **बाकी मिलने से क्या फायदा?** बाबा डायरेक्शन देते हैं कि भल कोई विलायत में है तो भी बाप को याद करते रहो, तो विकर्म विनाश होंगे। **अन्त मती सो गति हो जायेगी। सबको पैगाम तो मिलना ही है। एक जगह पर इतने थोड़ेही मिल सकेंगे। परन्तु ड्रामा बड़ा वन्डरफुल बना हुआ है। सबको पता पड़ेगा कि फादर (Father) आया हुआ है।**

SM, Revised 09.08.2016
वही महाभारत लड़ाई है, तो जरूर भगवान भी होगा। किस रूप में, किस तन में है, वह तुम बच्चों के अलावा किसको पता नहीं। कहते भी हैं - मैं बिल्कुल साधारण तन में आता हूँ। मैं कृष्ण के तन में नहीं आता हूँ। यही पूरे 84 जन्म लेते हैं। मैं इनके बहुत जन्मों के अन्त के भी अन्त में आता हूँ।

SM, Revised 08.07.1974
हिन्दू हो, मुसलमान हो, क्रिश्चियन आदि - सब गॉड-फ़ादर ज़रूर कहते हैं। बुद्धि ज़रूर निराकार तरफ जाती है। यह किसने कहा 'गॉड-फ़ादर'? आत्मा ने कहा। **जब फादर है, तो ज़रूर फादर मिलना चाहिए। 'फादर' सिर्फ कहे, और कब मिले ही नहीं, तो वह फादर हो कैसे सकता? सारी दुनिया की जो भी आत्माएं हैं, सबसे मिलते हैं। सब बच्चों की जो भी मुराद है, आशा है, वह पूर्ण करते हैं।** सब की कामनाएं रहती हैं, की हम शान्तिधाम जावें - शांति चाहिए। आत्मा को घर याद पड़ता है। रावण राज्य में थक गए हैं। अंग्रेज़ी में भी कहते हैं, 'ओ गॉड-फादर, लिबरेट करो'!